

गोदना चित्र-शैली

(भाग-पाँच)



कृष्णा कुमार कश्यप

गोदना चित्र-शैली
(भाग - पाँच)



कृष्ण कुमार कश्यप
कला संजिवनी
बरहेता, लहेरिया सराय, दरमंगा।

कोपी राइट : गोपाल जी

संस्करण : जून, 2018

द्वितीय संस्करण नवम्बर, 2021

लेखकीय संपर्क : (मोबाइल) 99 31 68 59 39

e-mail : kashyapkk15@gmail.com

मूल्य : साल की कपड़े मात्र

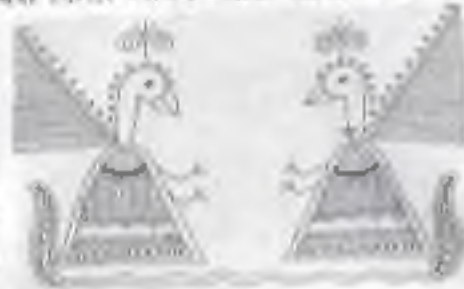
प्राप्ति-स्थान :

- (1) कला संजिवनी, बरहेठा, लतेरियासराय, दरभंगा
मो 9931885939
- (2) भारतीय विकास मंच, बरहेठा



मौली - के के कश्यप

किसी पुस्तक की भूमिका से तात्पर्य उस पुस्तक से सम्बंधित उन सूचनाओं को रखना है, जिनका सम्बंध पुस्तक के निर्माण से होता है। खास कर, किसी लोक कला-विषय पर पहली बार अकादमिक के साथ ही व्यावसायिक पुस्तक लिखना अपने आप में एक जटिल कार्य होता है। उसमें भी, पुस्तक लिखने का उद्देश्य यदि जन साधारण को आजीविका उपलब्ध कराना हो, तब तो यह और भी जटिल हो जाता है। ऐसी पुस्तकों के प्रणयन की प्रक्रिया कन्वेंशन किसी जीवन-रक्षक औषधि के निर्माण जैसी ही होती है। परिकल्पना करना, उसे क्रमबद्ध करना, लोक-ज्ञाता के पैमाने पर उसका परीक्षण करना, उत्पादन के लिए डिजाइन की परिकल्पना करना, बाजार का निर्माण करना, व्यापारिकस्थानों का अध्ययन करना और अन्त में उसे उत्पादन की प्रक्रिया में डालना। इस पुस्तक के साथ भी इतना कुछ करना पड़ा। वैसे तो "गोदना" की परम्परा पर देश और विदेश में कुछ लेख लिखे गये हैं, किन्तु

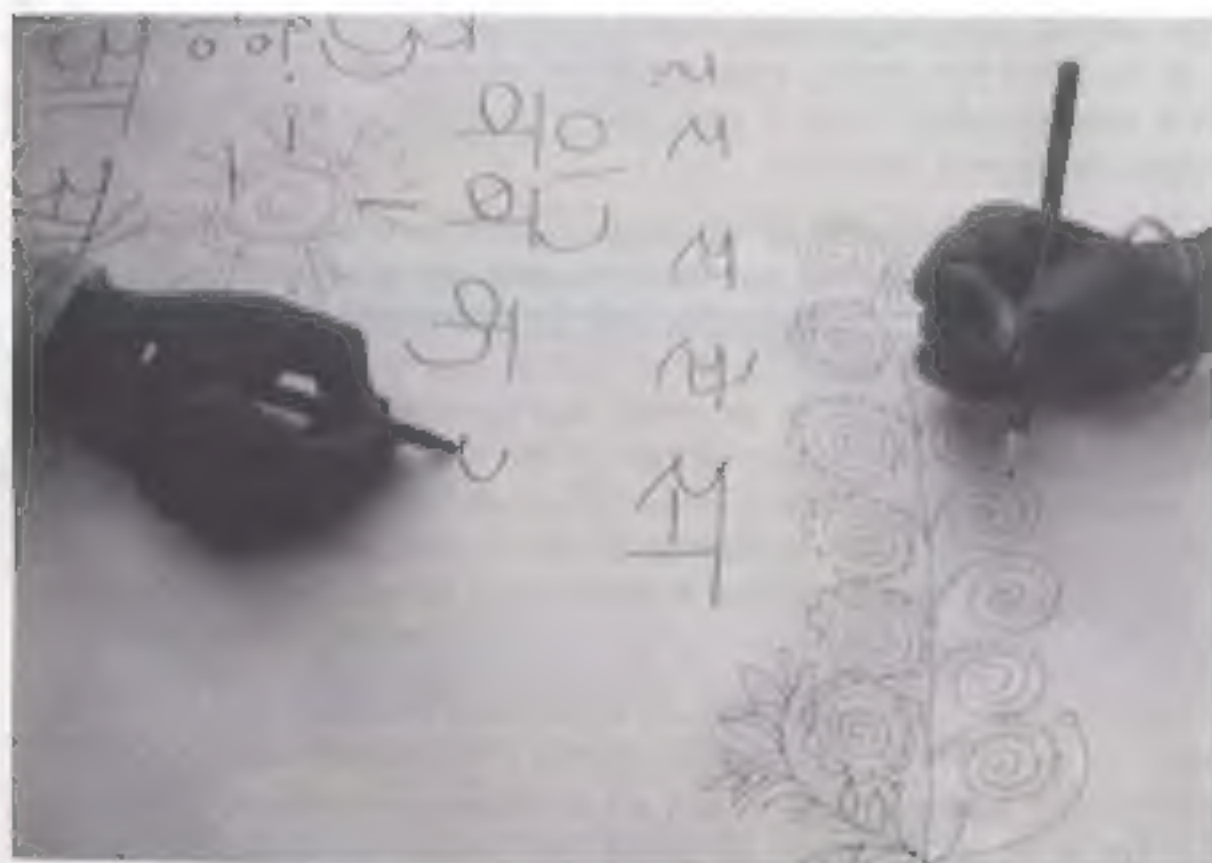


"गोदना" को एक विश्व-व्यापी कला-शैली मान कर, समाज के दलित लोगों के लिए, "बढ़ाई और कमाई" की एक विशिष्ट विकसित करना, यह भारत के इतिहास में पहली बार यकी हुआ है। आज बिहार की अराध्य महिलाएँ (और अनेक पुरुष भी) इस कला-माध्यम से आजीविका कमा रहे हैं, अपने आप में यह अनोखा है। इसलिए हम चाहते हैं कि इस पुस्तक के निर्माण की बधा प्रक्रिया रही है, इस पर सक्षिप्त प्रकाश अवश्य डालना चाहिए, ताकि लोक-संस्कृति और आजीविका विषय पर अनुसंधान करने वाले आध्येत्यों और लोक-कला को अध्ययन के साथ ही आजीविका का माध्यम बना कर कार्य में लगे लोगों की सहायता हो सके।

दलित समुदाय में प्रचलित कला-परम्परा से पहली बार में उस समय प्रभावित हुआ था, जब मेरी आयु मात्र पन्द्रह वर्षों की थी। उन दिनों मैं एक घटना से ऐसा आहत हुआ कि समाज के दलित लोगों को साक्षर बनने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देने का निश्चय कर बैठा। उन्हीं दिनों, मैंने अपने गाँव की एक दलित महिला को बीघार पर चित्रा बनाते देखा। उस चित्रा में हाथी पर एक आदमी बैठा था, उसके सामने एक पेड़ था, जिसकी बौछ जैसी फीली डालियों पर पक्षी बैठे थे। इस घटना से पहले, मैंने अपनी माँ को आँगन की भूमि पर, पिछे हुए चावल के श्वेत रंग से, मिथिला-परम्परा के 'अरिपन' बनाते देखा था और ज्यामितिक चिन्हों की मेल से बने विरूपित आकार के आलेखन को देख कर अचमित हुआ था। गौर से अरिपन को देखने पर मुझे लगा कि जिन ज्यामितिक चिन्हों, वृत्त, त्रिकोण, विभुज, चौकोन और आड़ी-तिरछी रेखाओं के संयोग से अरिपन बना था, अखिर अक्षर भी तो उन्हीं चिन्हों की मेल से बनते हैं। मेरी माँ पढ़ी हुई हैं और मुझे प्रारम्भिक शिक्षा भी से ही मिली थी। पहले तो मैंने समझा कि मेरी माँ पढ़ी-लिखी हैं, इसीलिए ज्यामितिक चिन्हों के प्रयोग से अरिपन चित्रा बना रही हैं, किन्तु जब दूसरी बार किसी दलित महिला को चित्रा बनाते देखा तो मैं सोच में पड़ गया। मैं जानता था कि उन दिनों दलित महिलाएँ और उनका पूरा समुदाय निरक्षर होता था। इसी कारणवश मैं सोचने लगा, क्या, दलित महिला पढ़ी-लिखी हैं? बिना पढ़ यह चित्रा कैसे बना सकती? दूसरी बड़ी बात जो महत्वपूर्ण थी, और जिसने मेरा मन उस चित्रा की ओर खींचा, वह उस चित्रा का अनोखपन था। उस महिला के चित्रा में बना हाथी, आदमी और पेड़ पुरतन्त्रों में छपे चित्रा जैसे नहीं थे, बिल्कुल अलग दिखते थे। उस महिला के चित्रा में एक सहजता थी, एक अपनापन था, लगता था जैसे उसके चित्रा

बोल-बतिया रहे थे। धुड़ी लगा, वह चित्रा का घरेलू संस्करण था। अगले दिन उस चित्रा को मैंने अपनी कौपी पर उतार लिया।

उन दिनों मैं साधारण चित्रों से अक्षर बनाने की सरलताय विधि खोजने में लगा हुआ था, ताकि स्कूल नहीं जाने वाले गजदूर बच्चे आसानी से अक्षर सीख सकें। दलित महिला को चित्र बनाने देख कर मैं समझ गया कि चित्रा कोई भी आदमी बना सकता है, चाहे वह पढ़ा हो अथवा अनुपढ़। इतना तो स्पष्ट हो ही गया था कि चित्रा भी उन्हीं चिन्हों की श्रृंखला से बनते हैं, जिन चिन्हों से अक्षर बनते हैं। इसी अवधारणा के आधार पर मैंने चित्रा से अक्षर बनाने और अक्षरों को उनके मिलते-जुलते आकार वाले अक्षरों के समूह में रखने, जैसे उक्त अ आ / ओ औं अं अः / व ब क ख आदि के आधार पर सज्जाने के बाद अपने लरह की एक वर्णमाला तैयार की थी। इस प्रवृत्ति में साधारण चित्रा को छोड़ कर अक्षर बनाने गए थे। इस वर्णमाला का गजदूर बच्चों और स्कूल नहीं जाने वाले बच्चों पर परीक्षण के बाद, मैंने अक्टूबर 1965 में, अपने गाँव में ही, बच्चों के लिए एक राबि-घाटशाला, "वाइट स्कूल" शुरू किया। वहीं से वचिह लोगो के चित्रा-कौशल को मैंने अपना पाठ्य बनाया, किन्तु उस समय में न तो दलितों, बचियों और मिहनतकश लोगों की कठोर जीवन-शैली से बहुत परिचित था और न उनकी परम्परागत कलाओं के विशाल ससार का ही गजदीक से जागता था। उस समय में सोलह वर्षी का था।



कला-यात्राय के रूप में गौडना के प्रतीको से पहली बार मेरा साक्षात्कार 1972 में हुआ। उसी वर्ष मेरा विवाह मधुबनी जिले के जितवारपुर गाँव में हुआ था, जिस गाँव से, 1970 ईस्वी में, भिथिला-पेन्टिंग या मधुबनी-पेन्टिंग का बाजारीकरण शुरू हुआ। भारत सरकार का हस्तकला विपणन कार्यालय सन् 1970 में, मधुबनी में खुला। यह कार्यालय चित्रा बनाने में सक्षम महिलाओं को हस्तनिर्मित कागज (22"/32" साइज का) देता था और बने हुए चित्रा को, 1972 ईस्वी में, दस रुपये भाव से खरीद

लेता था। उस समय माना गया कि लुंके चित्र बनाने का पारम्परिक व्यवहार कायस्थ और ब्राह्मण परिवारों में ही देखने को मिलता था, इसीलिए हस्तकला कार्यालय शुरू के वर्षों में मात्रा इन्हीं दो वर्ग की महिलाओं को कामज देता था। इन परिवारों में विवाह या मुण्डन (चूड़ाकरण) के अवसर पर, सम्मोह की विधिगत तैयारी के अन्तर्गत, दीवारों पर चित्र बनाने की परम्परा रही है। कायस्थ परिवार में, बेटे के विवाह के लिए, कागज पर कोबर, बौस, बर्रे, कमलदह अरिपन और दशावतार (विष्णु के दस अवतार) बना कर उसमें सिन्दूर भर कर ले जाने की अनिवार्य परम्परा है, जबकि कोबर-घर का विशेष रूप से चित्राग ब्राह्मण और कायस्थ दोनों जातियों में परम्परागत है। इसके अतिरिक्त, देवोत्थान एकादशी, गाय-संक्रान्ति और अन्य धार्मिक अवसरों पर भी दोनों जातियों के परिवार में विसृज्य मृत्ति-चित्राग करने की परम्परा रही है। इस प्रकार, इन दो जातियों की महिलाओं के पास चित्र बनाने का पारम्परिक कौशल और पौराणिक कथाओं के अथाह विषयवस्तु थे। इसके अलावा, ये महिलाएँ शिक्षित परिवारों से आती थी जिन्हें कलम पकड़ने का ज्ञान था। खास कर, कायस्थ जाति में परम्परागत रूप से शत प्रतिशत साक्षरता रही है। दूसरी और अन्य जातियों, विशेष कर दलित समुदाय में स्थिति बिल्कुल भिन्न थी। उनके समुदाय में साक्षरता नगण्य थी। उनकी उँगलियों को लेखनी पकड़ने का अभ्यास नहीं था, इसलिए दलित महिलाएँ कलम पकड़ कर कागज पर चित्र नहीं बना सकती थीं। उनके पास ऐसे परम्परागत विषय भी नहीं थे जिनका चित्राग वे कर पातीं। शायद इन्हीं कारणों से हस्तकला कार्यालय दलित महिलाओं को चित्र बनाने के लिए कामज नहीं देता था। आखिरकार, कुछ जागरूक दलितों के प्रयास करने पर, उनकी महिलाओं के नाम पर ही हस्तकला कार्यालय कागज का शीट देने लगा, लेकिन चित्र बनाने की समस्या बनी ही रही। दलित महिलाएँ चित्र नहीं बना पाने की स्थिति में, अपना कागज किसी कायस्थ या ब्राह्मण महिला को दे देती थी और अफिस से रुपये मिलाने पर दोनोंको पौध-पौध रुपये मिल जाते थे।

जितवारपुर में, मेरे ससुराल से शटे कुछ पासवान दलितों के घर थे। मैं जब जितवारपुर जाता था तब वे दलित महिलाएँ स्नेहवश मुझे अपने आँगन ले जाती थी और हास-परिहास करती थीं। एक दिन उन दलित महिलाओं से बात करते समय मैंने उनकी बीहों पर गोदना के सुन्दर चित्र देखा। मैंने उन्हें बताया कि यदि गोदना के मनमोहक प्रतीकों को कागज से कागज पर उतार दिया जाय तो बहुत सुन्दर लगेंगे। ऐसा ही हुआ। दूसरी बार जब मैं उनसे मिला तो उन लोगों ने बताया कि गोदना के प्रतीकों से बने उनके चित्र को बेहतर माना गया और दस रुपये की जगह उन्हें बीस रुपये मिले। यह 1972 ईसवी की बात है। जल्द ही देश के कौनसा भी उत्तर कर 'गोदना' के अमिट प्रतीक 'गोदना पेन्टिंग' के रूप में, नये रूप-रंग के साथ, चित्रकला के बाजार में दमकने लगे। यह समझकर देख कर मुझे पहली बार रत्ना में आया कि लोकचित्र से वकिल लोगों के लिए 'पढ़ाई' के साथ 'कमाई' का कार्यक्रम चल सकता है।

दूसरी बार गोदना से मेरा सम्पर्क 1975-76 में हुआ, जब मैं नेपाल में रह रहा था। उन दिनों पूरा भारत जय प्रकाशजी (जे पी) के आन्दोलन से उद्वेलित था। तत्कालीन प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने इमरजेन्सी लगा कर प्रजातन्त्र को अपनी मुठ्ठियों में बन्द कर लिया था। आन्दोलनकारियों को पकड़ कर जेलों में डूँसा जा रहा था। बहुत राजनेता और आन्दोलनकारी युवक भाग कर पड़ोसी देश, नेपाल चले गए। मैं भी नेपाल चला गया। उन दिनों मैं अपने साथ होम्सोपैथी दवाओं का एक छोटा बक्सा रखता था और मेटेरिया मेडिका पढ़ कर मुफ्त में लोगों का इलाज करता था। वहीं मेरे पड़ोस में एक पासवान दलित परिवार रहता था। उस परिवार से मेरी कुछ नजदीकी थी। एक दिन उस पड़ोसी महिला ने बताया कि उसकी बहन बीमार थी, बुखार लग रहा था। मैं उसे देखने गया। कपड़े से बाहर, उसके पूरे शरीर पर, नये-नये गोदना बने दिखे। गोदना के जख से ही उसे बुखार कम गया था। मैं सुबह-शाम उसे देखने अवसर प्राप्त था। उसका नाम दसमती था। दसमती का दिवाह पौध-सात साल पहले हुआ

था, कि 2 साल भाग अन्य उसी को 2 में 2 जल नहीं 1 जनक करवा परिधि

चला संगति की रां वे राधे भूखे 3 नहीं 4 था। 8 प्रतीकों है। 8 अभिया की क तक 8 बच्चों ने खन कलाक अगली

मायाम में आति दये-कु दर्शो हा रहा। 1 'लोक' के मुस मुइमी और गु

था लेकिन उसके ससुराल वाले भीना करा कर अपने यहाँ नहीं ले जा रहे थे। इसका कारण यह था कि वह "अगोदन" थी। दर्द को डर से उसने अपने शरीर पर गोदना नहीं बनवाया था। क्योंकि डर साल जाड़े में उसके गोंद में गोदना गोदने वाली 'खोद्यपारनी', गटिंगमा जलर आती थी, मगर बासमती भाग कर कहीं छिप जाती थी। उसे गोदना करवाने में बहुत डर लगता था। ऊपर, परम्परा के अनुसार, अन्य जातियों में विवाह से पहले, लड़कियों के लिए, जिस प्रकार गंगा-स्नान आवश्यक माना जाता था, उसी प्रकार दलितों में, लड़कियों का गोदना करवाना आवश्यक होता था। बिना गंगा-स्नान किए लड़की को 'अगंग' और बिना गोदना करवायी दलित लड़की को 'अगोदन' या अधविवाह कहा जाता था। दलितों में, ऐसी किसी दुल्हन को, ससुराल के रसोईघर में घुसने नहीं दिया जाता था। वह किसी को भोजन या जल नहीं दे सकती थी और न सन्तान उत्पन्न कर सकती थी। इसी नियम के तहत बासमती का भीना नहीं हुआ। बढती उमर के साथ बासमती फूट कर जवान हो गयी, तब उसकी बड़ी बहन ने अपने पास जनकपुर बुला लिया और थारु जाति की गोदनाहारिन से, अन्दर-बाहर, उसके पूरे शरीर पर गोदना करवाया। इलाज करते-करते हम दोनों मित्रा हो गए। बासमती ने अपने गोदना के अलग भण्डार से मुझे परिचित कराया। मैंने गोदना के अनोखे चित्र को अपने मन में बसा लिया।

भारत में जब हमरजोन्शी टूट गयी, तब मैं भारत वापस आ गया। कुछ दिनों के बाद मैं दिल्ली चला गया। वही मैंने कचहरी घुन कर गुजारा करने वाले बच्चों (जिन्हें कचहरीया कहा जाता था) को संगठित किया और अपनी विद्यालयी शिक्षा से उन्हें साक्षर करने के अलावे उनके लिए बेहतर रोजगार की संभावना खोजने में जुट गया। हमारे समूह में सात वर्ष से पन्द्रह-सोलह वर्ष आयु-वर्ग के बच्चे थे। वे सभी नारकीय जीवन जी रहे थे। दिन भर गली-गली घूमते हुए कचहरी घुन कर बेचने के बाद भी वे भूखे रहते थे। बीमार पड़ने पर बिना दवा के मरते रहे। ऊपर से पुलिस वालों को "चार आना हफ्ता" नहीं चुकाने पर बेल की मार। आखिर तब हुआ कि कोई और रोजगार खोजा जाय। दिसम्बर का महीना था। हर तरह कीटिंग काई बिक रहे थे। मैंने तय किया कि बच्चे कुछ दिन अभ्यास करके गोदना के प्रतीकों से कीटिंग काई बनावें और बेचें। यह 1978 की बात है। बासमती की ईड से उतारे गोदना के चित्र उस अभियान में काम आया। मेरे एक सहयोगी मित्र ने बच्चों को अंगण और रंग खरीद दिया। दूसरे मित्रों ने कुछ दिनों तक बच्चों के छाने का प्रबंध कर दिया। हफ्ते भर के अन्तर बच्चों ने बहुत सारे काई बना कर तैयार कर लिया। लोगों ने उस काई को बहुत पराज किया। दाम दो रुपये। बच्चे कलाकार और अध्यवसायी बन गए। मैं बहुत खुश हो कर, अगली व्यापक योजना के साथ घर लौट आया।



दिल्ली में कचहरीया बच्चों की गोदना चित्र के माध्यम से आजीविका का सम्मानजनक मार्ग उपलब्ध कराने में आंशिक सफलता से मैं काफी उत्साहित था। अब मैं गोदना देह-चित्र का उपयोग व्यापक क्षेत्र में देने-फुलने लोगों के उत्थान के लिए करना चाहता था। इसी विचार को ध्यान में रख कर, अगले दो वर्षों तक, गया-बोधगया और हजारीबाग के वृहत्तर भाग में, कई संस्थाओं के साथ मिल कर काम करता रहा। इसी क्रम में, गया जिले के वजीरगंज प्रखण्ड में 'ग्राम निर्माण केन्द्र, धरेया और गया शहर में 'लोक जागरण केन्द्र' की स्थापना भी की। इस क्षेत्र में भुइयों जाति के दलित बहुतायत में हैं। मिथिला के मुसहर इनसे मिलती-जुलती शिक्षित जाति के लोग हैं। समन्वय-आश्रम, बोधगया में कार्य करते हुए मैंने भुइयों बच्चों पर गोदना और मिथिला चित्र के प्रतीकों के माध्यम से कई तरह के शैक्षणिक प्रयोग किया और भुइयों चित्रों के गोदना से स्वयं भी बहुत कुछ सीखा। अक्टूबर, 1981 आते-आते मैं दरभंगा लौट

आया, उस समय तक जो कुछ जान सके थे, उसका प्रयोग वित्त समुदायों, रित्रायों के विकास में करने का मन बना कर।

मिथिला में मैं बालिकाओं और रित्रायों के लिए काम करना चाहता था, ऐसा काम जिससे उन्हें सम्मानजनक आजीविका और चेतना-विकास के साथ एक साथ उपलब्ध हो सकें, बिल्कुल अपने अनुभव और धर्म पर। मैं किसी से सहायता या अनुदान लेकर यह कार्यक्रम नहीं चलाना चाहता था। इसके कई कारण थे। मैं सभी जाति की रित्रायों के लिए काम करना चाहता था। मेरा मानना था कि समाज में पुरुष वर्ग किसी न किसी प्रकार के काम पर लेते थे, किन्तु रित्रायों ही ऐसी थीं जिनके श्रम का कोई आर्थिक मूल्य नहीं लगाया जाता था। लिंग-भेद, जाति-भेद, कर्म-भेद, अनेक प्रकार के भेद और वर्तमानों के सौंकर से बंधी रित्रायों, चाहे किसी जाति की हों, बेवश थीं। लेकिन रित्रायों को संगठित करना मिथिला जैसे



बहुत पुरुष-प्रधान समाज में आसान नहीं था। दूसरी बात कि यहाँ शूद्राशूद्र (अस्पृश्यता) का चलन इतना प्रबल था कि सभी जाति की रित्रायों एक साथ बैठ भी नहीं सकती थीं। ऐसी दशा में, बिना किसी सहायक के, केवल अपने निश्चय और साहस के बल पर, इतना बड़ा काम खड़ा करना एक तरह से असंभव था। अपनी पत्नी, श्रीमती शिवा कश्यप के सहयोग के कारण यद्यपि कि मैं पुरा आशङ्कित था कि किसी न किसी प्रकार कार्यक्रम जरूर चलता रहेगा, किन्तु जितना जो कुछ सोचा था, वैसा ही सफल भी होगा, इस भरोसे पर मैं किसी बात सहयोग लेकर मुश्किल में नहीं पड़ना चाहता था। आखिरकार, बहुत अभाव में, घर के पास एक पेड़ के नीचे, नवम्बर 1901 में, गौँ की ही बालिका विभा, मीरा, शशिबाला और कुछ अन्य बालिकाओं के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। धीमे-धीरे लड़कियाँ जुटने लगीं। उस जमाने में रित्रायों या लड़कियों के लिए कोई इस प्रकार का संगठन खड़ा करना मयामक सामाजिक अपराध था। गौँ के प्रमुख पुरुषों ने यद्यपि कि बहिलानों के लिए किसी प्रकार का कार्यक्रम चलाने से मना किया था, लेकिन मैंने काम जारी रखा। आखिर, जून 1903 में वह संगठन बिहार सरकार के साथ भारतीय विकास मंत्रालय से रजिस्टर्ड हो गया। यह मूल रूप से, लोककला विषयों के साथ, "पढ़ाई और कमाई" के विद्यालय के रूप में शुरू हुआ, मात्र लड़कियों और रित्रायों के लिए, पूर्णतः निशुल्क विद्यालय। उस समय मात्र दो शिक्षक थे मैं और मेरी पत्नी, शिवा किन्तु पद्धति की सहभागिता-आधारित, पार्टिसिपेटरी रखा गया, अर्थात् छात्रा भी शिक्षिका के रूप में, अपने से कनिष्ठ छात्राओं को सिखाती थीं। विषय के रूप में उस समय मात्र मिथिला लोकचित्र और परम्परागत सुजनी/कशीदा थे। मिथिला लोकचित्र में उपयोगितावाद का प्रवेश इसी समय हुआ। इससे पहले मिथिला विभा में (फ़ुबनी पेन्टिंग नाम से) मात्र सजावटी चित्र बनते थे जिसका एक मात्र उत्पादन और बाजार फ़ुबनी में केंद्रित था, मिथिल के शेष भाग के लोग चित्रकला के व्यावसायीकरण के लाभ से वंचित ही थे। अपने विद्यालय में हमने उपयोगी फैशन सामग्रियों को ही वर्ग बना दिया। थोड़े अग्रगत से लड़कियाँ जितना कुछ सीख लेती थीं, उस डिजाइन से छोटी वस्तु, जैसे टेबुल मैट और आगे जा कर, कुशन कवर बनाने लगती थीं। जैसे-जैसे छात्राओं का प्रशिक्षण बढ़ता जाता था, सामान या रेन्ज

भी बच
था।

लिए हम
की बाली,
लेकिन मैं
अपनी दो
चल भिन्न

उ
में आर्योदि
अभियान।
दूसरे गौँ,
हमारा अर्ध
भी थी, दि
का अग्रदो
अत्यन्त पर

ज
काम में मैं
अकादमिक

भी बढ़ता जाता था कुशन कबर के बाद दुफहे, जैकेट, कुर्तों और अन्ना में साड़ियों के उत्पादन का क्रम था।



यही एक बात बताना आवश्यक है कि उत्पादन, प्रशिक्षण और बाजार के इतने बड़े काम के लिए हमारे पास किसी प्रकार की पुँजी नहीं थी। मैंने अपनी पत्नी से उस्ताका एकमात्र महंगा सांगा, कान की बाली, और उसे गिरवी रख कर तीन सौ रुपये का प्रबंध किया। यही हमारी प्रारंभिक पुँजी थी। लेकिन मेरा सम्पर्क देश भर के समाज-सुधारकों और सामाजिक संस्थाओं के साथ था। मैंने लोगों को अपनी योजना बतलायी, सबी ने इसे सराहा और अपना नैतिक समर्थन दिया। परिवर्तन का आन्दोलन चल निकला।

जनवरी 1954 से, जब हमारी छात्राएँ बड़ा उत्पादन करने में लक्ष्य हो गयीं, तब हम महानगरी में आयोजित होने वाली प्रदर्शिनियों में भाग लेने लगे। अब गाँव के महापुरुषों ने हमारे विरुद्ध हिराक अभियान छेड़ा। एक तरफ समाज के ठेकेदारों का विरोध कठोर होता गया, दूसरी ओर एक गाँव से दूसरे गाँव तक इस कार्यक्रम को फैलाने और दूर-दूर तक गिरिया की स्त्रियों को जागरूक बनाने का हमारा अभियान भी तेज होता गया। फैलाव के इस कार्यक्रम की मुख्य भूमिका में यद्यपि श्रीमती सिवा भी थी, किन्तु दूर-दूर के गाँवों में रहनेवाली दलित महिलाओं तक गोदना-कला से कमाई और शिक्षा का आन्दोलन फैलाने में लड़की होकर भी, शशिबाला और अनीता दास ने जो साहस दिखाया, वह अत्यन्त सराहनीय है।

जसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, सामान्य चित्रा का शैक्षणिक उद्देश्य से प्रयोग करने का काम मैं मैं बहुत पहले से जुड़ा था। समय के साथ जो मुझा इसके साथ जुड़ा वह था लोक-कलाओं के अकादमिक और जीविकामूलक उपयोग का द्वार खोलना। मिथिला चित्राकला और गोदना चित्राकला के

[illegible][illegible]

पर से गोदना के प्रतीकों का संग्रह करके जलरूप
 लाती थी। दूसरी ओर, मिशिला के गाँवों में घूम
 कर, दोनों बहनें दलित महिलाओं के शरीर पर
 नुवे गोदना का संग्रह भी करती थीं यहाँ तक
 के दरभंगा क्षेत्र में जिस किसी इलाके में घुमना
 जाति के लोग जिन्हें पञ्चाभीय भाषा में कोरुडिया
 कहते हैं आ कर अपना शिविर लगाते थे, उनको
 साथ में ले-जोड़ बढ़ा कर, उनके शरीर पर बने
 गोदना का संग्रह भी वे दोनों बहनें करती थीं।
 यह अत्यन्त कठिन कार्य था। इस प्रकार, १९८७
 ईस्वी तक हमारे पास गोदना का पथेष्ट संग्रह हो
 गया। मैंने कुछ अफ्रीकी महिलाओं का गोदना
 फोटोग्राफ्स उपलब्ध किया। अफ्रीकी महिलाओं के
 शरीर पर गोदना के पर्याप्त चिन्ह होते हैं, जिन्हें
 डिजाइन सामग्रियों के रूप में ठालन का काम शुरू
 हुआ। इन सामग्रियों के आधार पर पहली बार
 १९८७ में, "गोदना चित्रा शैली" नाम से इस
 पुस्तक का साइब्लोस्टाइल संस्करण तैयार
 हुआ। इस संस्करण की तैयारी में इस लेखक के
 अतिरिक्त शशिमाता के साथ अनीता शर्मा की
 अहम भूमिका रही है।



[illegible]

को सचना नहीं रहते हुए

1. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$
 $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$

શિલ્પકલાવંશી, ૨૭ ઓક્ટોબર ૨૦૧૮

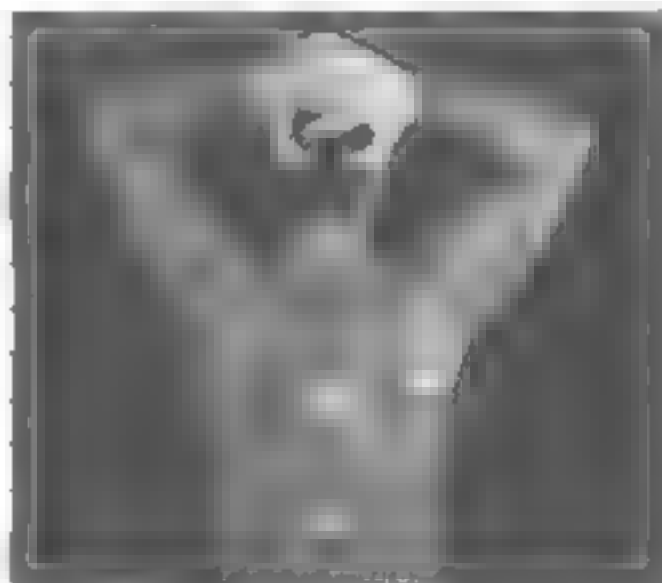
कृष्ण कृष्ण कृष्ण



[illegible][illegible]

[illegible]

समुदायों में भी गोदना हमेशा से लोकप्रिय था। 300 ई.पू. में जापान जान वाले चीनी पर्यटकों ने ध्वाने यात्रा विवरण में जापानी गोदना का विस्तृत उल्लेख किया है। 1803 और 1868 के मध्य जापानी गोट-का उपयोग मात्रा 'इकोयो-ए' जल पर गिरा बना कर वास करने वाली एक जाति के समूहों में प्रसारित हो गया इस काल में गोदना का व्यापक शारीरिक अभ करने वाले और वैराग्यता में लगे लोगों द्वारा किया जाता था और गोदना उनही वैशियत का संकेत बनता था सन् 1720 से पूर्व कहा जाता है कि जापान में अपशयिनी का दोष शिद्ध होने के बाद उनके नाक और कान

[illegible][illegible]

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से एक को चुनिए और इसका विवरण दीजिए।
 (क) भारत में शिक्षा का स्थिति
 (ख) भारत में शिक्षा का भविष्य
 (ग) भारत में शिक्षा का वर्तमान स्तर
 (घ) भारत में शिक्षा का भविष्य

से किसी सदस्य का जीवन के अगले स्तर में मात्रा प्रवेश ही नहीं होता है बल्कि ये सांस्कारिक विधियों को लागू करने में भी सहायता करती है।

इस तरह के सांस्कारिक उपक्रमों के आयोजन का समय कबीले के बड़े-बुजुर्ग तय करते हैं जो किसी बालक या बालिका के युवा वय में प्रवेश करने पर सज्ज रहते हैं। बचपन और जवानी के संधिकाल में होने वाले संस्कार का पहला चरण पृथक्करण होता है जब किसी पुरुष सदस्य को अपने परिवार और कबीले से निश्चित समय के लिए अलग रहना पड़ता है। यह समय ३ से ६ सप्ताह तक की होता है जब किसी युवा को रहे बालक को भाई जीवन में जनजातीय भूमिका के लिए तैयार किया जाता है। इस दौरान उसे जनजातीय विद्या और जीवनशैली का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी क्रम में उसको शिर का खतना और कपड़ों का परिवर्तन (मिना पूरा का मोदना)



सांसांरिक सम्मान का व्यवहार शामिल है।

बाद शुरू होने की बाद सभी विवाह करने की अनुमति मिल जाती है।

... विषय ...
 ... कारण का प्रबल साक्ष्य है

... विषय ...

... जिसमें लिंग-मुण्ड ...
 ... चार्डी और चोरे लगाए जाते हैं ...
 ... प्रौढ़ावायक कर्मकाण्डों से पहले ...
 ... प्रविष्टिपूर्वक ...
 ... मनीषिज्ञान ...
 ... जाती हैं, जिसके अन्तर्गत ...
 ... उधवास और गीत-नृत्य ...
 ... के द्वारा आनेवा ...
 ... विधि ...
 ... प्रसम्भवागत ...
 ... नरतालीय समुदायों में ...
 ... जिस प्रकार के ...
 ... प्रौढ़ावायक कर्मकाण्ड ...
 ... लड़कों के लिए अ ...
 ... है ...
 ... अथवा ...
 ... गुरुकुलों के लिए ...
 ... निर्धारित विधियाँ ...
 ... चलती हैं ...
 ... प्रपुआ म्युनिमी ...
 ... के कोइला जनजाति में



... विषय ...

... क्षेत्रों में गौरी चमड़ी और रीमिल चमड़े वाली ऐसी जनजाति में ...
 ... विषय ...

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

$$T_j^k = a_j^k \cdot \frac{1}{\sqrt{2\pi}} \exp\left(-\frac{1}{2} \left(\frac{t_j - \mu_j}{\sigma_j}\right)^2\right) \quad \text{for } j = 1, 2, \dots, n$$

ਦੇਵਨ ਈ

[illegible][illegible]

कष्टवशक है जिसे हाथों में बताया नहीं जा सकता

[illegible]

उसके बाद ही वह अपने जीवन में आत्मिक विकास के लिए प्रयास करने लगे।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।

परिणामस्वरूप, गांधीजी का जीवन एक सच्ची विप्लवकारी शक्ति बन गया।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।

उसके बाद ही वह अपने जीवन में आत्मिक विकास के लिए प्रयास करने लगे।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।

परिणामस्वरूप, गांधीजी का जीवन एक सच्ची विप्लवकारी शक्ति बन गया।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।

उसके बाद ही वह अपने जीवन में आत्मिक विकास के लिए प्रयास करने लगे।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।
 वह अपने जीवन में बहुत सारे विचारों को व्यक्त करने में सफल हुए।

नहीं होते हैं। प्रायः सभी शिकारी आदिवासी-समुदायों में
 रक्षक भक्तियों/देवता/युद्ध आत्माओं/शुभ आत्माओं या
 मित्र-आत्माओं को अर्पित अर्घ की तरह होता है। इस
 प्रकार, शिकारी आदिवासी-समुदायों में, आस कर जहाँ नवजात शिशु को नष्ट
 लगाया जाता है, कर्मकाण्ड की तरह पूरा किया जाता
 है। मनुआ म्यूनिनी में युवाओं के शरीर पर घड़ियाल की
 राल जैसे डिजाइन का नक्काश-गोदना बनाया जाता है।
 उनका विश्वास है कि घड़ियाल ही मनुष्य का सुदृक्कल
 है। इसलिए नष्ट कर कर उसका स्वरूप धारण करना
 घड़ियाल देवता के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना हुआ।
 और इस क्रिया को दीर्घम भक्त स्तुत धरुत
 घड़ियाल देवता को अर्पित अर्घ है। इस क्रम में, प्रीति
 की धानी, पीठ और गिल्लों पर घड़ियाल की दाँत जैसे
 डिजाइन सज्जे जाते हैं।



हैं इन चिन्तों से पीड़ित, संपादक चमड़ी वाले साधुवायिक सदस्य को परम्परागत रूप से व्यापार करने आनुष्ठानिक गीत गाने नृत्य करने और समारोहों में भाग लेने की अनुमति नहीं होती है इथियोपिया की कारा जनजाति में पुरुष अपनी छत्ती पर लश्तर-गांधना बनवा कर प्रदर्शित करता है कि उसने दुष्मन कबीले को लोगों को मारा है इथियोपिया की श्री सरी लंग दुष्मन कबीले के पुरुष को मारने पर अपनी दाहिनी बांह पर धाड़ के नाल जैसा आकार गोदधान है, जबकि किसी दुष्मन औरत को मारने पर बाँधी बाँह पर पैसा आकार गोदधान है

आकर्मिक माना गया है। संश्लेष लगाने से अथवा गर्भ भ्रान्ति द्वारा घटी गए शिशु जब सूक्ष्म जति हैं, तब बाए-बाए जली स्थान पर संश्लेष लगाने या घटाने से लवणों के

की तरह एक जाले हैं और डिजाइन की एक विवशता
एकता करते हैं। मोदना डिजाइन को इस प्रकार को
आपकी मे कोल्हाइक तादावपकक कहते हैं। इस तरह की
रचना को लिए हिन्दी मे बगुं पारिभाषिक शब्द नहीं है।
लेखन में के लक्ष्यों को व्यक्त करने से इस शब्द की रचना

अनिवार्य होता है

है। स्पष्ट है कि नूरा लोगों का गांवना उनकी सामाजिक स्थिति और श्रेष्ठता से निर्धारित होते हैं। कई धार्मिक मान्यताओं के रहते हुए भी गांवना को उनकी रीति-रिवाज का चिह्न माना जाता है किन्तु इसके साथ स्वास्थ्यजन्य कारण भी जुड़े हुए हैं। भोजन के कारण बने गांवना से उनका मानना है कि, औंशी की ज्योति बढ़ती है। कनपटी पर बने गांवना माथे के बल का दूर करता है और भेट में तीगल के स्थान पर बने चार कोणाय तारा हेमेटाइटिस का निवारण करते हैं।



इसका और नूरा जनजातियों को बीच, सारस्वतिका परम्परा के सम्बंध में, गांवना करणन का लेकर किसी व्यक्ति की निजी इच्छा बहुत महत्व नहीं रखती है।

इस प्रकार, गांवना की रीति-रिवाज, सामाजिक स्थिति और श्रेष्ठता से निर्धारित होते हैं। गांवना को उनकी रीति-रिवाज का चिह्न माना जाता है किन्तु इसके साथ स्वास्थ्यजन्य कारण भी जुड़े हुए हैं। भोजन के कारण बने गांवना से उनका मानना है कि, औंशी की ज्योति बढ़ती है। कनपटी पर बने गांवना माथे के बल का दूर करता है और भेट में तीगल के स्थान पर बने चार कोणाय तारा हेमेटाइटिस का निवारण करते हैं।

इस प्रकार, गांवना की रीति-रिवाज, सामाजिक स्थिति और श्रेष्ठता से निर्धारित होते हैं। गांवना को उनकी रीति-रिवाज का चिह्न माना जाता है किन्तु इसके साथ स्वास्थ्यजन्य कारण भी जुड़े हुए हैं। भोजन के कारण बने गांवना से उनका मानना है कि, औंशी की ज्योति बढ़ती है। कनपटी पर बने गांवना माथे के बल का दूर करता है और भेट में तीगल के स्थान पर बने चार कोणाय तारा हेमेटाइटिस का निवारण करते हैं।

अनुभव भी होता है, सविष्य के सुखद निश्चय से भरिपूर्ण से एक स्वचालित प्रक्रिया होती है। इन्डोर्फिन मुक्त होकर करता है जो आध्यात्मिक अनुभूति का प्रेरक होता है, एक तरह की स्वचालित स्थिति बनती है और आध्यात्मिक बर्द भूल कर गोदना करवा लेता है।

नृत्य-वैज्ञानिकों का मानना है कि गोदना का चलन खतना ही पुराना है जितना मानव-सभ्यताओं का प्रादुर्भाव सहास के लक्ष्मीनी बहाड़ी श्रृंखला से प्रागैतिहासिक (8000-5000 ई.पू.) प्रस्तर दिखा मिले हैं। मानवाकृति पितृके शरीर पर जहाँ-तहाँ कुछ चिन्ह बसे हैं। पुरातत्त्वविदों का मानना है कि ये चिन्ह गोदना-कला का प्रतिनिधित्व करते हैं। मेक्सिको के विश्वाहरमोरस में ओलमेक प्रस्तर मूर्तियाँ मिली हैं जो लगभग 1000 ईसा पूर्व की हैं। इन मूर्तियों के चेहरे और कंधे पर महान्-गोदना जैसी चिन्ह पड़े हुए हैं। विश्व के अलग-अलग भागों में समय के साथ ही गोदना के औजारों और चिन्तनों में, सुरक्षा की दृष्टि से परिवर्तन



रहा है, जो इस कला का सही ढंग से प्रदान करेगा।

गोदना का एक ही तरह का था। यह एक ही तरह का था। यह एक ही तरह का था।

[illegible]

स्थल नहीं रहने जहाँ बीरा लगाया गया था बल्कि वह फैलता है

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

2. The second part of the document outlines the various methods used to collect and analyze data, including interviews, surveys, and focus groups.

3. The third part of the document describes the results of the study, highlighting the key findings and the implications for practice.

4. The fourth part of the document discusses the limitations of the study and suggests areas for future research.

5. The fifth part of the document provides a conclusion and summarizes the main points of the study.

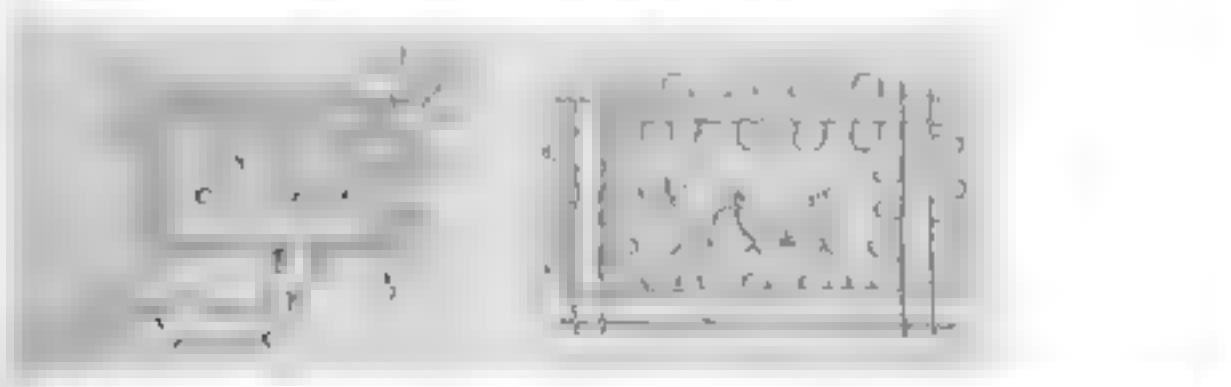
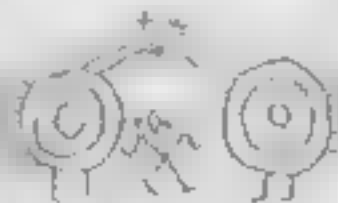
[illegible]

लोगों ने जो तुनिया की जानने, जीतने और
खुदने के बराबर से समुदाय समाधिक धाया पर
निकलने थे आक्रान्ती समाज का
सहयोगदाता होने ही उन निष्पक्ष निरीक्ष
लोगों पर झरता का पताक दूट पड़ा। गोर
अमेरिकी लोगों की दृष्टि में काले अफिरकी
भावा पशु थे वे उन्हें जानघरी की तरह घेर
कर जंजिरी में जकड़ कर उनके शरीर पर
अपनी आत्मकियत की छाप दान कर उन्हें
जपना गुलाम बना कर अमेरिका सामे लगे
यह सिलसिला सन् 1880 ईसवी से प्रारम्भ
हुआ प्रायः हर रोज, बीनेम और कॉंगो के
गुलाम बन्दरगाह 'संथम घवतजद' से
जहाजों का प्रार्था, हजारों आक्रान्ती स्त्री, पुरुष
और बच्चों को लेकर अटलान्तिक महासागर
के जलमार्ग से लम्बग गंग नदी
अमेरिका पहुँचता था और फिर ब्रिटिश लोगों
के हाथ, उन्हें गुलाम बना कर बेच दिया जाता



1. **प्रस्तावना**
 2. **उद्देश्य**
 3. **वर्गीकरण**
 4. **प्रकार**
 5. **वैशिष्ट्य**
 6. **प्रकार**
 7. **वैशिष्ट्य**
 8. **प्रकार**
 9. **वैशिष्ट्य**
 10. **प्रकार**
 11. **वैशिष्ट्य**
 12. **प्रकार**
 13. **वैशिष्ट्य**
 14. **प्रकार**
 15. **वैशिष्ट्य**
 16. **प्रकार**
 17. **वैशिष्ट्य**
 18. **प्रकार**
 19. **वैशिष्ट्य**
 20. **प्रकार**
 21. **वैशिष्ट्य**
 22. **प्रकार**
 23. **वैशिष्ट्य**
 24. **प्रकार**
 25. **वैशिष्ट्य**
 26. **प्रकार**
 27. **वैशिष्ट्य**
 28. **प्रकार**
 29. **वैशिष्ट्य**
 30. **प्रकार**
 31. **वैशिष्ट्य**
 32. **प्रकार**
 33. **वैशिष्ट्य**
 34. **प्रकार**
 35. **वैशिष्ट्य**
 36. **प्रकार**
 37. **वैशिष्ट्य**
 38. **प्रकार**
 39. **वैशिष्ट्य**
 40. **प्रकार**
 41. **वैशिष्ट्य**
 42. **प्रकार**
 43. **वैशिष्ट्य**
 44. **प्रकार**
 45. **वैशिष्ट्य**
 46. **प्रकार**
 47. **वैशिष्ट्य**
 48. **प्रकार**
 49. **वैशिष्ट्य**
 50. **प्रकार**
 51. **वैशिष्ट्य**
 52. **प्रकार**
 53. **वैशिष्ट्य**
 54. **प्रकार**
 55. **वैशिष्ट्य**
 56. **प्रकार**
 57. **वैशिष्ट्य**
 58. **प्रकार**
 59. **वैशिष्ट्य**
 60. **प्रकार**
 61. **वैशिष्ट्य**
 62. **प्रकार**
 63. **वैशिष्ट्य**
 64. **प्रकार**
 65. **वैशिष्ट्य**
 66. **प्रकार**
 67. **वैशिष्ट्य**
 68. **प्रकार**
 69. **वैशिष्ट्य**
 70. **प्रकार**
 71. **वैशिष्ट्य**
 72. **प्रकार**
 73. **वैशिष्ट्य**
 74. **प्रकार**
 75. **वैशिष्ट्य**
 76. **प्रकार**
 77. **वैशिष्ट्य**
 78. **प्रकार**
 79. **वैशिष्ट्य**
 80. **प्रकार**
 81. **वैशिष्ट्य**
 82. **प्रकार**
 83. **वैशिष्ट्य**
 84. **प्रकार**
 85. **वैशिष्ट्य**
 86. **प्रकार**
 87. **वैशिष्ट्य**
 88. **प्रकार**
 89. **वैशिष्ट्य**
 90. **प्रकार**
 91. **वैशिष्ट्य**
 92. **प्रकार**
 93. **वैशिष्ट्य**
 94. **प्रकार**
 95. **वैशिष्ट्य**
 96. **प्रकार**
 97. **वैशिष्ट्य**
 98. **प्रकार**
 99. **वैशिष्ट्य**
 100. **प्रकार**

भारतीय कला में अद्यतन उपस्थित है। विश्लेषकों का मानना है कि गौड़ना देह-शिल्प का अवतरण गुफाशिल्पों से हुआ, जहाँ वह कृषि से अनजान था। उस समय गौड़ना इनके समूह का परिचयक चिन्ह था। एक बार यह लेखकलय कर्णाटक की आदिवासी महिलाओं के हाथों से गौड़ना का समूह कर रहे थे। जब सयोग से ऐसा प्रतीक सामने आया जो खरगोड़



॥ श्री गणेशाय नमः ॥
विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम् ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

1. प्रश्न : यदि $\sin A = \frac{3}{5}$ हो, तो $\cos A$ का मान ज्ञात करें।

॥ अथ भगवत्पूजायाः प्रथमः अंगः ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः प्रथमोऽध्यायः ॥

समूह का मुखिया है जो समूह के सदस्यों को एक साथ रखता है। यह समूह के सदस्यों को एक साथ रखने में मदद करता है और समूह के सदस्यों को एक साथ रखने में मदद करता है।

गोदना की छात्रों के लिए यह जानना आवश्यक है कि

हमारे जीवन में 19 वीं शताब्दी के अन्त में जो परिवर्तन आए हैं, वे जीवन-शैली का संरक्षण करते आ रहे हैं। यह जीवन शैली का संरक्षण है और इसीके अनुरूप, उनकी लोककलाओं, चित्रकलाओं और शिल्पों पर वन्य जीवन का प्रभाव पड़ रहा है।



जब शिल्प के रूप में देखें तो यह एक बहुत ही बड़ा और भारी शिल्प है। यह शिल्प का उपयोग करने में बहुत ही कठिन है। यह शिल्प का उपयोग करने में बहुत ही कठिन है। यह शिल्प का उपयोग करने में बहुत ही कठिन है।

המחיר של המוצר הנמכר הוא 10 שקלים, והמחיר של המוצר הנרכש הוא 5 שקלים. המחיר של המוצר הנמכר הוא 10 שקלים, והמחיר של המוצר הנרכש הוא 5 שקלים.

உருக்கிய பருக்கி

[illegible]

44. 671. 70. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841.

१. ०. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०.

[illegible]

$\partial^2 \mathcal{L} / \partial \alpha^2 = 0$, $\partial^2 \mathcal{L} / \partial \alpha \partial \beta = 0$, $\partial^2 \mathcal{L} / \partial \beta^2 = 0$, $\partial^2 \mathcal{L} / \partial \alpha \partial \gamma = 0$, $\partial^2 \mathcal{L} / \partial \beta \partial \gamma = 0$, $\partial^2 \mathcal{L} / \partial \gamma^2 = 0$.

[illegible]

$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{\rho} \right) = - \frac{1}{\rho^2} \frac{d\rho}{dt}$

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

$$|\gamma| \leq \frac{2}{\sqrt{2}} = \sqrt{2} \approx 1.414$$

कौ. गोदना के रूप में अपनी देह से लगाए रहें।



Figure 1. (a) η and (b) γ as a function of α for $\beta = 0.5$ and $\gamma = 0.5$.

... ..

[illegible]

15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047

[illegible]
$$Y = \begin{pmatrix} Y_1 \\ Y_2 \\ Y_3 \\ Y_4 \\ Y_5 \end{pmatrix} \sim N \left(\begin{pmatrix} \mu_1 \\ \mu_2 \\ \mu_3 \\ \mu_4 \\ \mu_5 \end{pmatrix}, \begin{pmatrix} \sigma_1^2 & \sigma_{12} & \sigma_{13} & \sigma_{14} & \sigma_{15} \\ \sigma_{21} & \sigma_2^2 & \sigma_{23} & \sigma_{24} & \sigma_{25} \\ \sigma_{31} & \sigma_{32} & \sigma_3^2 & \sigma_{34} & \sigma_{35} \\ \sigma_{41} & \sigma_{42} & \sigma_{43} & \sigma_4^2 & \sigma_{45} \\ \sigma_{51} & \sigma_{52} & \sigma_{53} & \sigma_{54} & \sigma_5^2 \end{pmatrix} \right)$$

1) 2) 3) 4) 5)

4. The following are the results of the regression analysis:

[illegible][illegible]

| | | | | | | | | | |
|---------|-------|---------|-------|---------|-------|---------|-------|---------|-------|
| π_4 | U_4 | π_3 | U_3 | π_2 | U_2 | π_1 | U_1 | π_0 | U_0 |
|---------|-------|---------|-------|---------|-------|---------|-------|---------|-------|

४. किन्तु इराणी पुष्टि मेघादत की एक सिद्धांशों ने भी की,

9. $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^2} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^3} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^4} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^5} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^6} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^7} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^8} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^9} = \infty$ $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x^{10}} = \infty$

4" 10" 11" 12" 13" 14" 15" 16" 17" 18" 19" 20" 21" 22" 23" 24" 25" 26" 27" 28" 29" 30" 31" 32" 33" 34" 35" 36" 37" 38" 39" 40" 41" 42" 43" 44" 45" 46" 47" 48" 49" 50" 51" 52" 53" 54" 55" 56" 57" 58" 59" 60" 61" 62" 63" 64" 65" 66" 67" 68" 69" 70" 71" 72" 73" 74" 75" 76" 77" 78" 79" 80" 81" 82" 83" 84" 85" 86" 87" 88" 89" 90" 91" 92" 93" 94" 95" 96" 97" 98" 99" 100" 101" 102" 103" 104" 105" 106" 107" 108" 109" 110" 111" 112" 113" 114" 115" 116" 117" 118" 119" 120" 121" 122" 123" 124" 125" 126" 127" 128" 129" 130" 131" 132" 133" 134" 135" 136" 137" 138" 139" 140" 141" 142" 143" 144" 145" 146" 147" 148" 149" 150" 151" 152" 153" 154" 155" 156" 157" 158" 159" 160" 161" 162" 163" 164" 165" 166" 167" 168" 169" 170" 171" 172" 173" 174" 175" 176" 177" 178" 179" 180" 181" 182" 183" 184" 185" 186" 187" 188" 189" 190" 191" 192" 193" 194" 195" 196" 197" 198" 199" 200" 201" 202" 203" 204" 205" 206" 207" 208" 209" 210" 211" 212" 213" 214" 215" 216" 217" 218" 219" 220" 221" 222" 223" 224" 225" 226" 227" 228" 229" 230" 231" 232" 233" 234" 235" 236" 237" 238" 239" 240" 241" 242" 243" 244" 245" 246" 247" 248" 249" 250" 251" 252" 253" 254" 255" 256" 257" 258" 259" 260" 261" 262" 263" 264" 265" 266" 267" 268" 269" 270" 271" 272" 273" 274" 275" 276" 277" 278" 279" 280" 281" 282" 283" 284" 285" 286" 287" 288" 289" 290" 291" 292" 293" 294" 295" 296" 297" 298" 299" 300" 301" 302" 303" 304" 305" 306" 307" 308" 309" 310" 311" 312" 313" 314" 315" 316" 317" 318" 319" 320" 321" 322" 323" 324" 325" 326" 327" 328" 329" 330" 331" 332" 333" 334" 335" 336" 337" 338" 339" 340" 341" 342" 343" 344" 345" 346" 347" 348" 349" 350" 351" 352" 353" 354" 355" 356" 357" 358" 359" 360" 361" 362" 363" 364" 365" 366" 367" 368" 369" 370" 371" 372" 373" 374" 375" 376" 377" 378" 379" 380" 381" 382" 383" 384" 385" 386" 387" 388" 389" 390" 391" 392" 393" 394" 395" 396" 397" 398" 399" 400" 401" 402" 403" 404" 405" 406" 407" 408" 409" 410" 411" 412" 413" 414" 415" 416" 417" 418" 419" 420" 421" 422" 423" 424" 425" 426" 427" 428" 429" 430" 431" 432" 433" 434" 435" 436" 437" 438" 439" 440" 441" 442" 443" 444" 445" 446" 447" 448" 449" 450" 451" 452" 453" 454" 455" 456" 457" 458" 459" 460" 461" 462" 463" 464" 465" 466" 467" 468" 469" 470" 471" 472" 473" 474" 475" 476" 477" 478" 479" 480" 481" 482" 483" 484" 485" 486" 487" 488" 489" 490" 491" 492" 493" 494" 495" 496" 497" 498" 499" 500" 501" 502" 503" 504" 505" 506" 507" 508" 509" 510" 511" 512" 513" 514" 515" 516" 517" 518" 519" 520" 521" 522" 523" 524" 525" 526" 527" 528" 529" 530" 531" 532" 533" 534" 535" 536" 537" 538" 539" 540" 541" 542" 543" 544" 545" 546" 547" 548" 549" 550" 551" 552" 553" 554" 555" 556" 557" 558" 559" 560" 561" 562" 563" 564" 565" 566" 567" 568" 569" 570" 571" 572" 573" 574" 575" 576" 577" 578" 579" 580" 581" 582" 583" 584" 585" 586" 587" 588" 589" 590" 591" 592" 593" 594" 595" 596" 597" 598" 599" 600" 601" 602" 603" 604" 605" 606" 607" 608" 609" 610" 611" 612" 613" 614" 615" 616" 617" 618" 619" 620" 621" 622" 623" 624" 625" 626" 627" 628" 629" 630" 631" 632" 633" 634" 635" 636" 637" 638" 639" 640" 641" 642" 643" 644" 645" 646" 647" 648" 649" 650" 651" 652" 653" 654" 655" 656" 657" 658" 659" 660" 661" 662" 663" 664" 665" 666" 667" 668" 669" 670" 671" 672" 673" 674" 675" 676" 677" 678" 679" 680" 681" 682" 683" 684" 685" 686" 687" 688" 689" 690" 691" 692" 693" 694" 695" 696" 697" 698" 699" 700" 701" 702" 703" 704" 705" 706" 707" 708" 709" 710" 711" 712" 713" 714" 715" 716" 717" 718" 719" 720" 721" 722" 723" 724" 725" 726" 727" 728" 729" 730" 731" 732" 733" 734" 735" 736" 737" 738" 739" 740" 741" 742" 743" 744" 745" 746" 747" 748" 749" 750" 751" 752" 753" 754" 755" 756" 757" 758" 759" 760" 761" 762" 763" 764" 765" 766" 767" 768" 769" 770" 771" 772" 773" 774" 775" 776" 777" 778" 779" 780" 781" 782" 783" 784" 785" 786" 787" 788" 789" 790" 791" 792" 793" 794" 795" 796" 797" 798" 799" 800" 801" 802" 803" 804" 805" 806" 807" 808" 809" 810" 811" 812" 813" 814" 815" 816" 817" 818" 819" 820" 821" 822" 823" 824" 825" 826" 827" 828" 829" 830" 831" 832" 833" 834" 835" 836" 837" 838" 839" 840" 841" 842" 843" 844" 845" 8

0 5 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 10

[illegible]

79th 1st National Conference of the American Psychological Association, 1996, Washington, DC, USA.

मानक अक्षरों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए, शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वे अपने पाठ्यक्रम में स्थानीय भाषाओं और लिपियों का उपयोग करें।

7. 2015 年 12 月 31 日，甲公司“应付账款”科目贷方余额为 100 万元，其中 80 万元为 2015 年 12 月 31 日新形成的应付账款；120 万元为 2015 年 11 月 30 日形成的应付账款。2015 年 11 月 30 日，甲公司“应付账款”科目贷方余额为 120 万元，其中 100 万元为 2015 年 11 月 30 日新形成的应付账款；20 万元为 2015 年 10 月 31 日形成的应付账款。2015 年 10 月 31 日，甲公司“应付账款”科目贷方余额为 20 万元，其中 10 万元为 2015 年 10 月 31 日新形成的应付账款；10 万元为 2015 年 9 月 30 日形成的应付账款。2015 年 9 月 30 日，甲公司“应付账款”科目贷方余额为 10 万元，其中 10 万元为 2015 年 9 月 30 日新形成的应付账款。

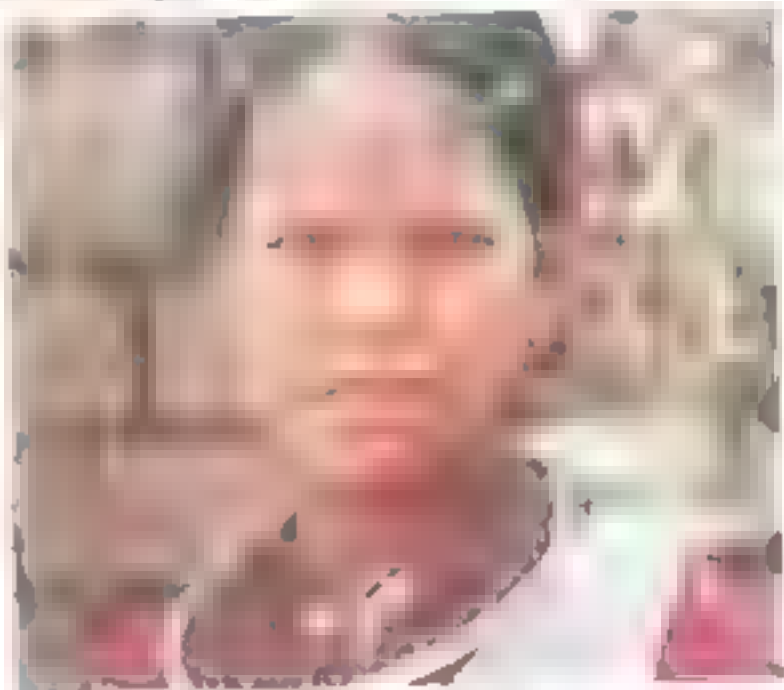
[illegible][illegible]

समस्त जन्म की छिन्ना ~~...~~ था । प्रसार की शक्ति में ही प्रकृत अथवा यद्यपि यत्न प्रमाण
हो गये । तब प्रमाण और प्रमाणों की अवधारणा का दण्ड-प्रमाणों के अन्तर्गत परिभाषित करने का
महत्त्व प्रमाण में प्रमाणों के द्वारा प्रमाण का दण्ड-प्रमाण किया

शृङ्गो हि गङ्गीनामस्य स्यादभिधत्ता च वादकस्य वासवाग्रजस्य च मानसं च नाहरात आत्मस्यभिधत्ता
लिङ्गात् च सधप्रहरणं च संमग्नं धर्मधातुकं अथाहस्य च त्रिगुणस्य च त्रिगुणं अतुल्यं श्रुतिप्रमाणं
प्रत्यक्षं च त्रिहोत्रं च चरणं शरीरं च आसा शयनं वाक्यं चिन्तनं च त्रिगुणं च त्रिगुणं च त्रिगुणं च त्रिगुणं च

प्रकृति सृष्टि करी है प्रिया न भूति तिरस्कार गुप्त खनन का है और कलम भाव से प्रकृति करती है

जिसकी इसी अंग को कटवा दे
जिससे वह आधारी करता है: यदि
शूद्र अपने से बड़ी जाति की स्त्री
को साथ सम्भोग करे तो राजा
उसका लिंग कटवा दे अथवा वह
(शूद्र) स्वयं अपनी जान दे दे, और
यदि वह अपनी रक्षा का प्रयास
करे तो सचिता यही है कि राजा
उसका वध करे। शूद्र यदि किसी
वेद-मन्त्र का उच्चारण करे तो
राजा उसकी जीभ कटवा दे, यदि
यह आसन बिस्तर वातवीह तथा
गर्ह में खच्च जातियों की बराबरी
करे तो राजा उसे ही पण का
यण्य दे। इसी नियम की अधीन,
शासक मासक शूद्र द्वारा सभार्य

[illegible]

स्वभावात् एव गतीति ननु प्रतीतिरिति ननु अत्र गतिरिति प्रतीतिरिति ननु

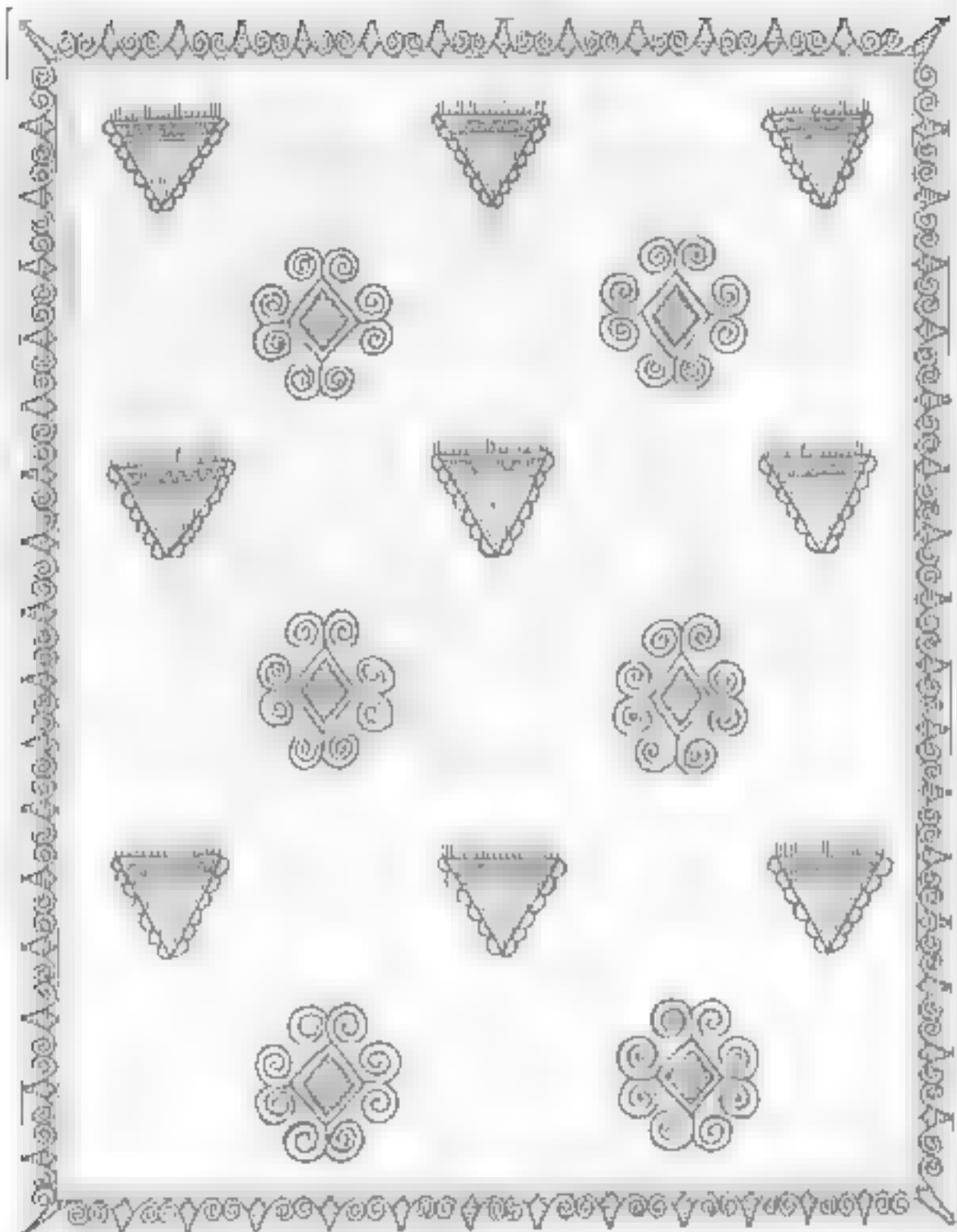
आधुनिक युग
 में आदिवासियों और
 दलित समुदाय से बाहर
 के समाज में गांधी
 शरीर को आकर्षक
 बनाने का एक साधन का
 रूप में देखा जाने लगा
 है। कला की अन्य
 शाखाओं को अनुक्रम ही

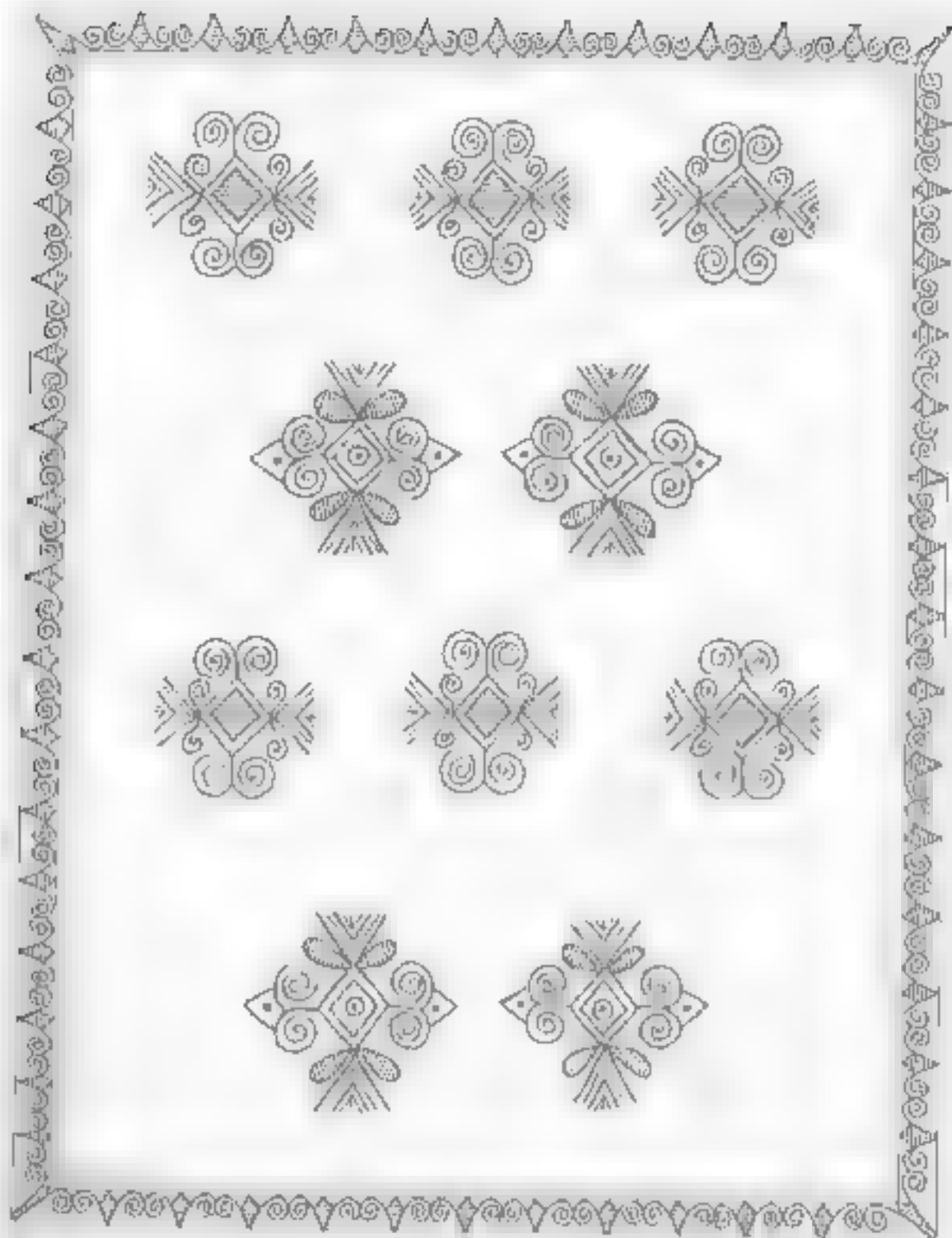


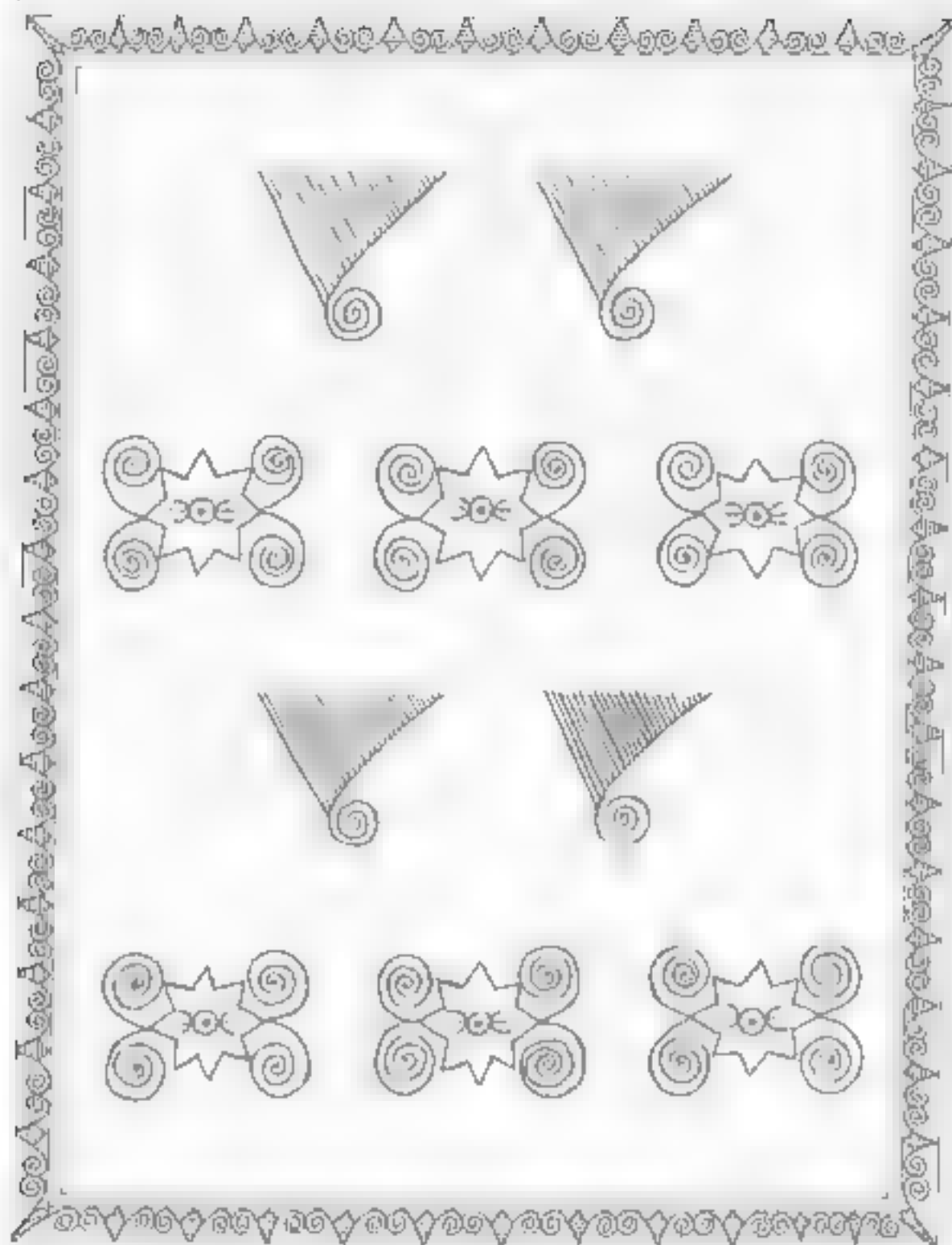
कला की दुनिया में
 एक कला है, जिसके
 साथ सौन्दर्यबोध की
 अनुभूति, धर्म और
 कलात्मक विपुलता
 जुड़ी हुई है। कला के
 क्षेत्र पर गांधी का दायरा
 गहरा का प्रभाव उत्पन्न
 दूसरों से भिन्न दिखने
 अथवा दिखाना है

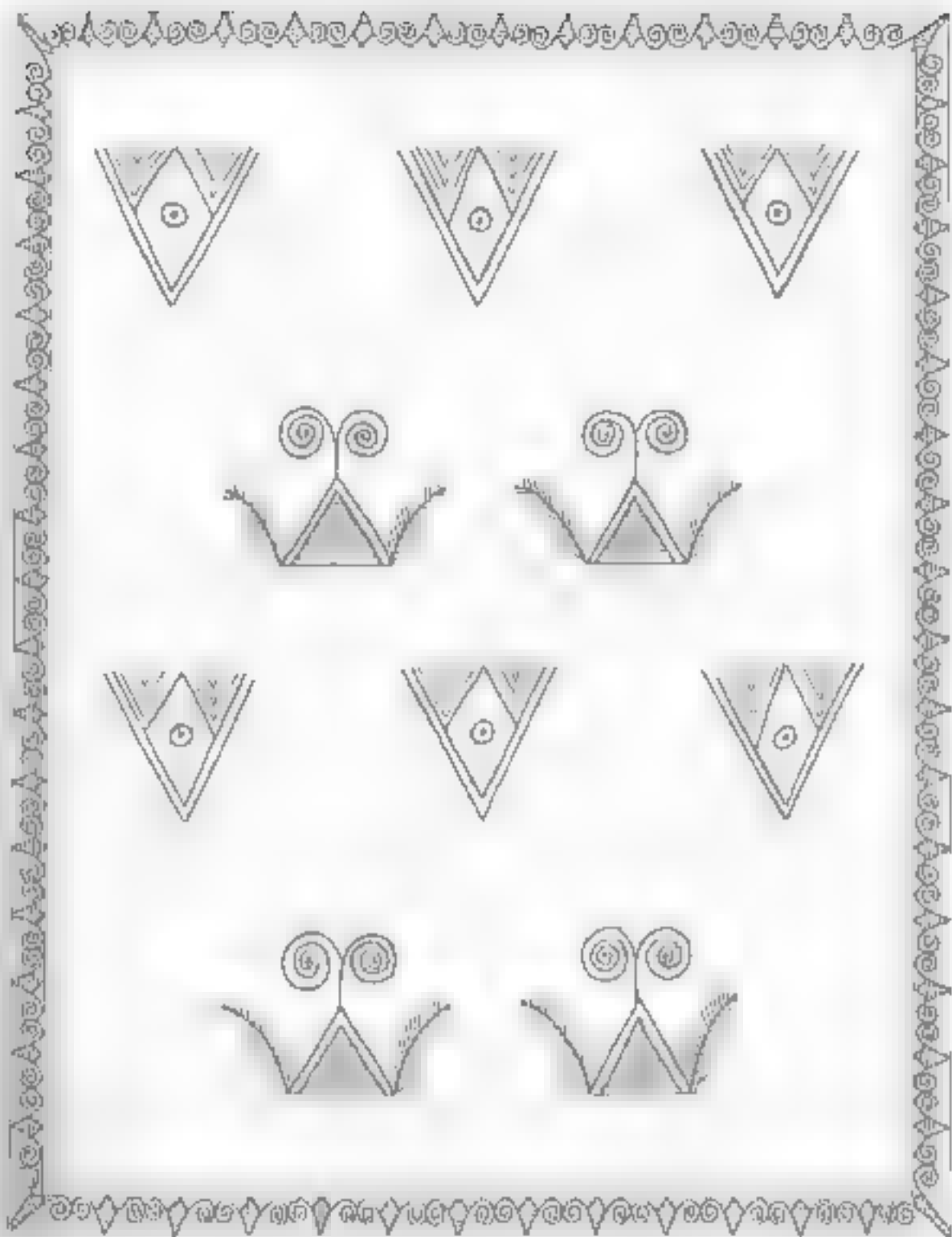
आधुनिक विचारधारा बनाए जाते हैं

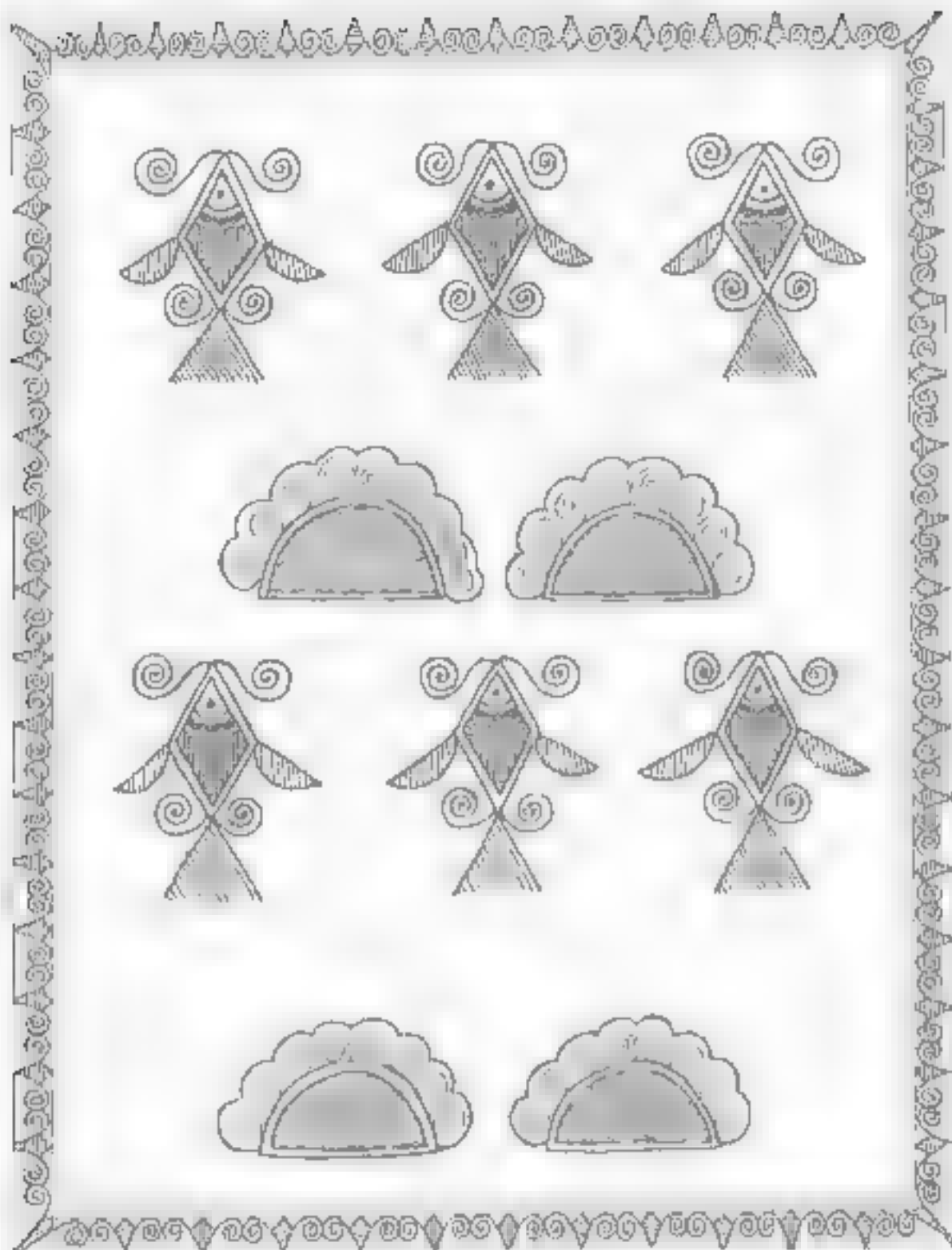
गोदना बूटी

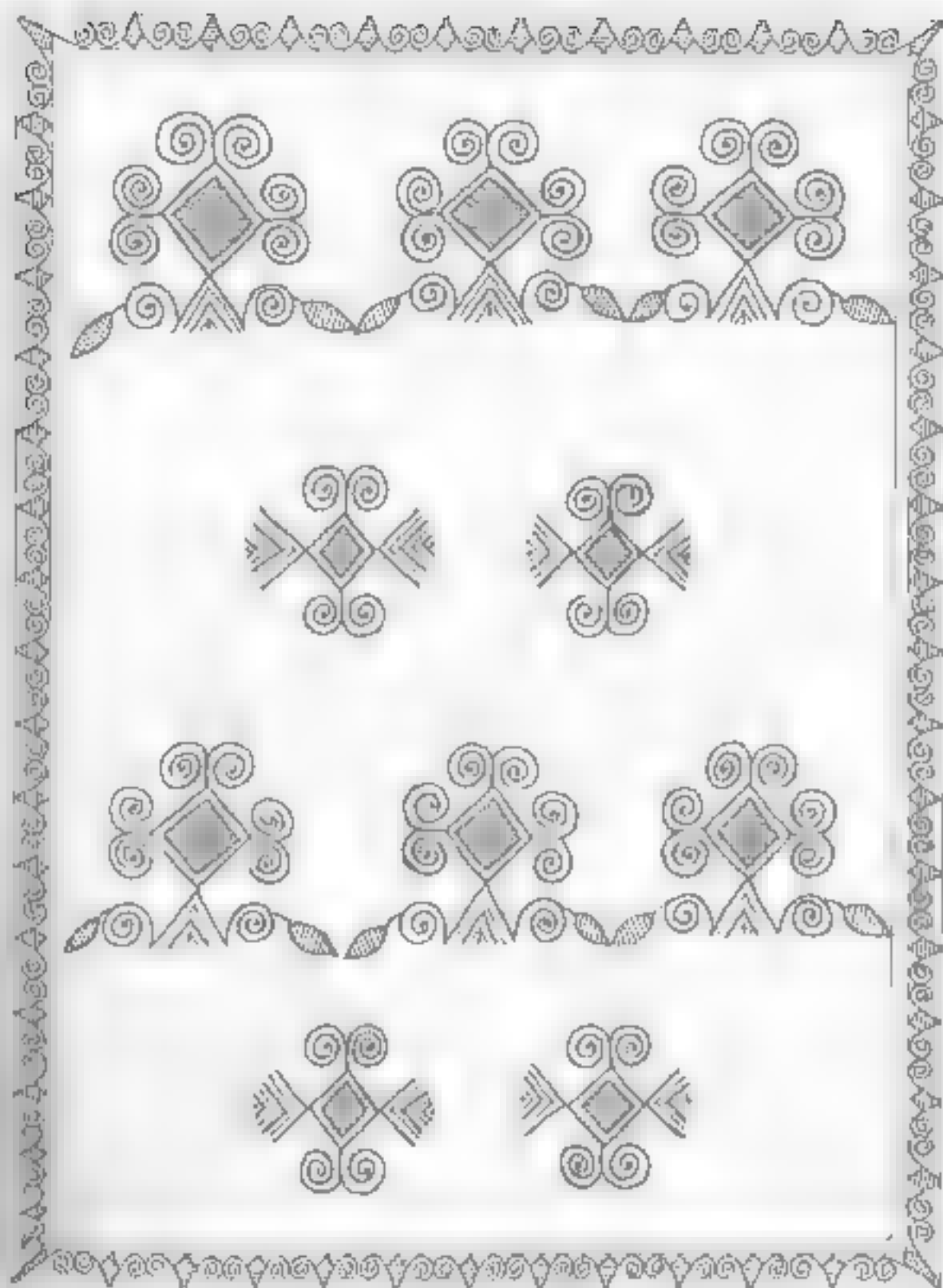


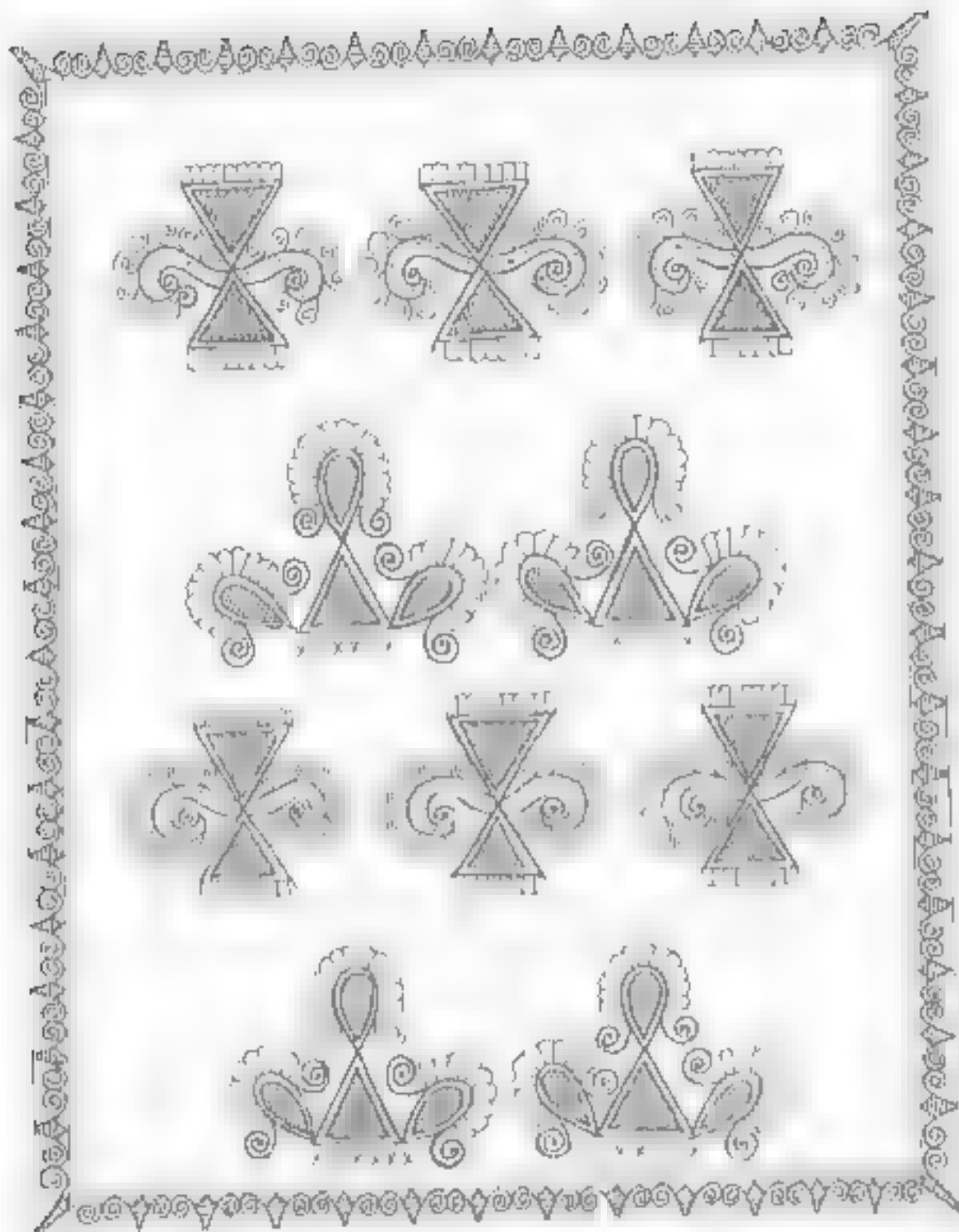




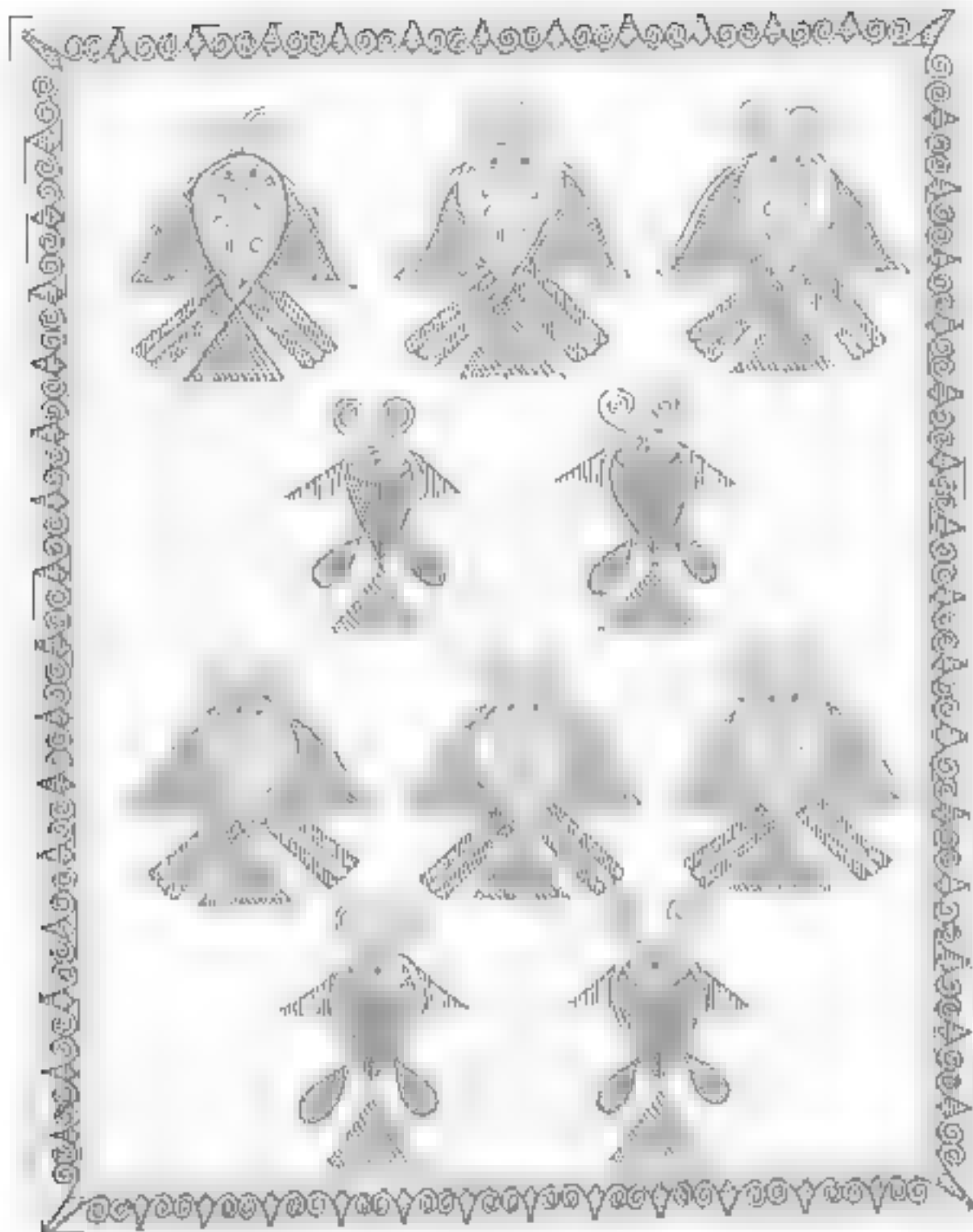


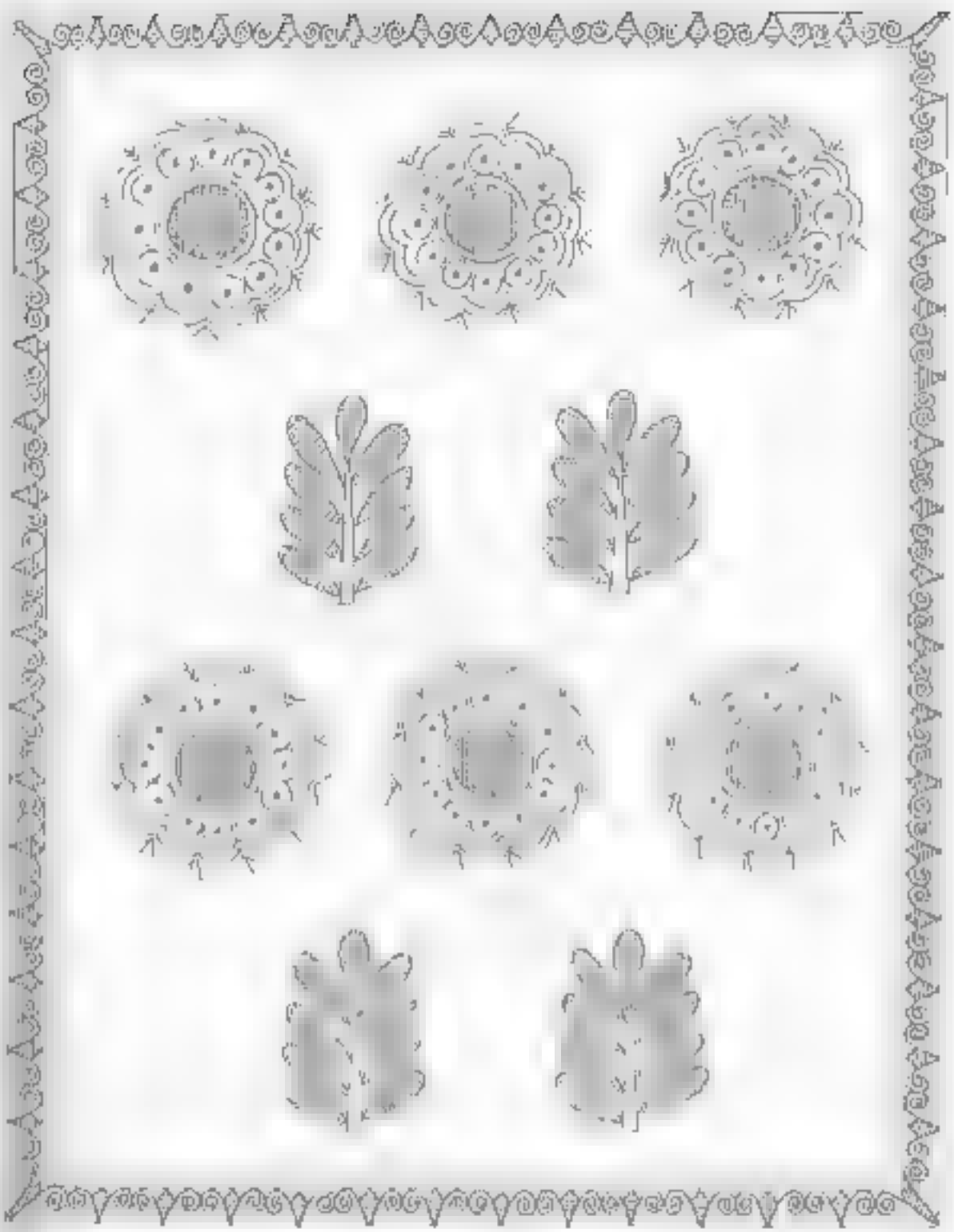




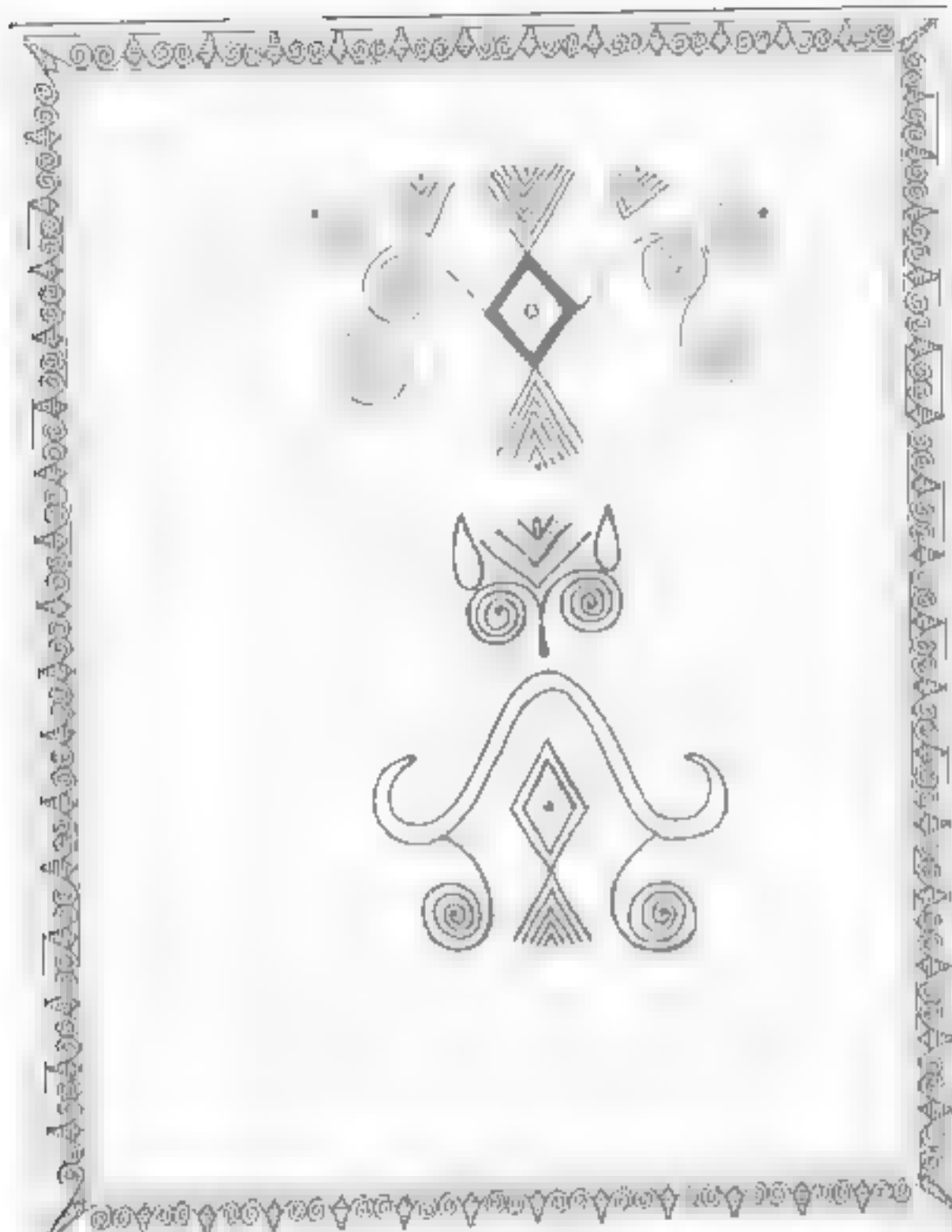




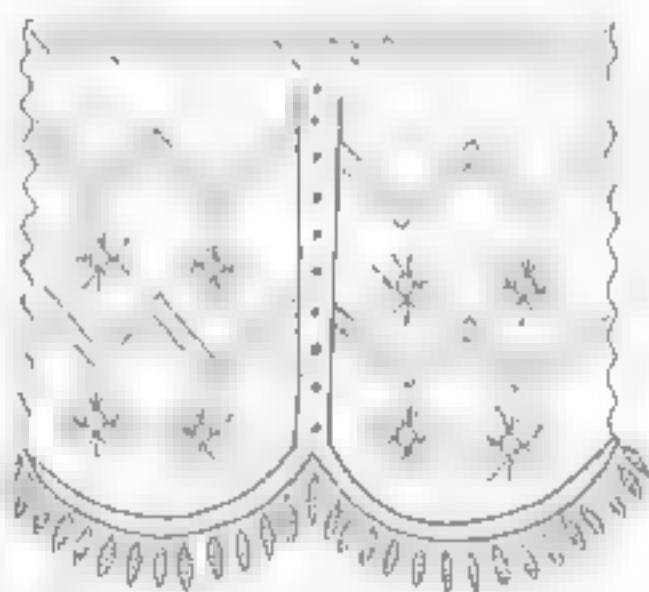
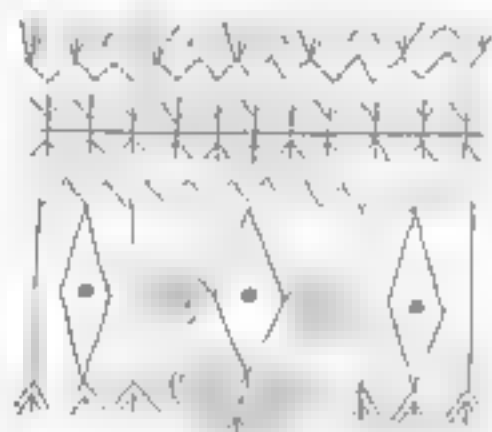




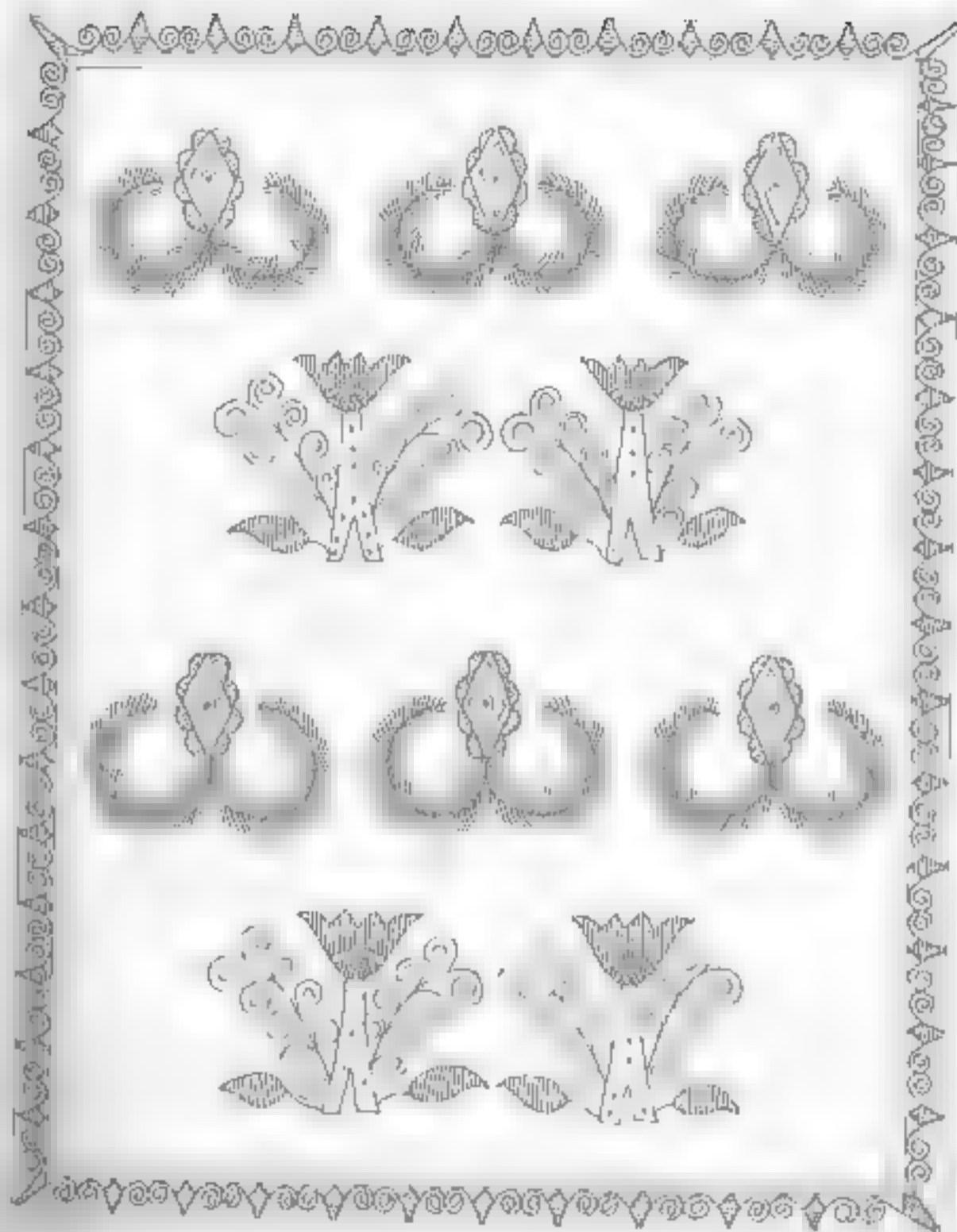
Handwritten text in a cursive script, likely a title or description, running vertically along the left margin.

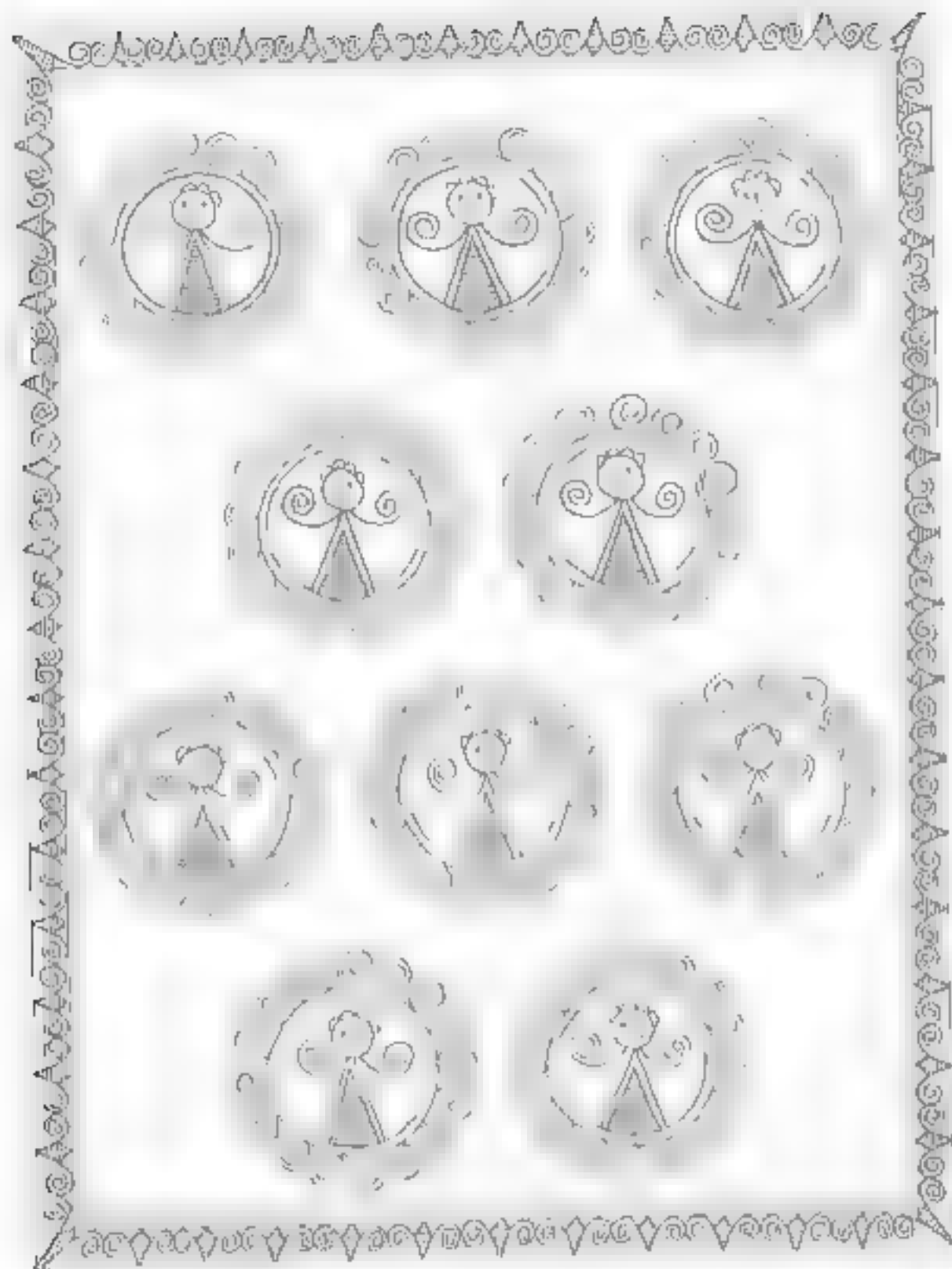


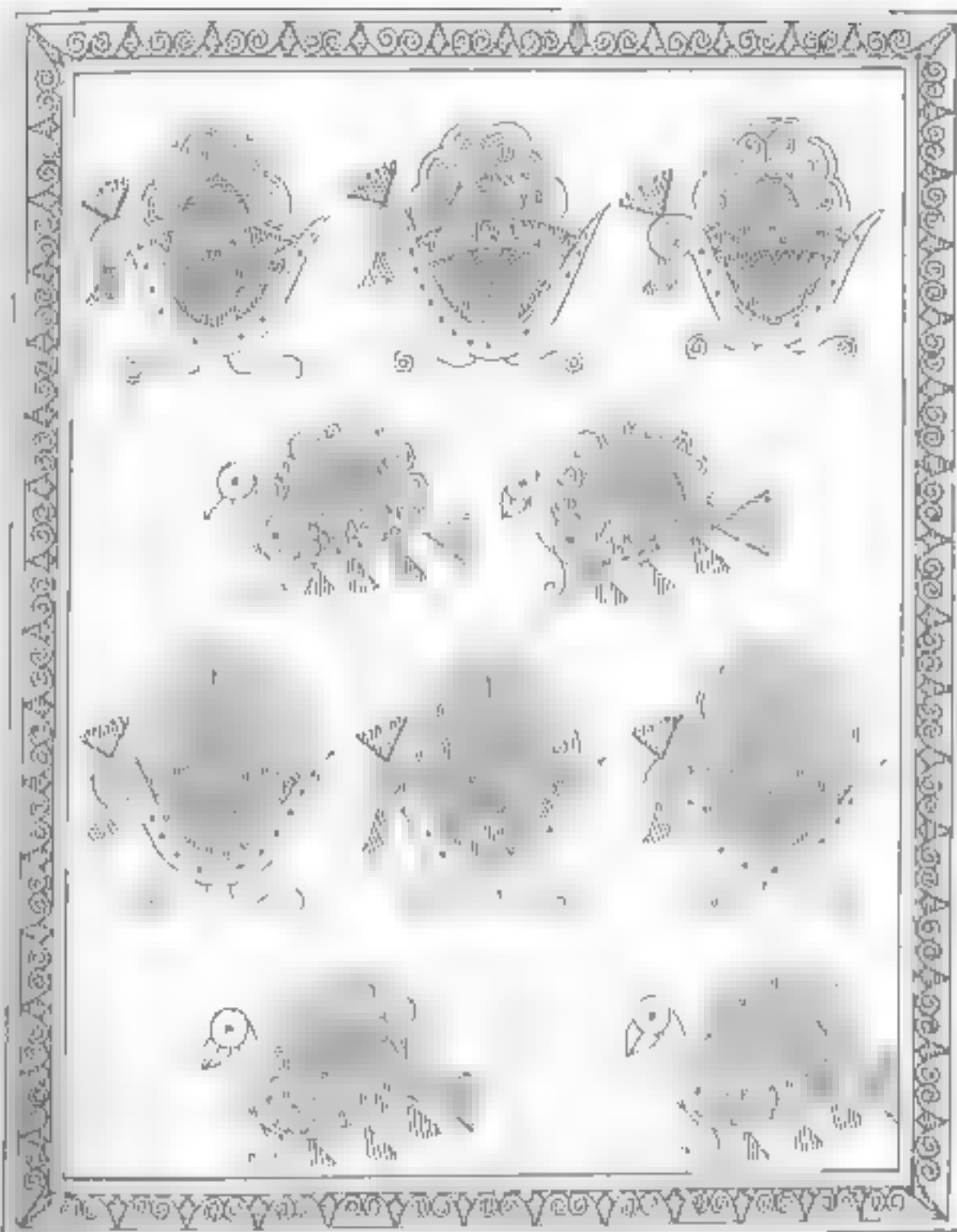
गोदना मोहर

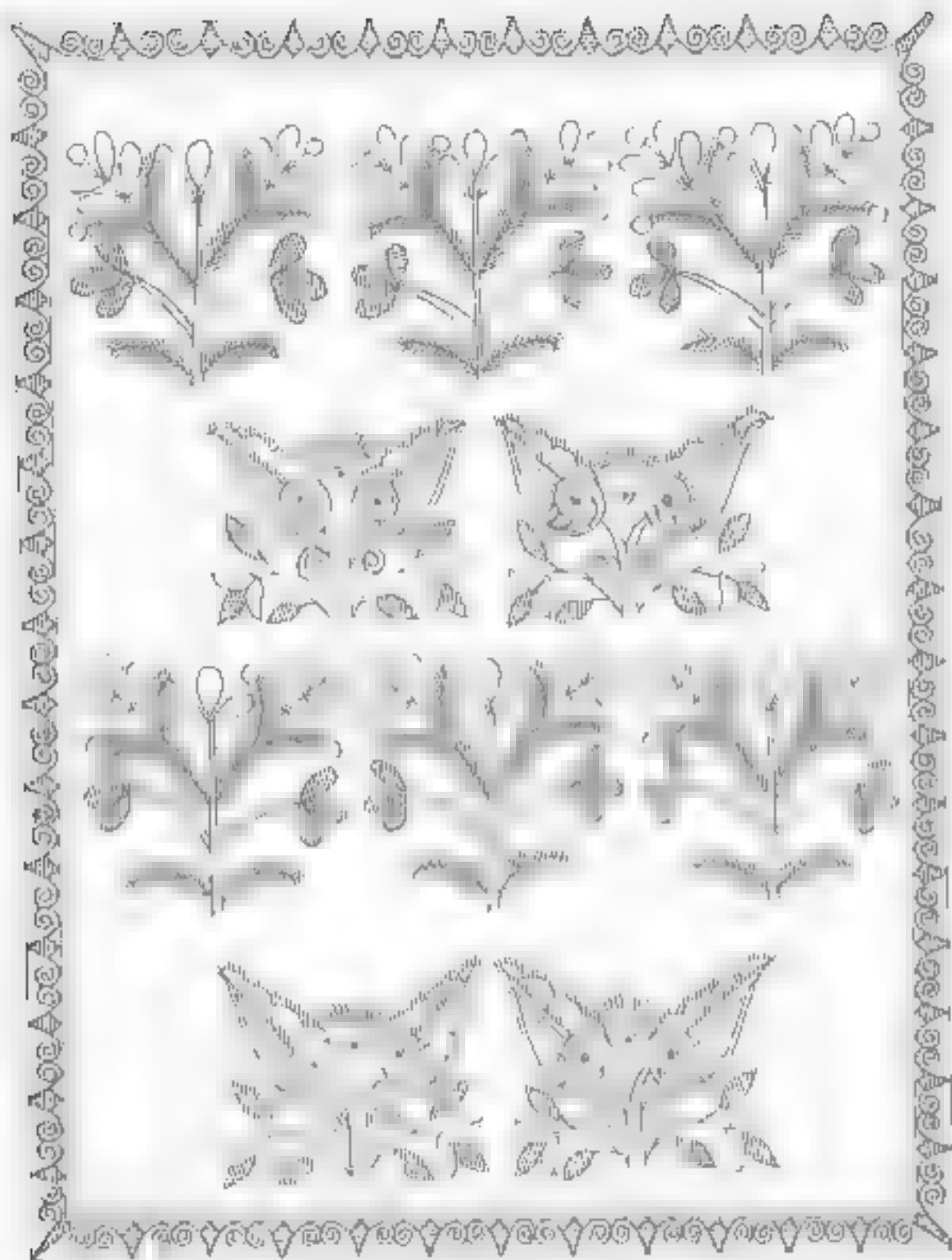


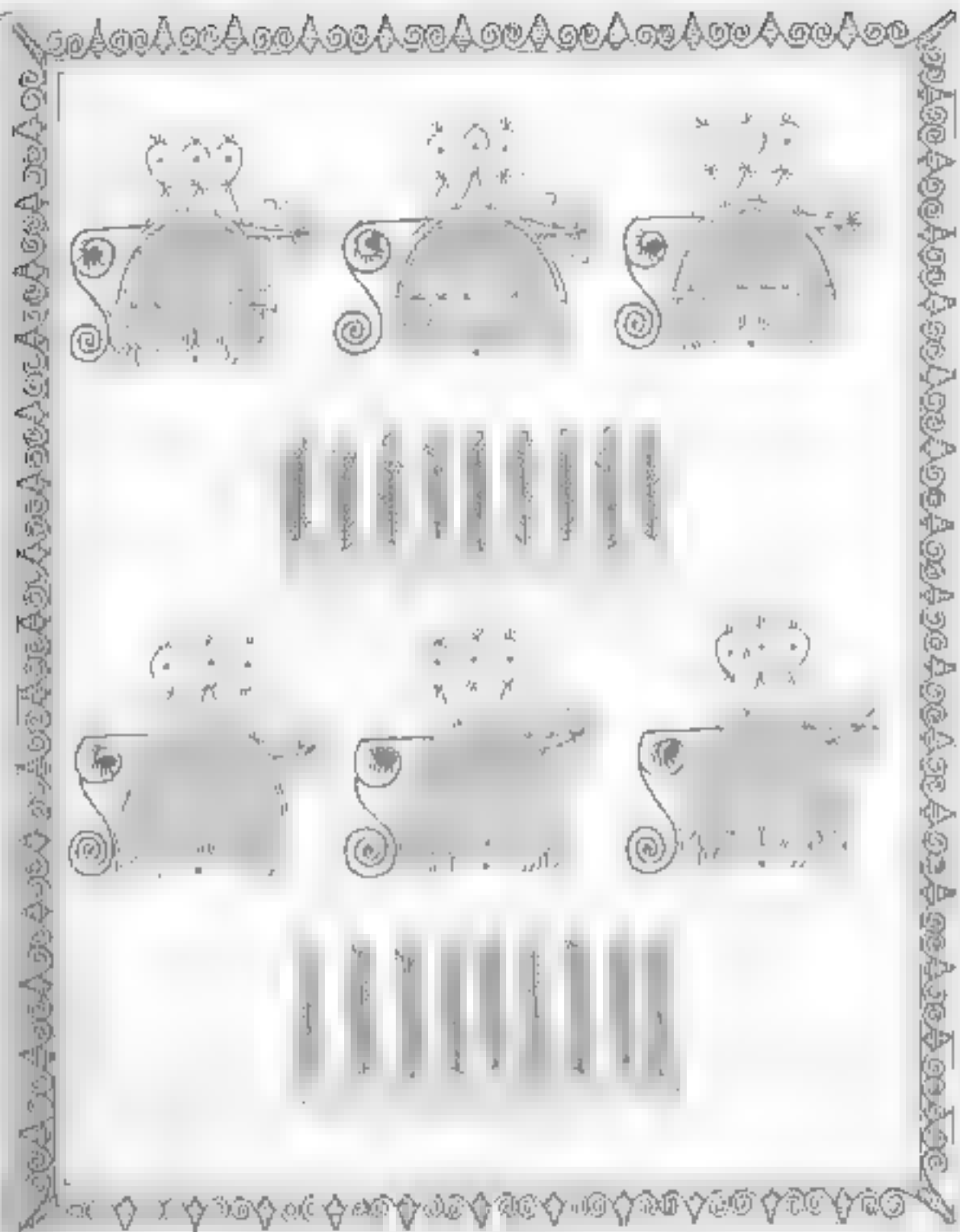


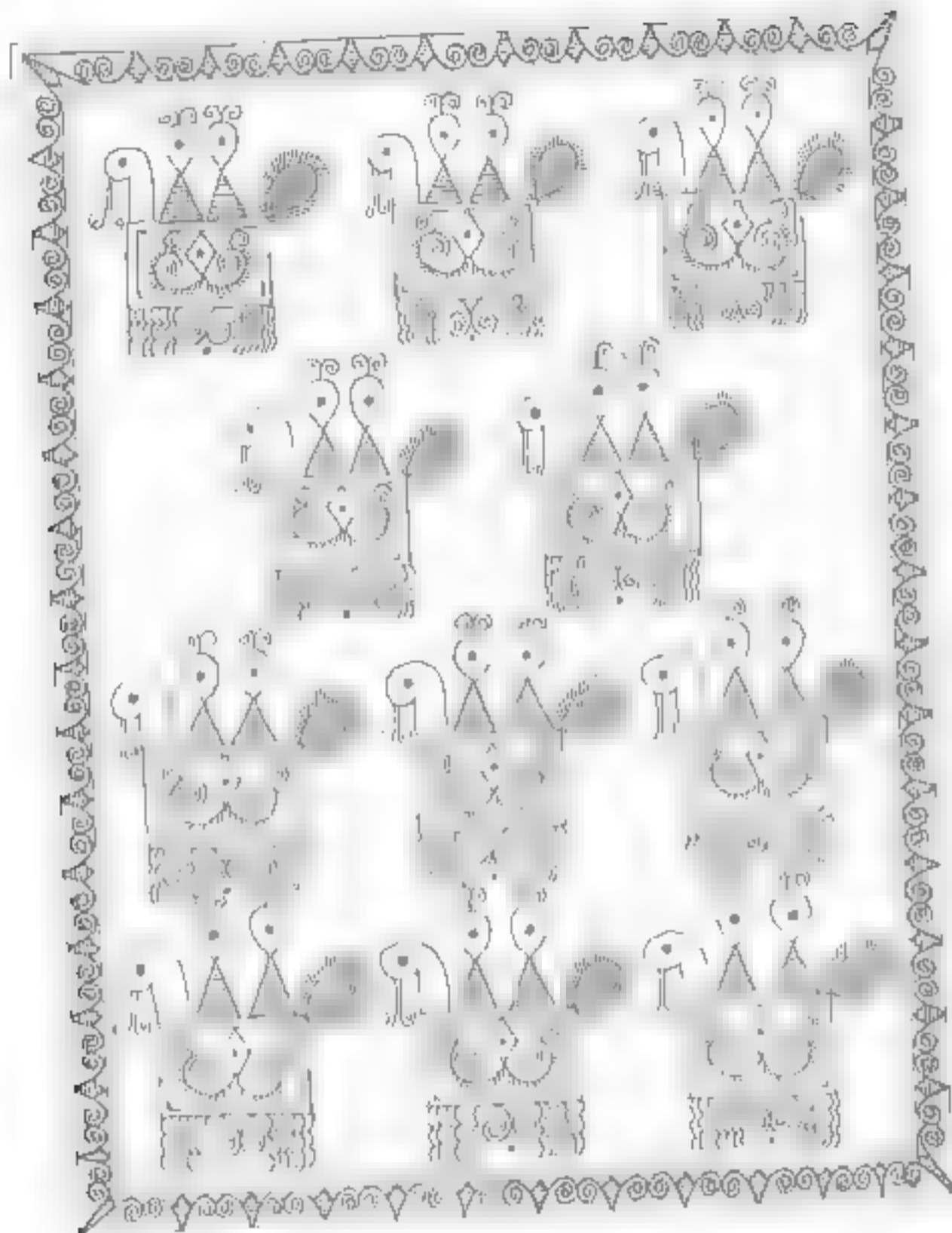


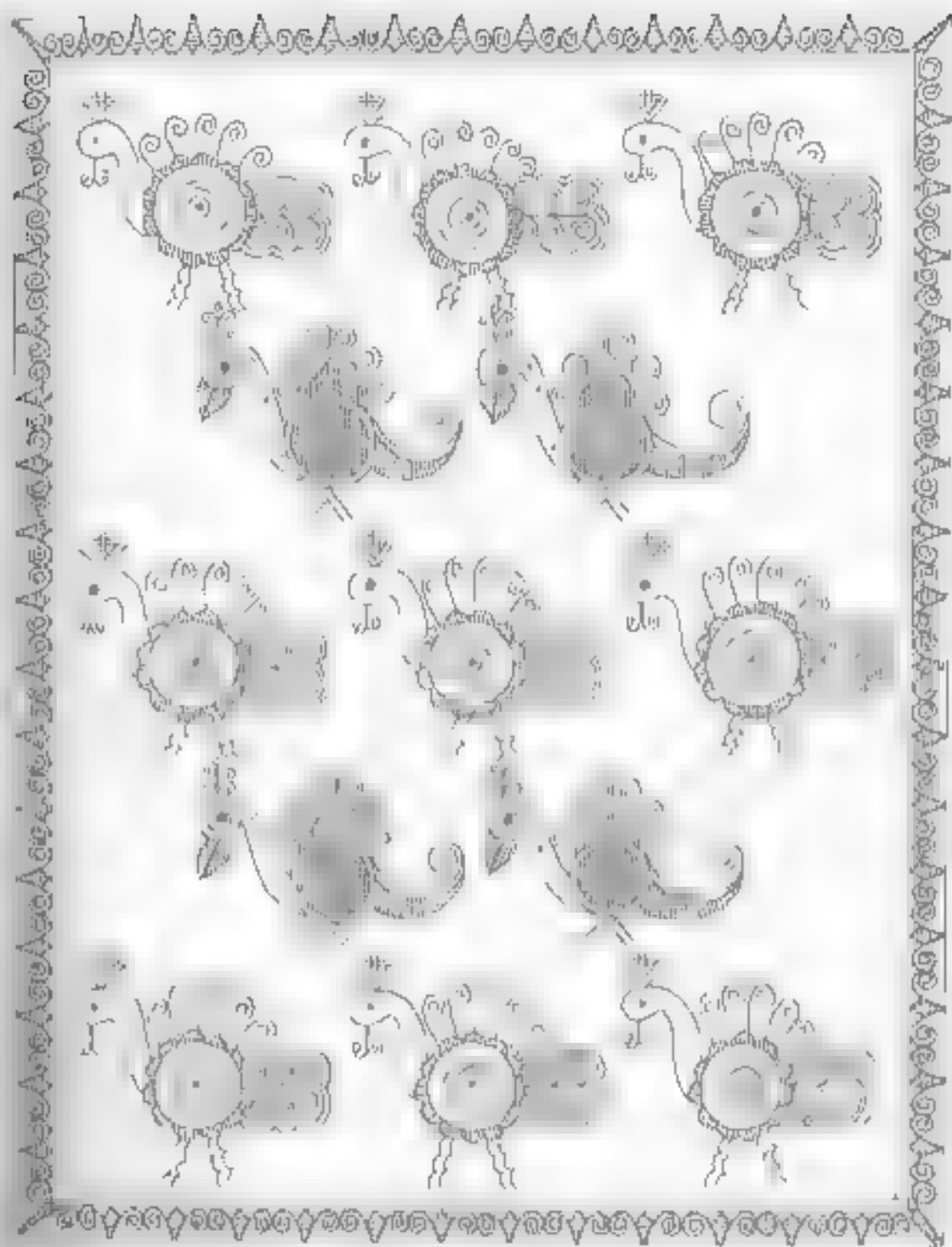


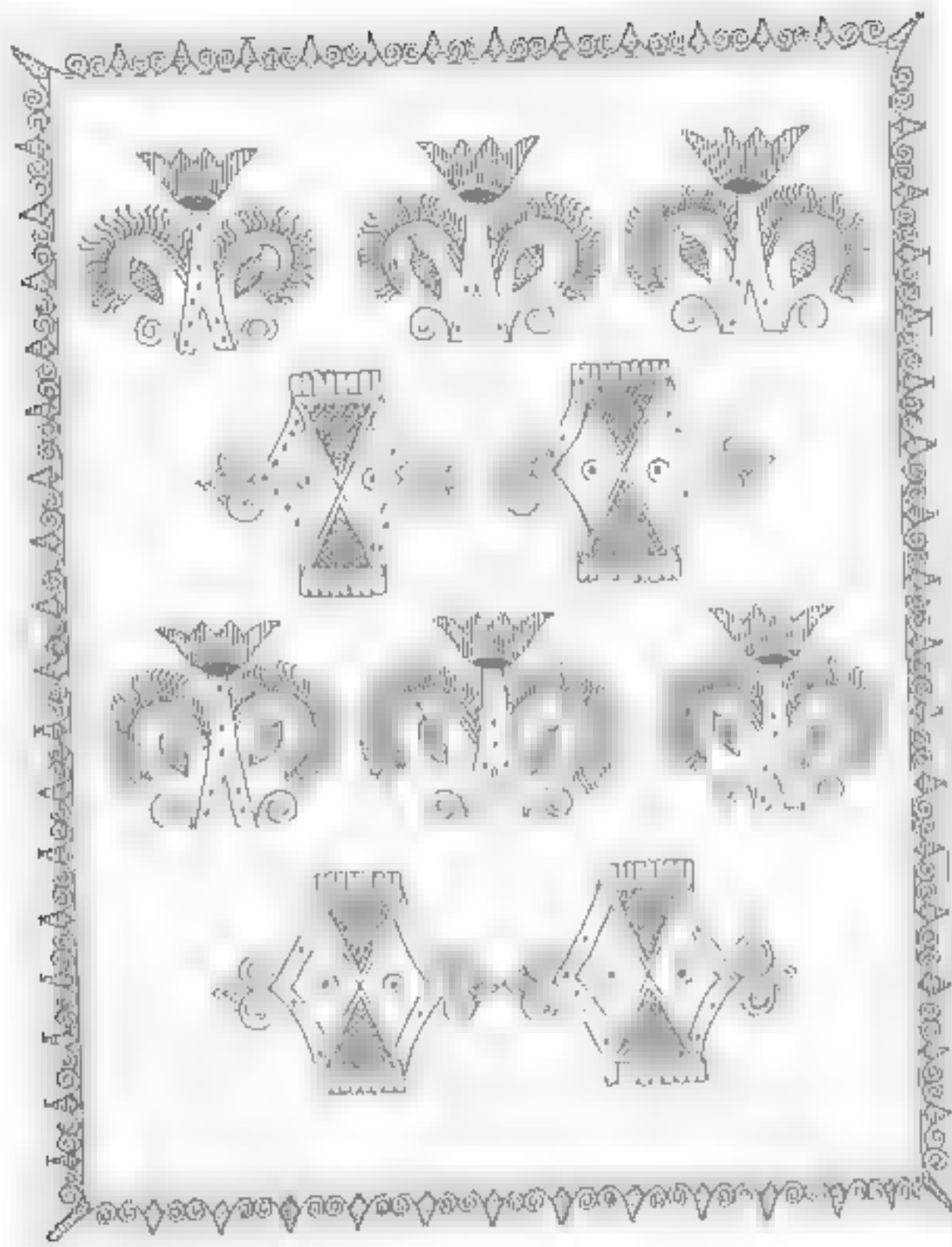


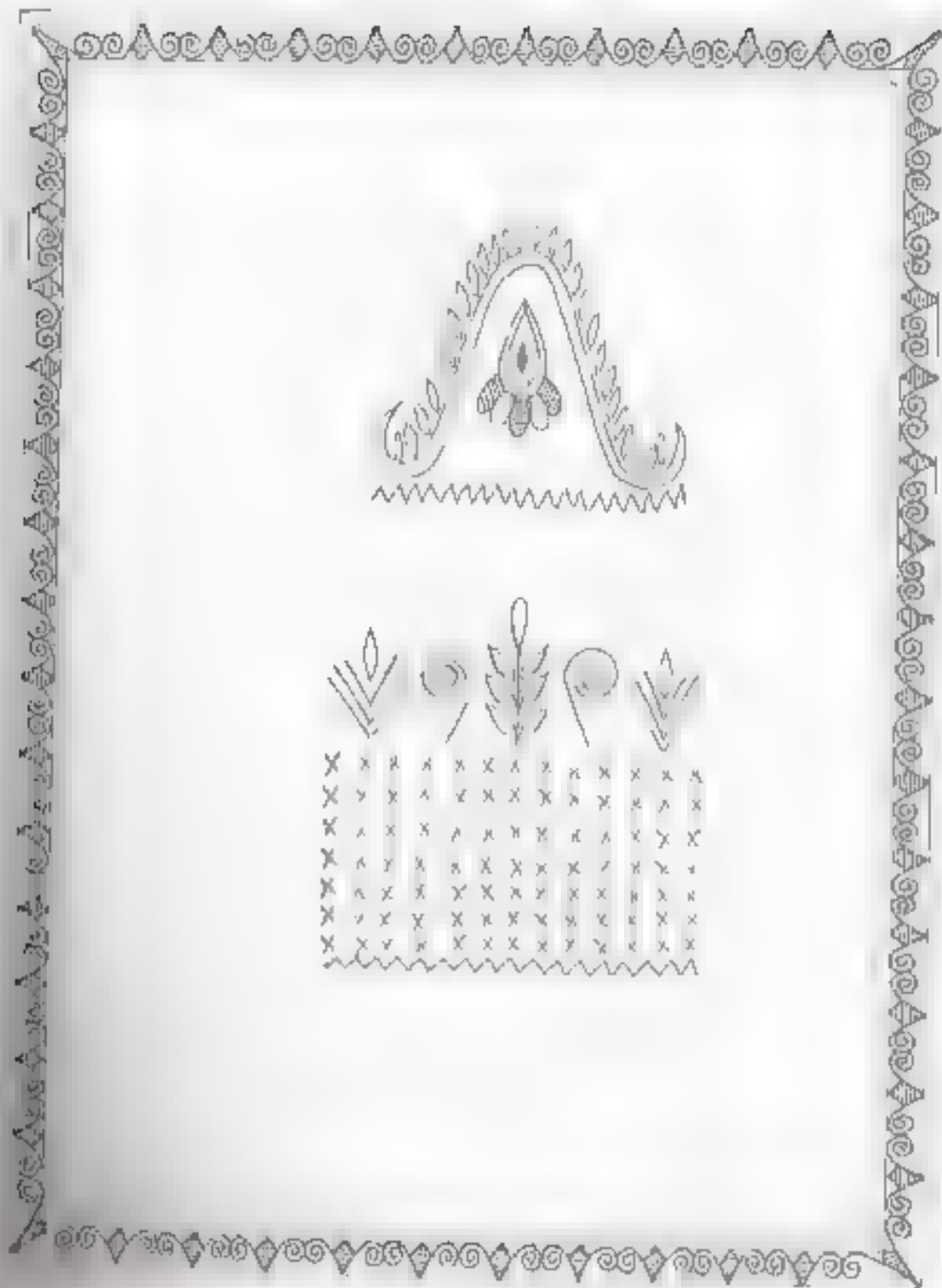




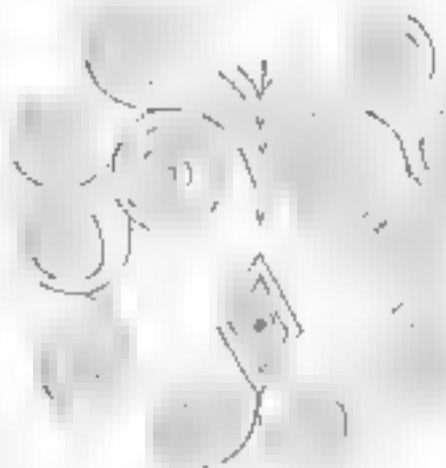


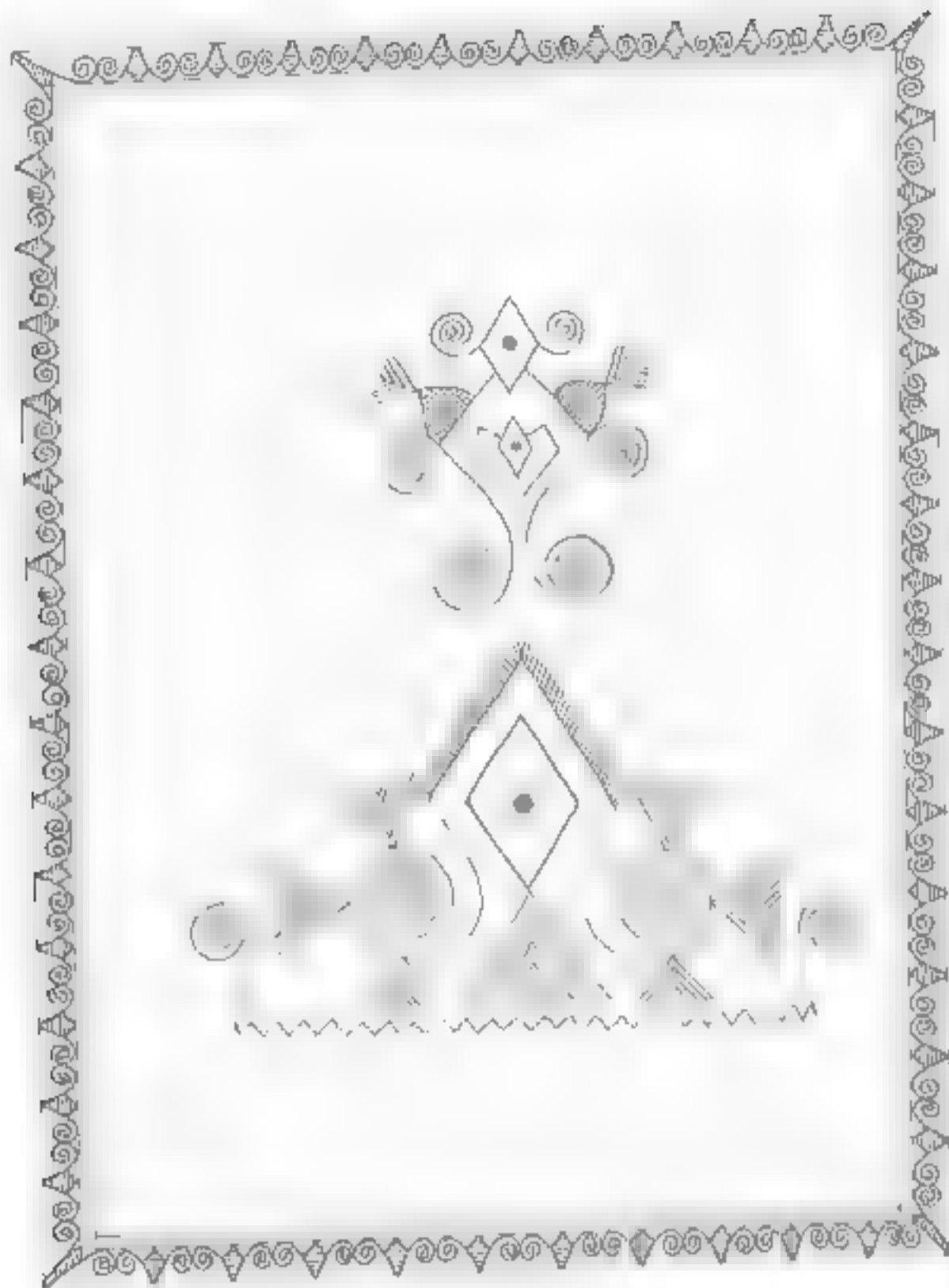


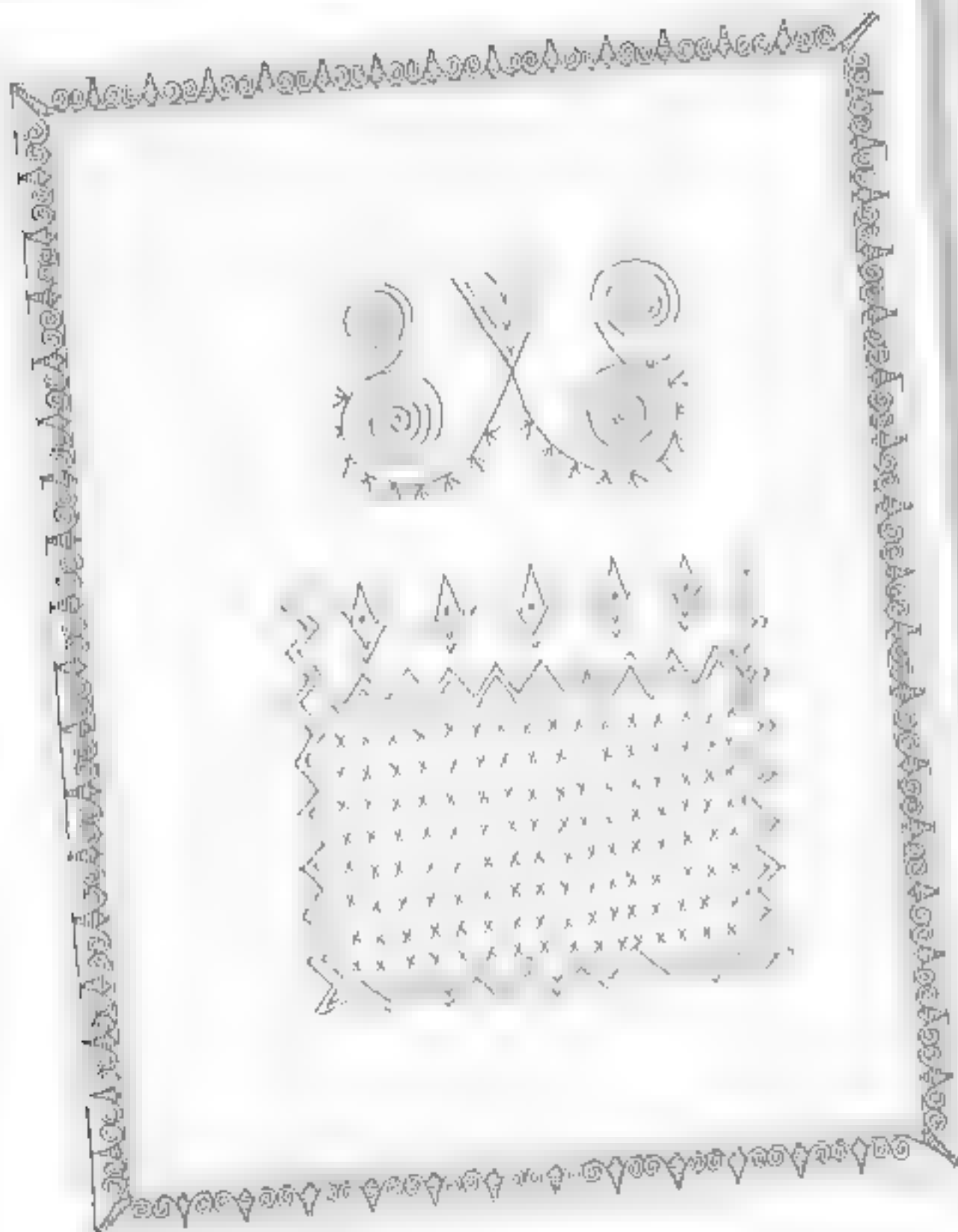


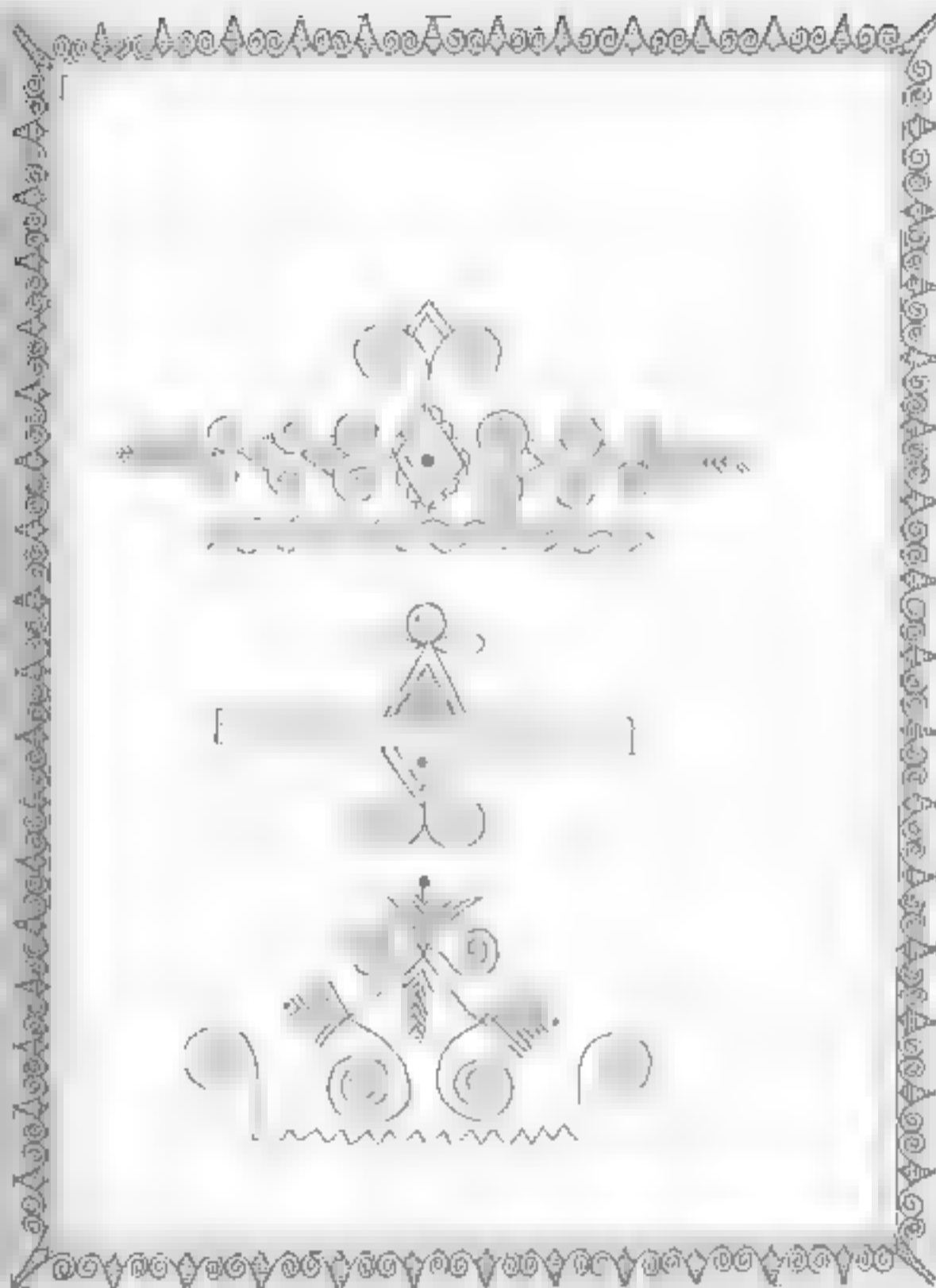




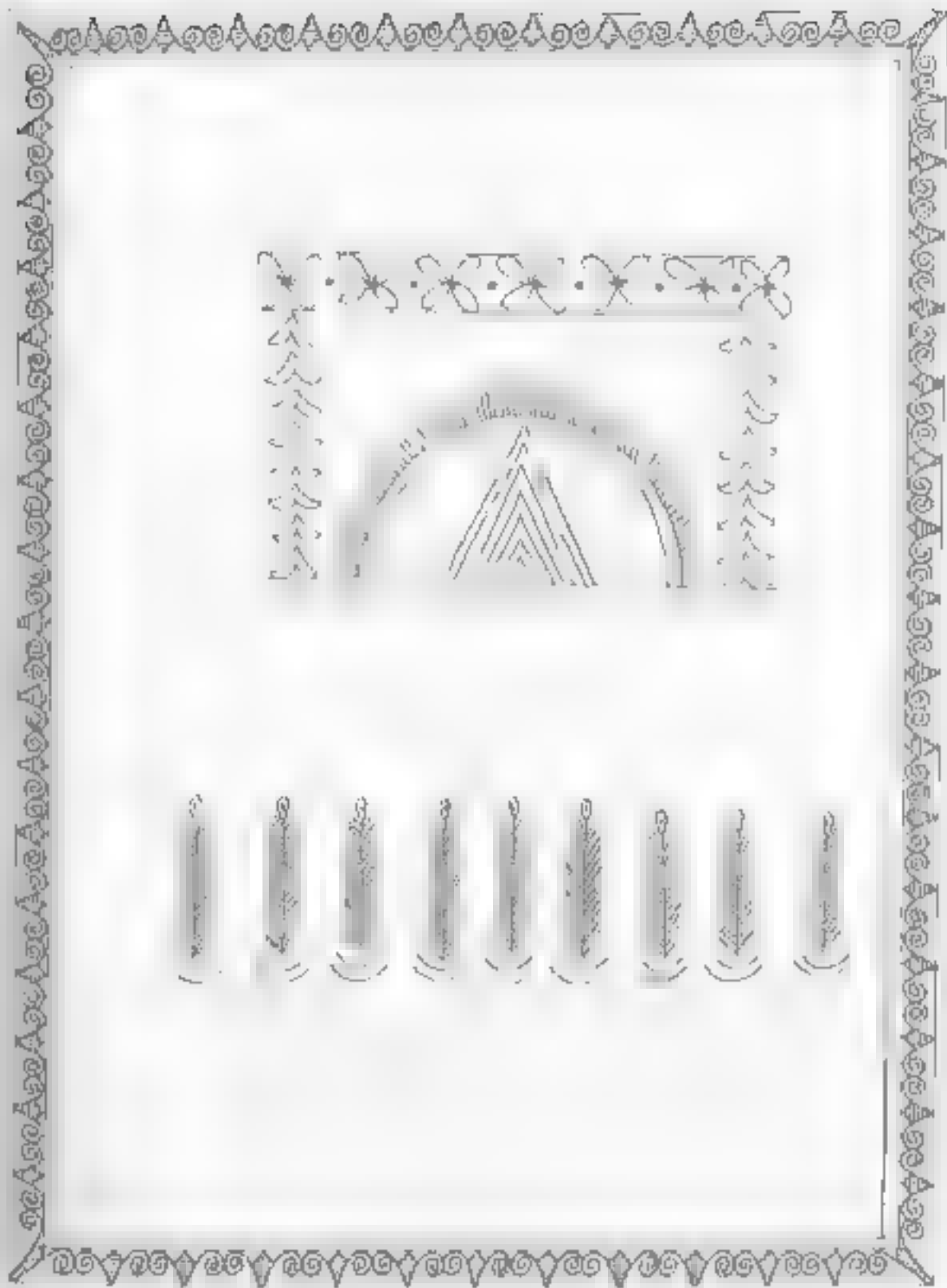


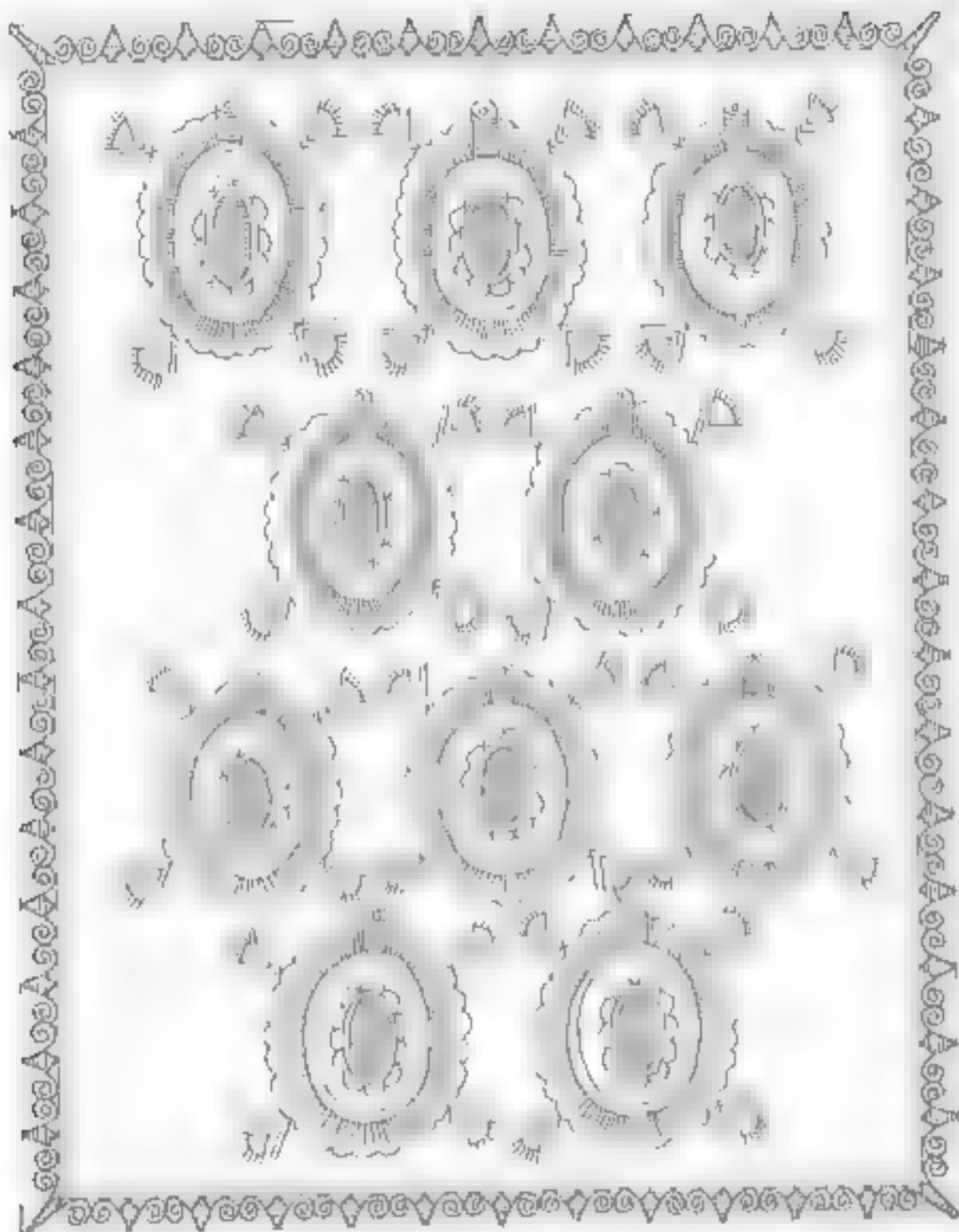




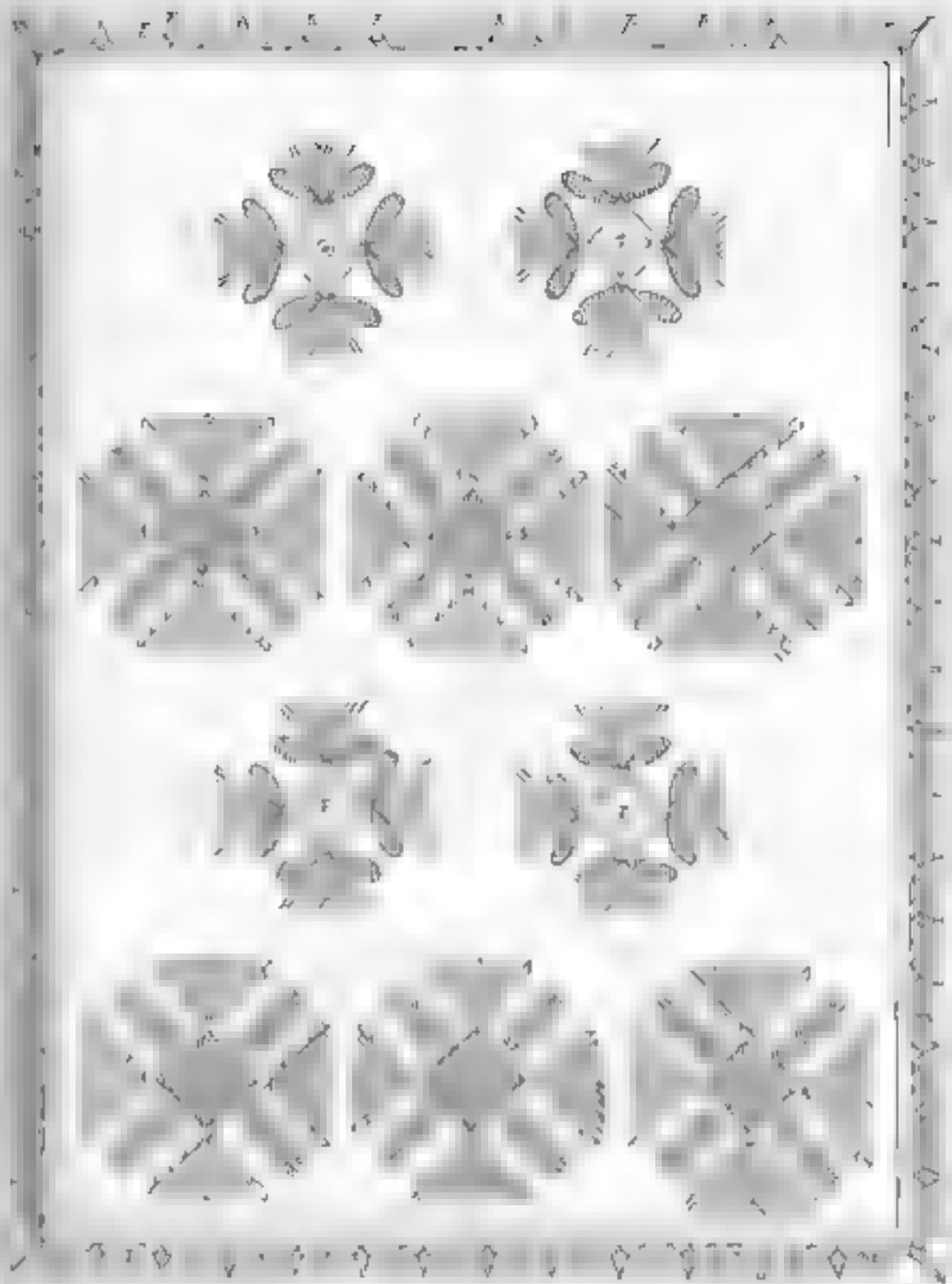


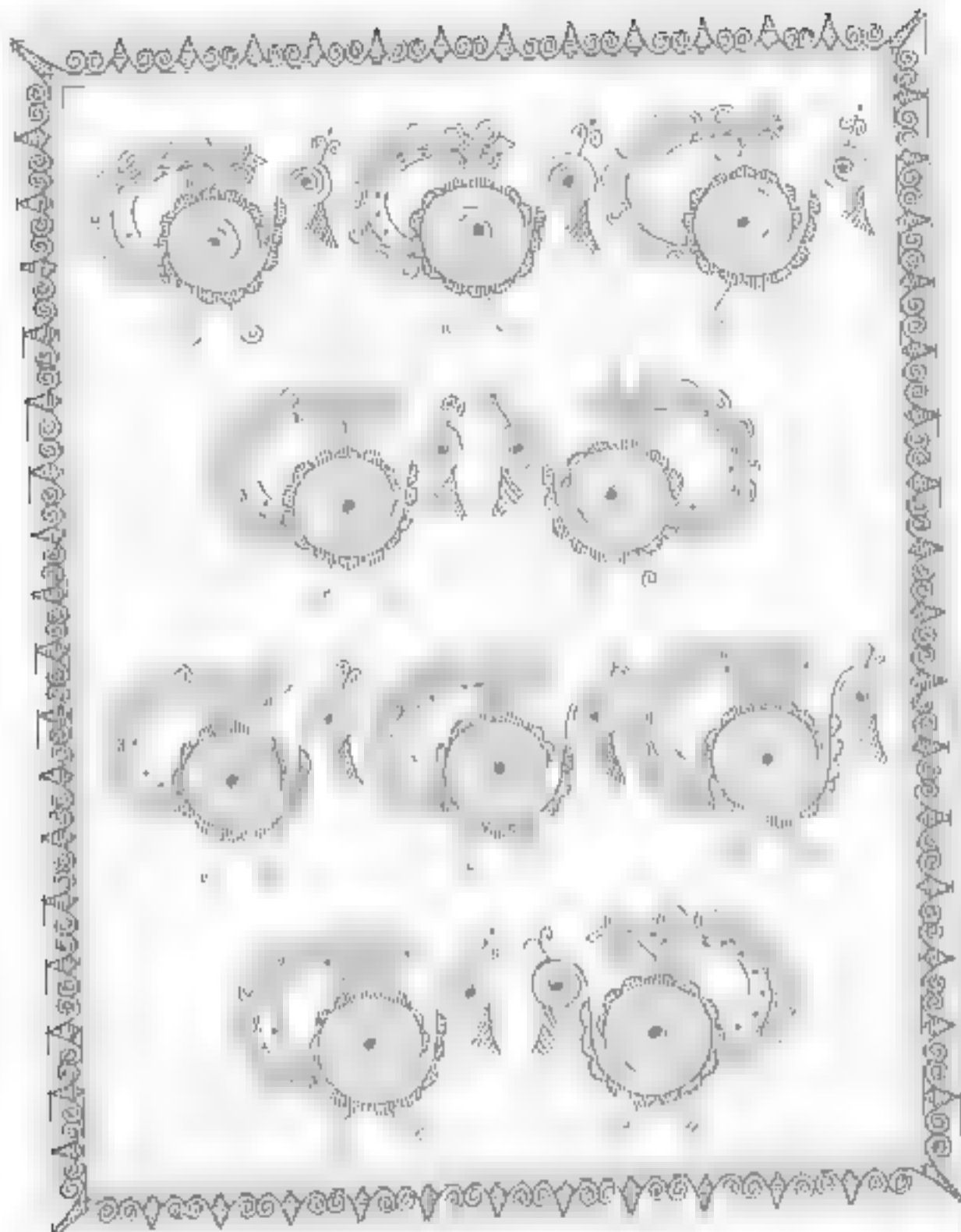


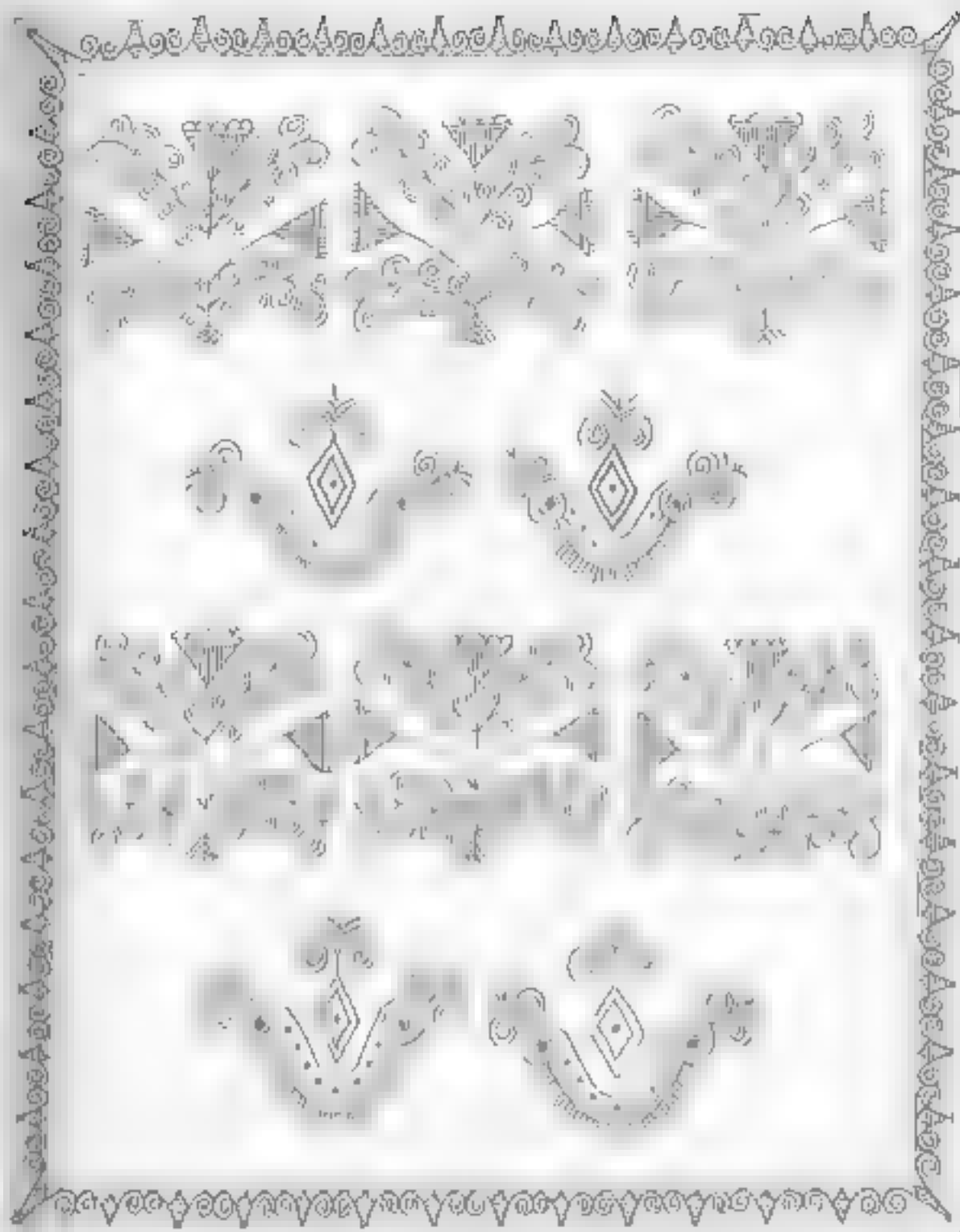


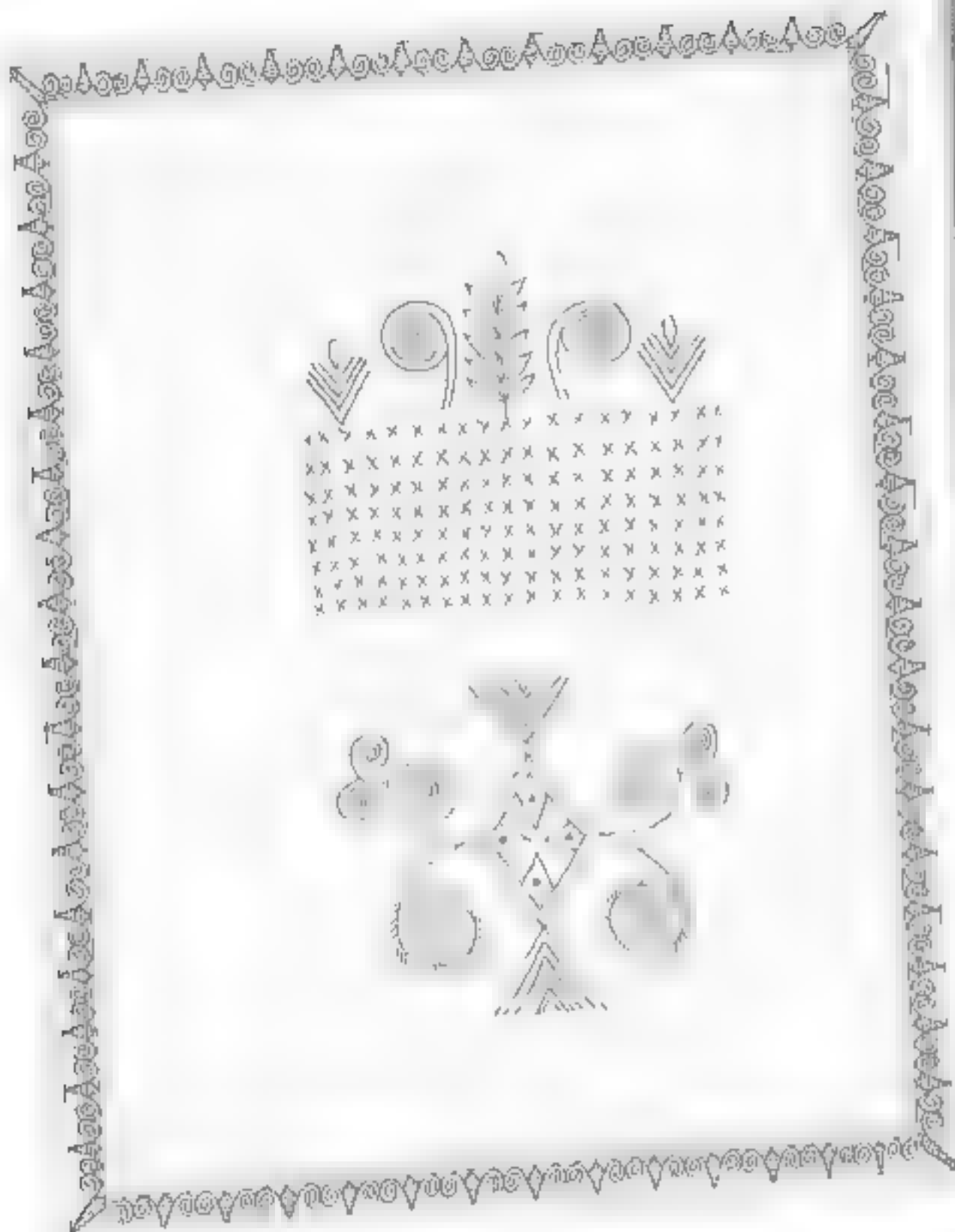


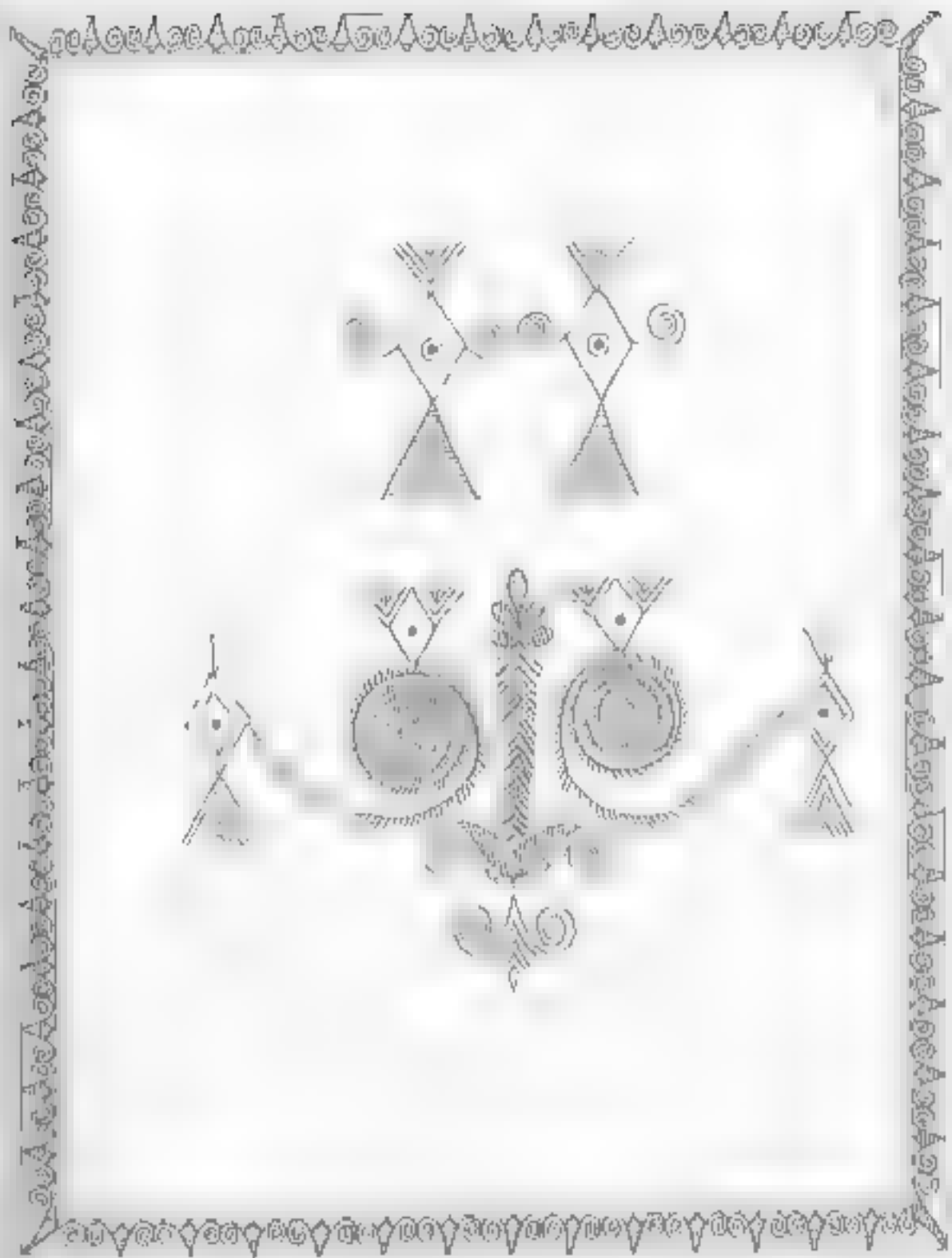
Handwritten text in a cursive script, likely a title or list of contents, running vertically along the left margin.

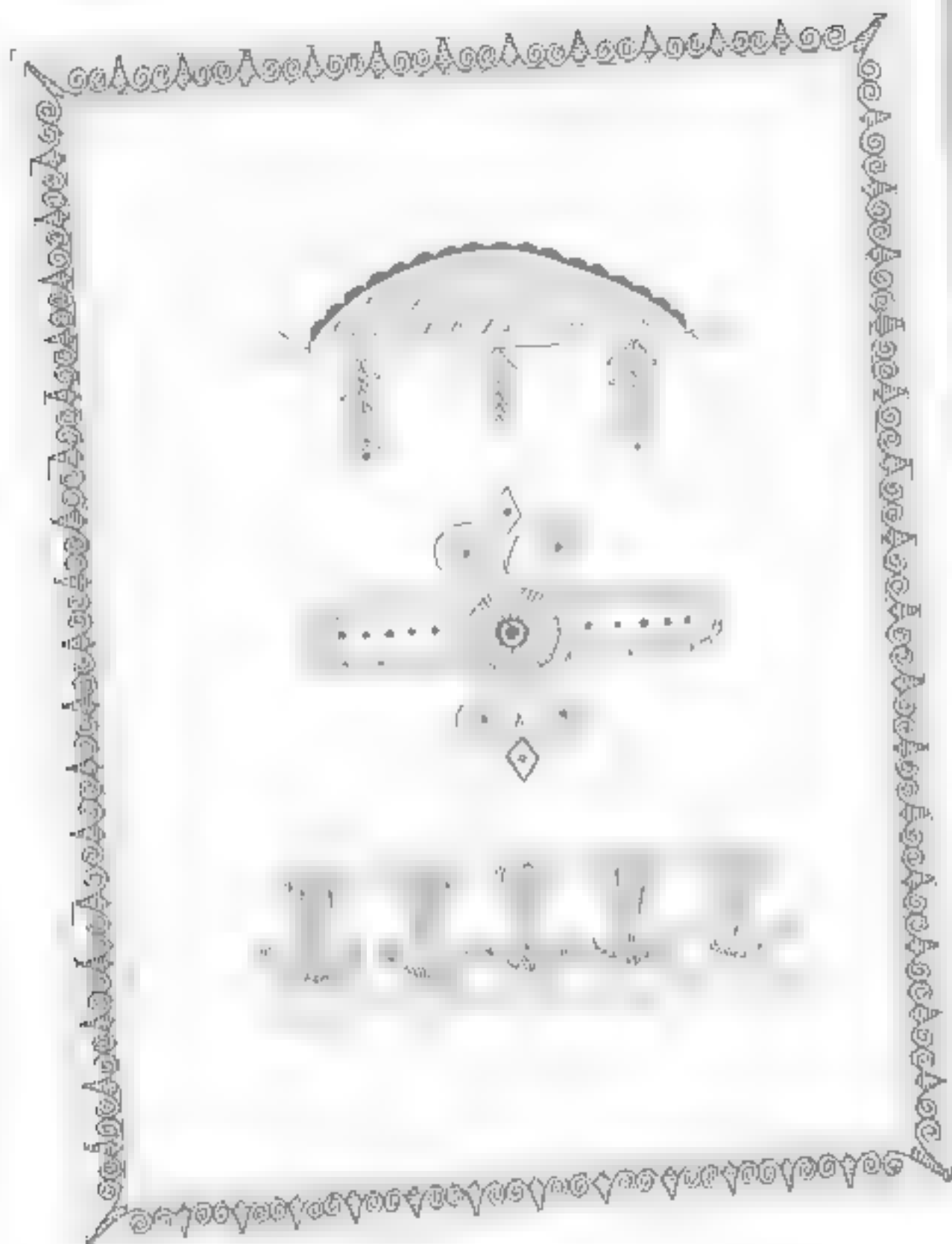


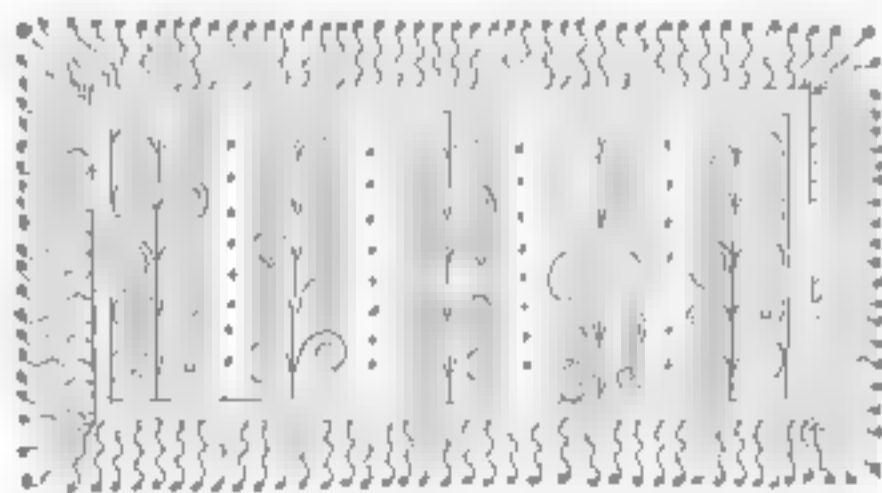
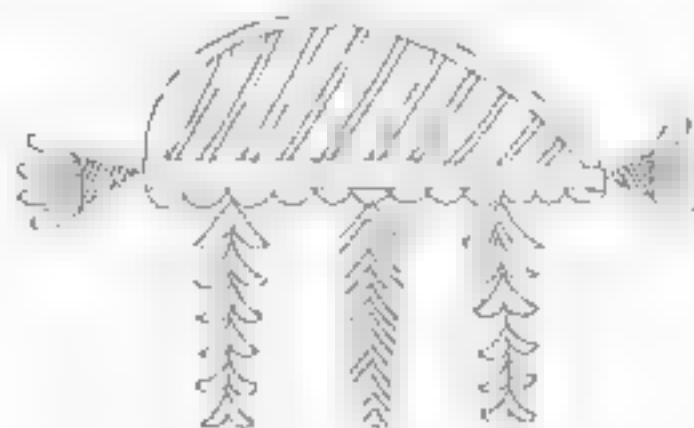


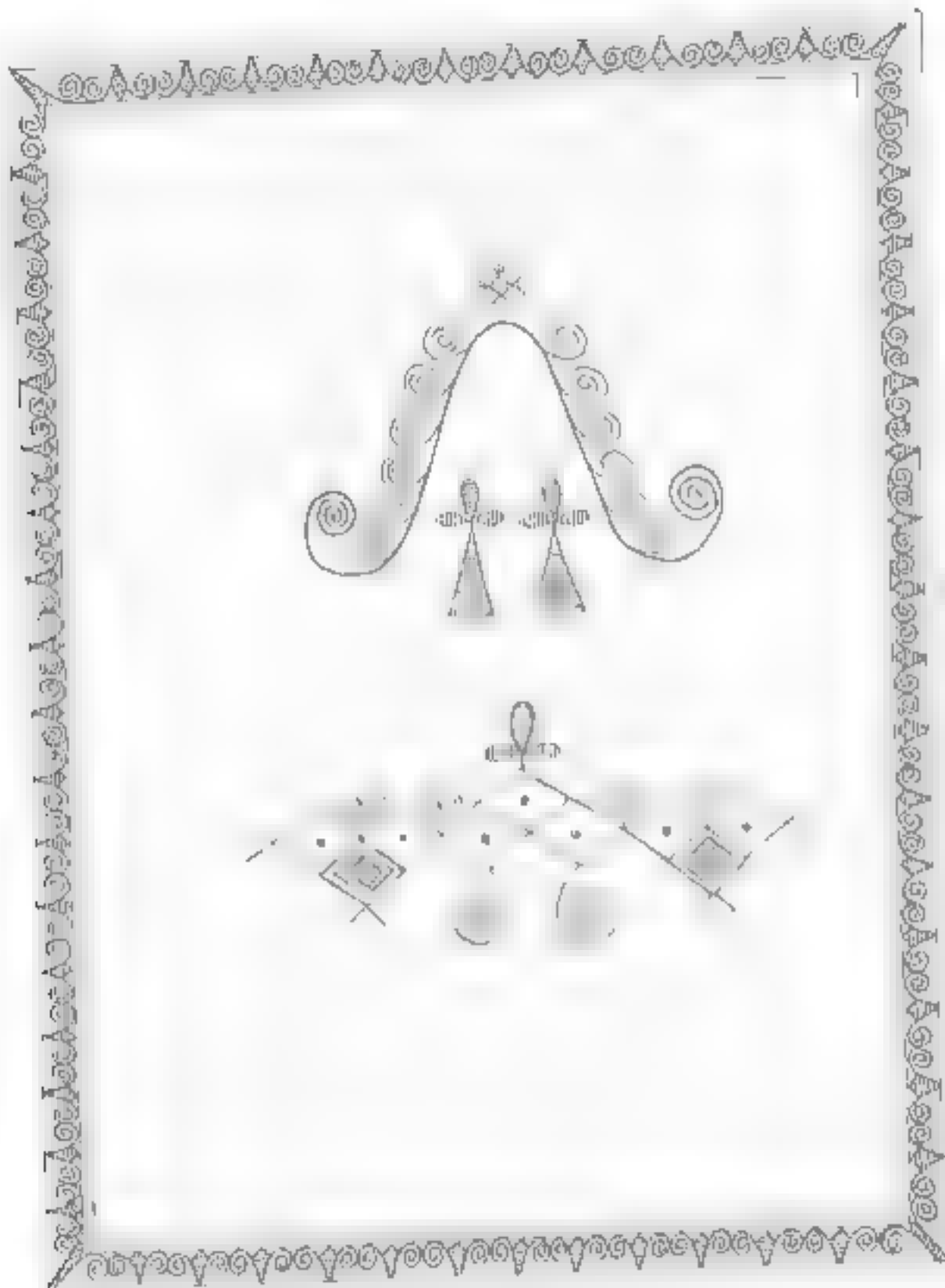


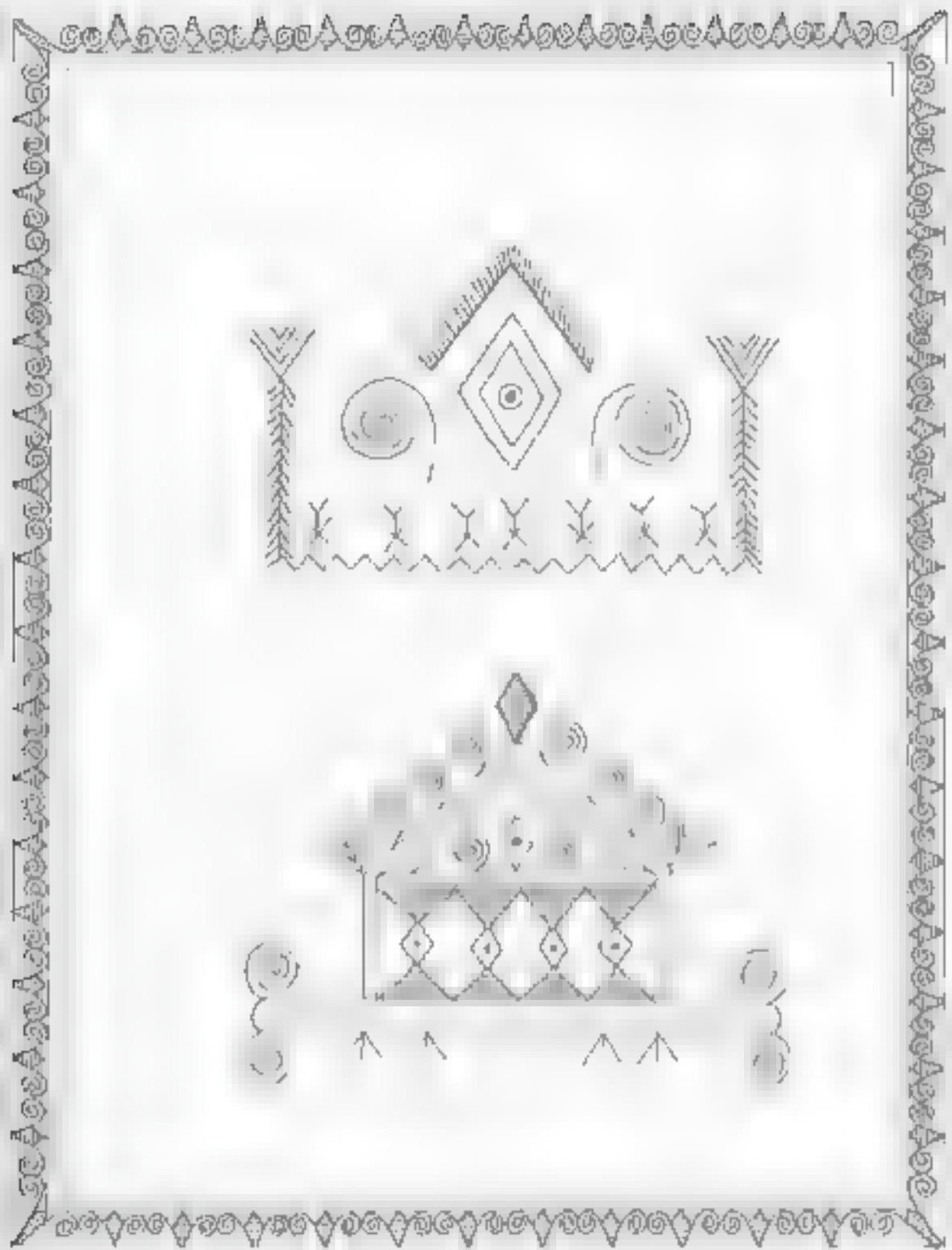


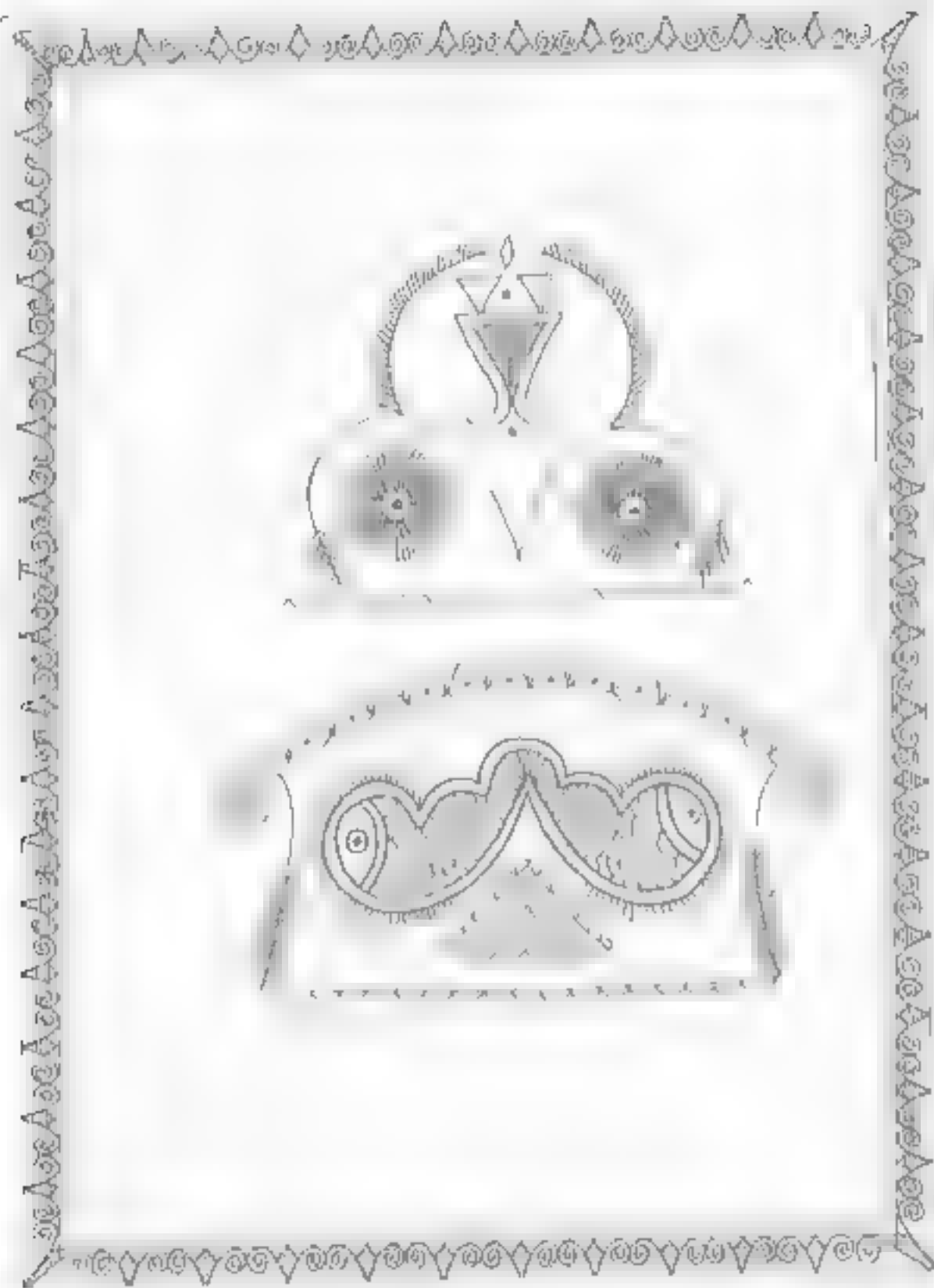








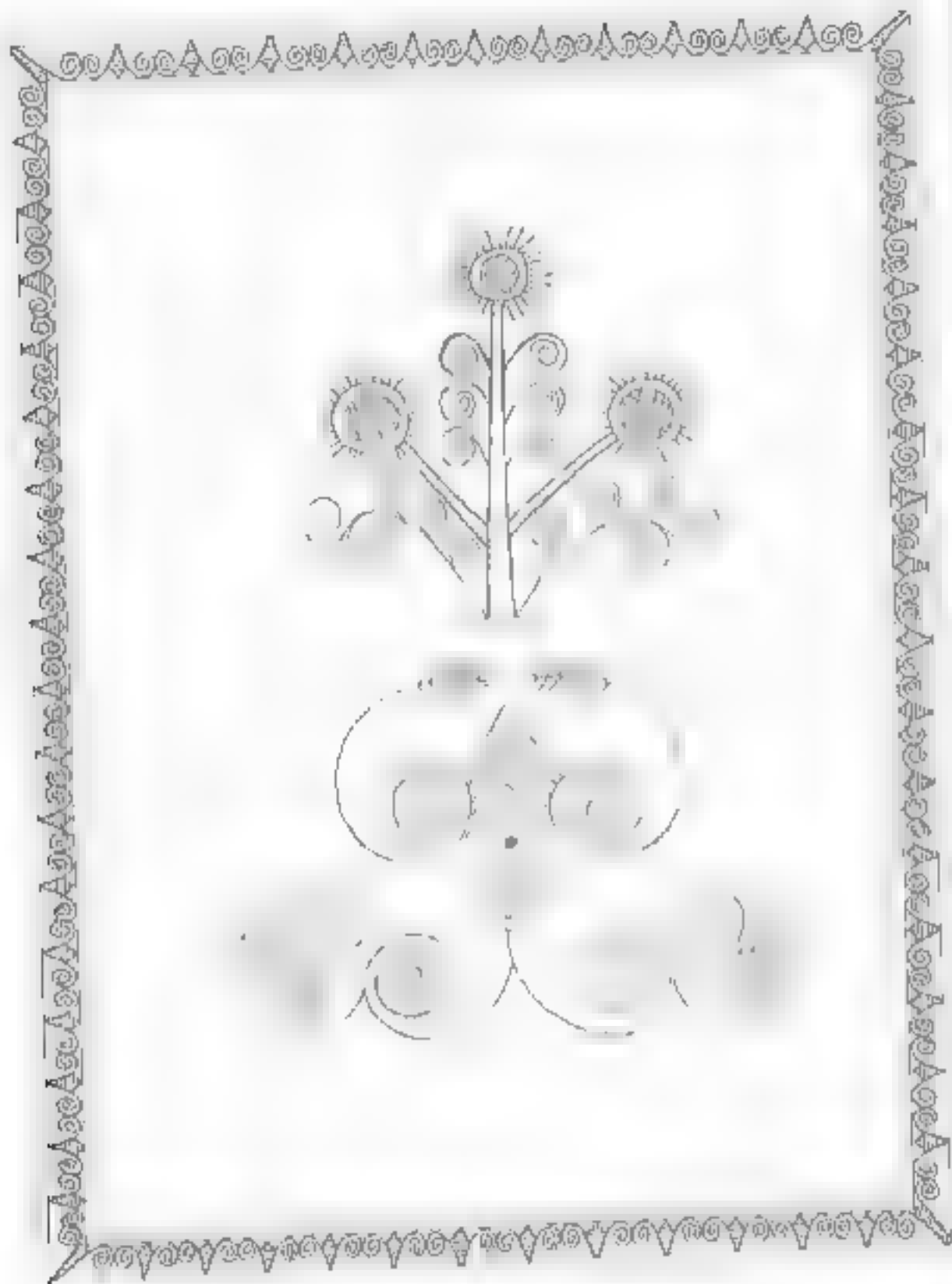


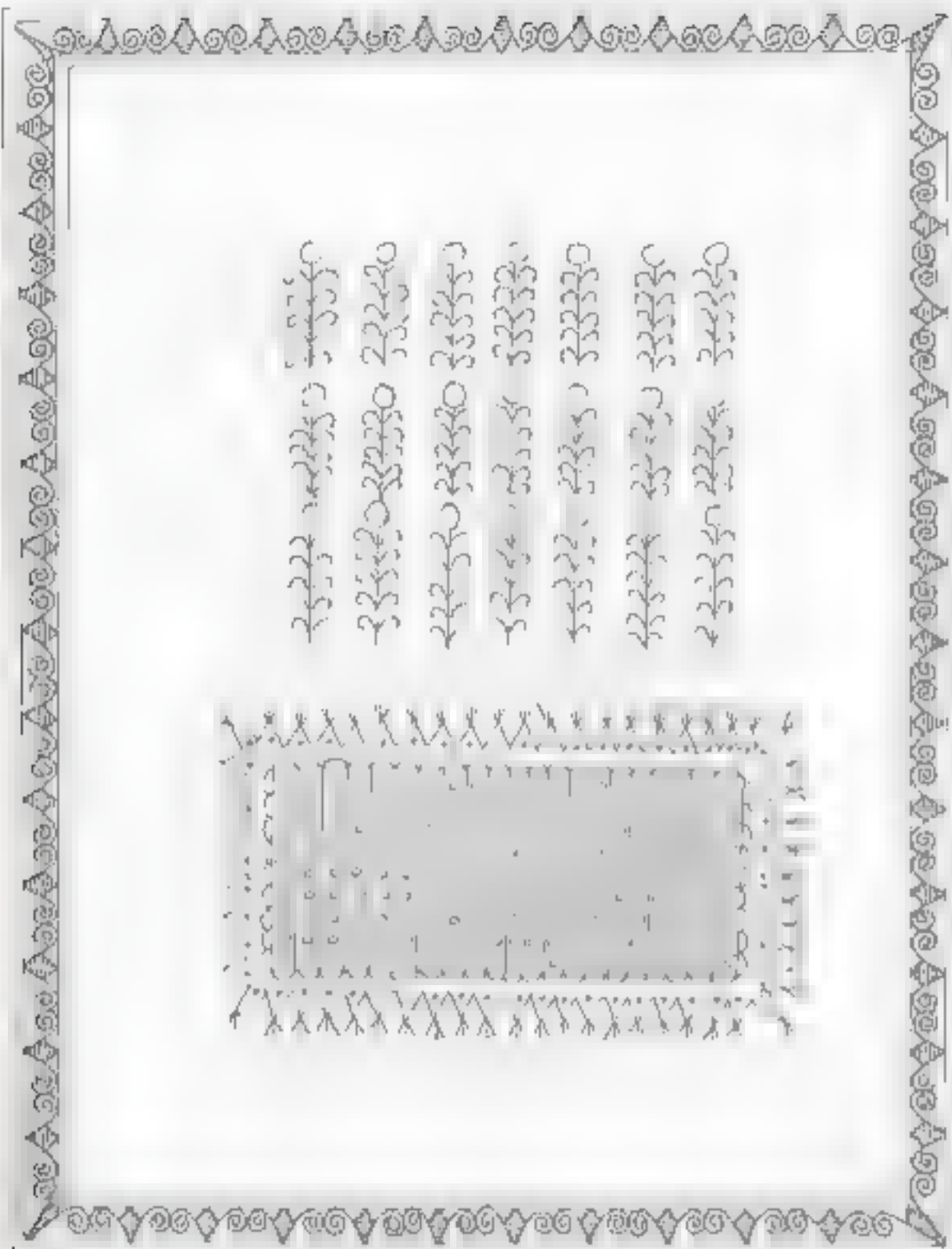






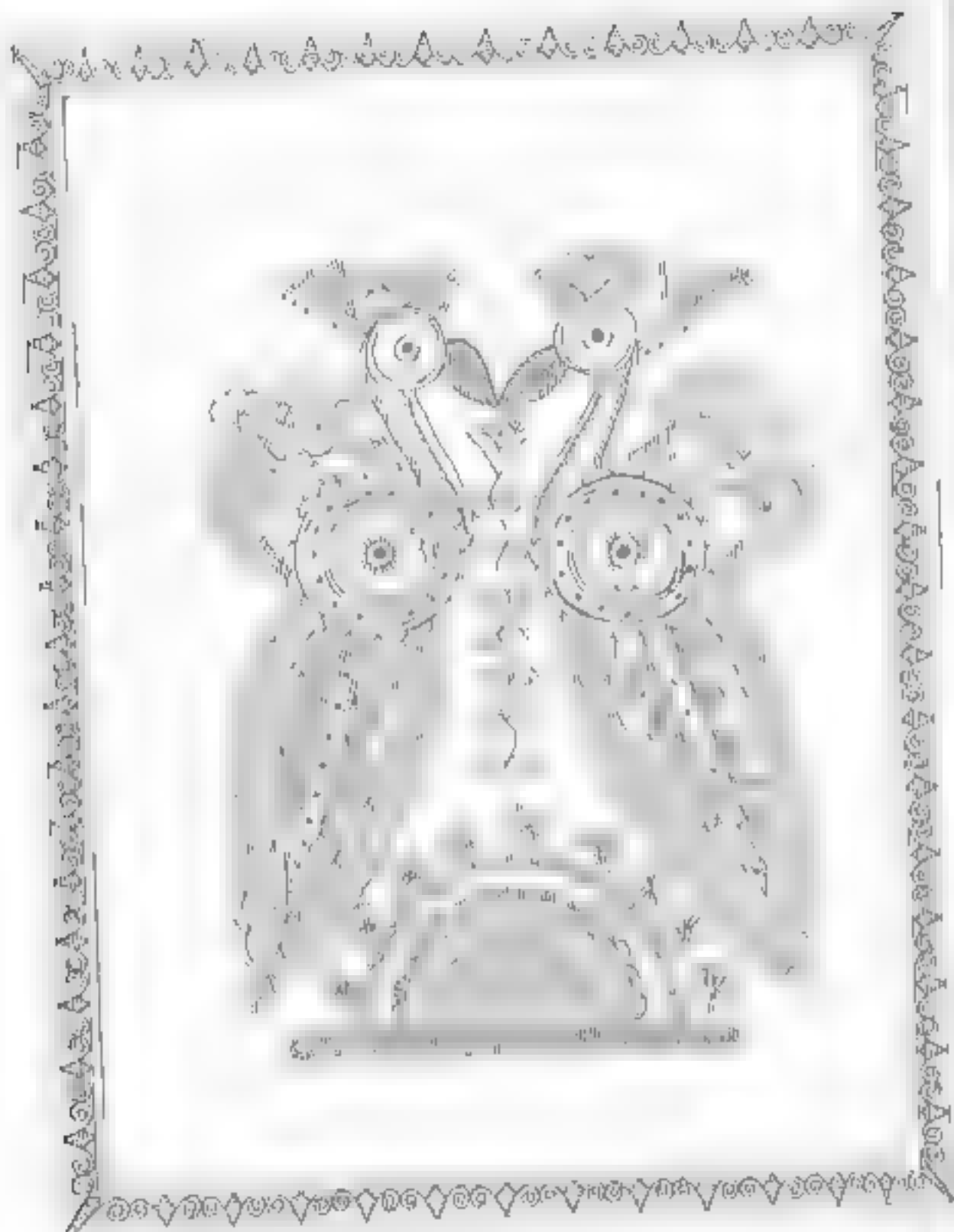


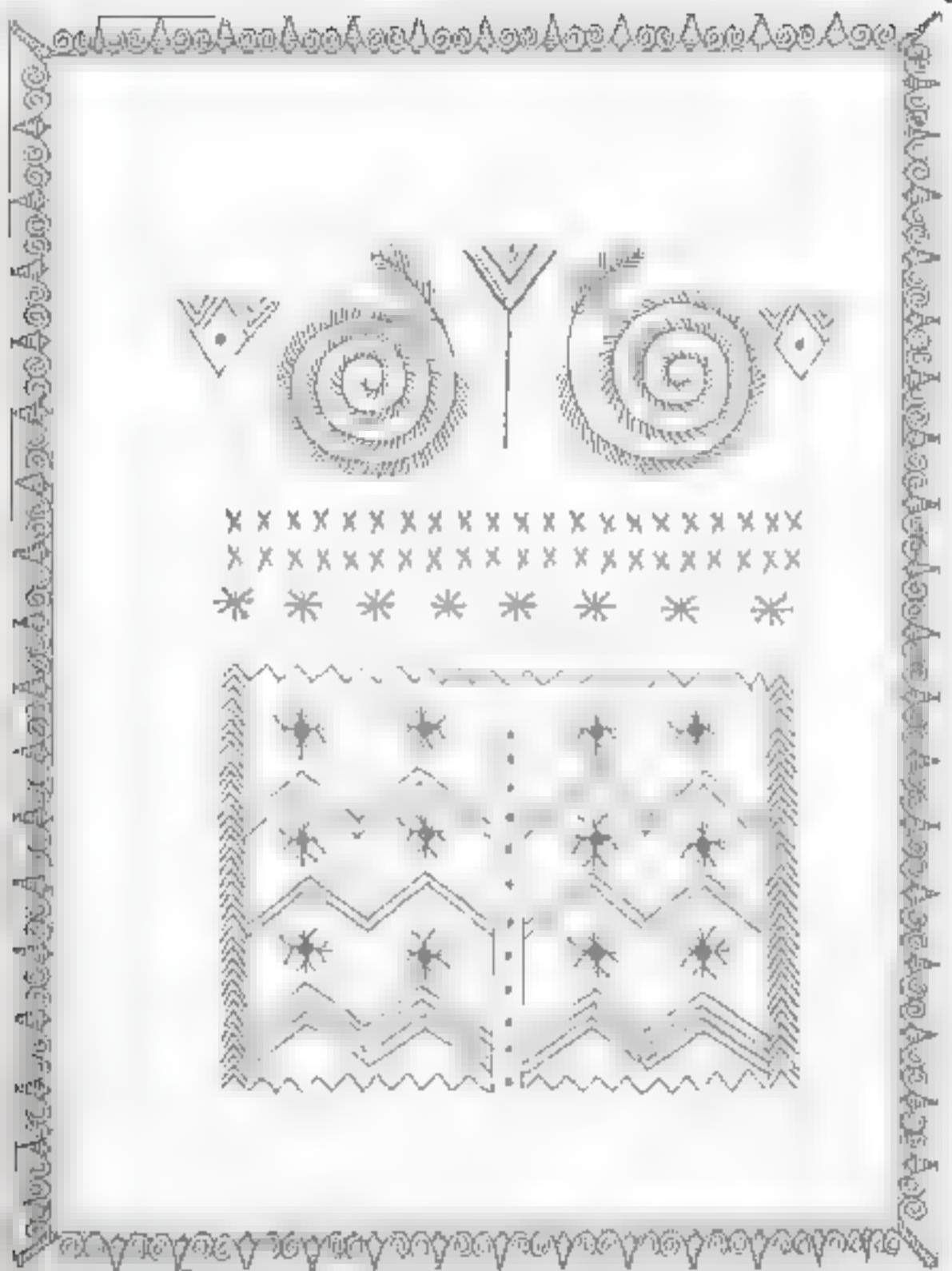




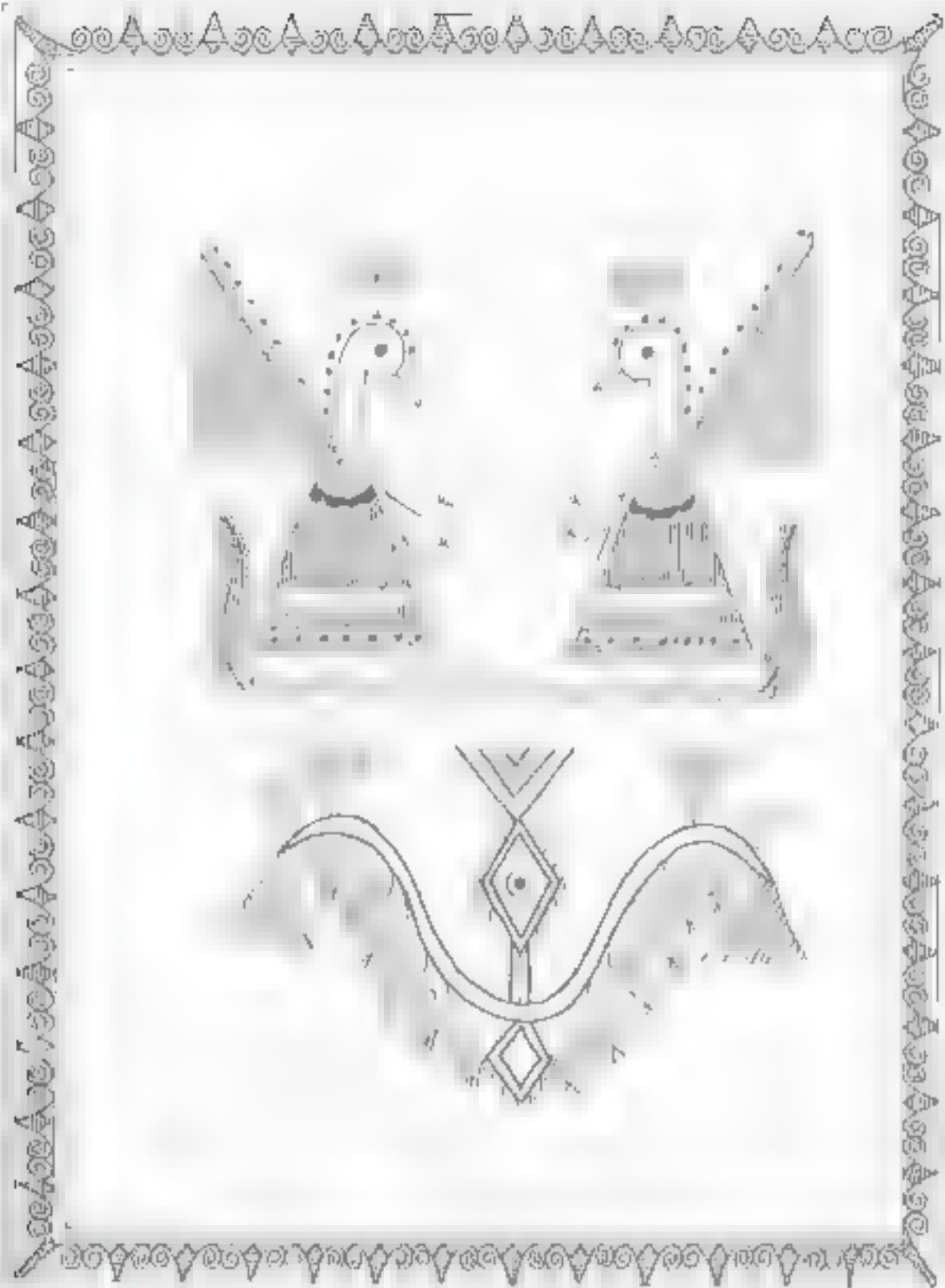
Handwritten text in a stylized script, possibly a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in several lines, with some words appearing to be repeated or emphasized. The script is dense and difficult to decipher without a key.





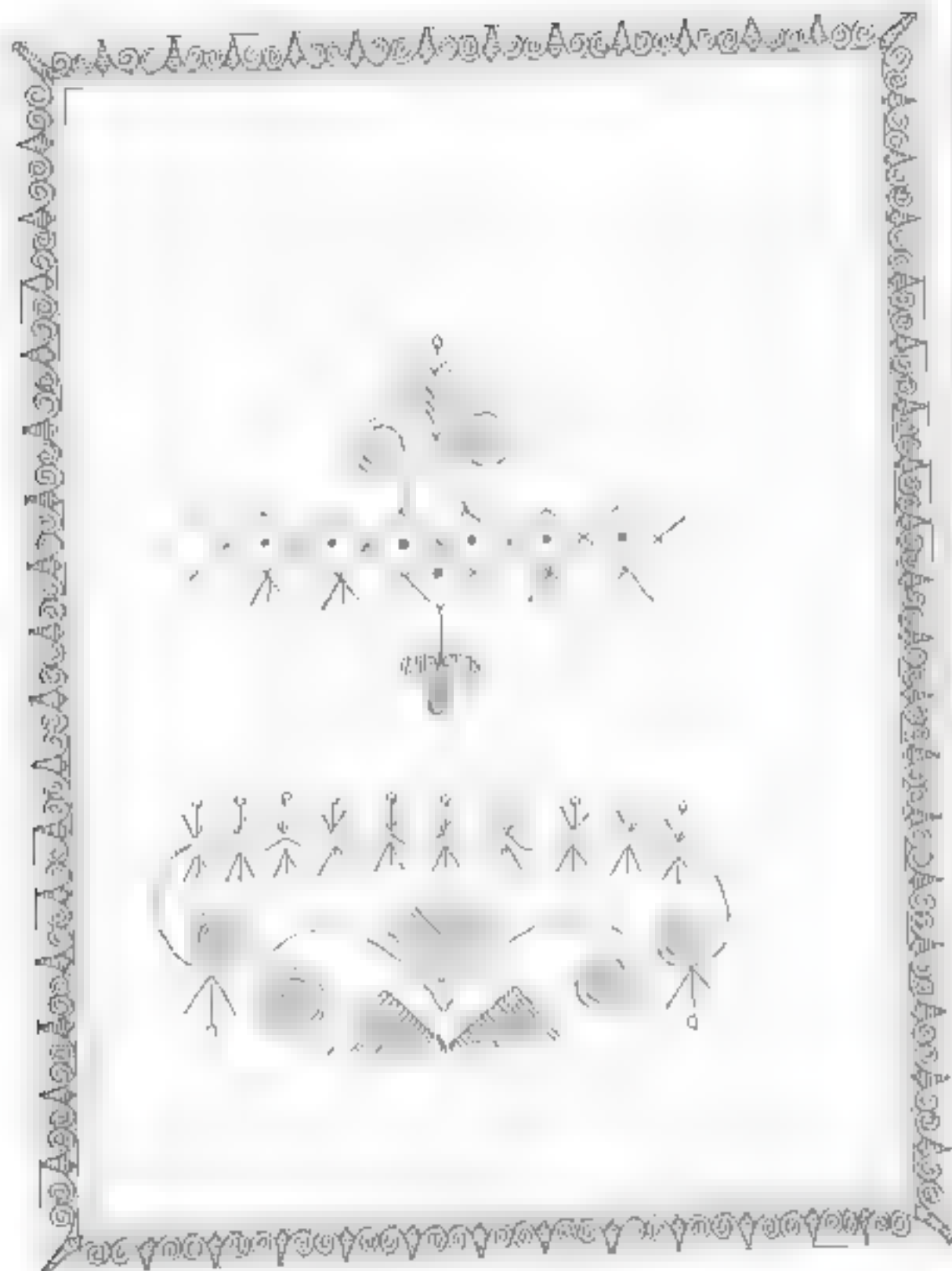


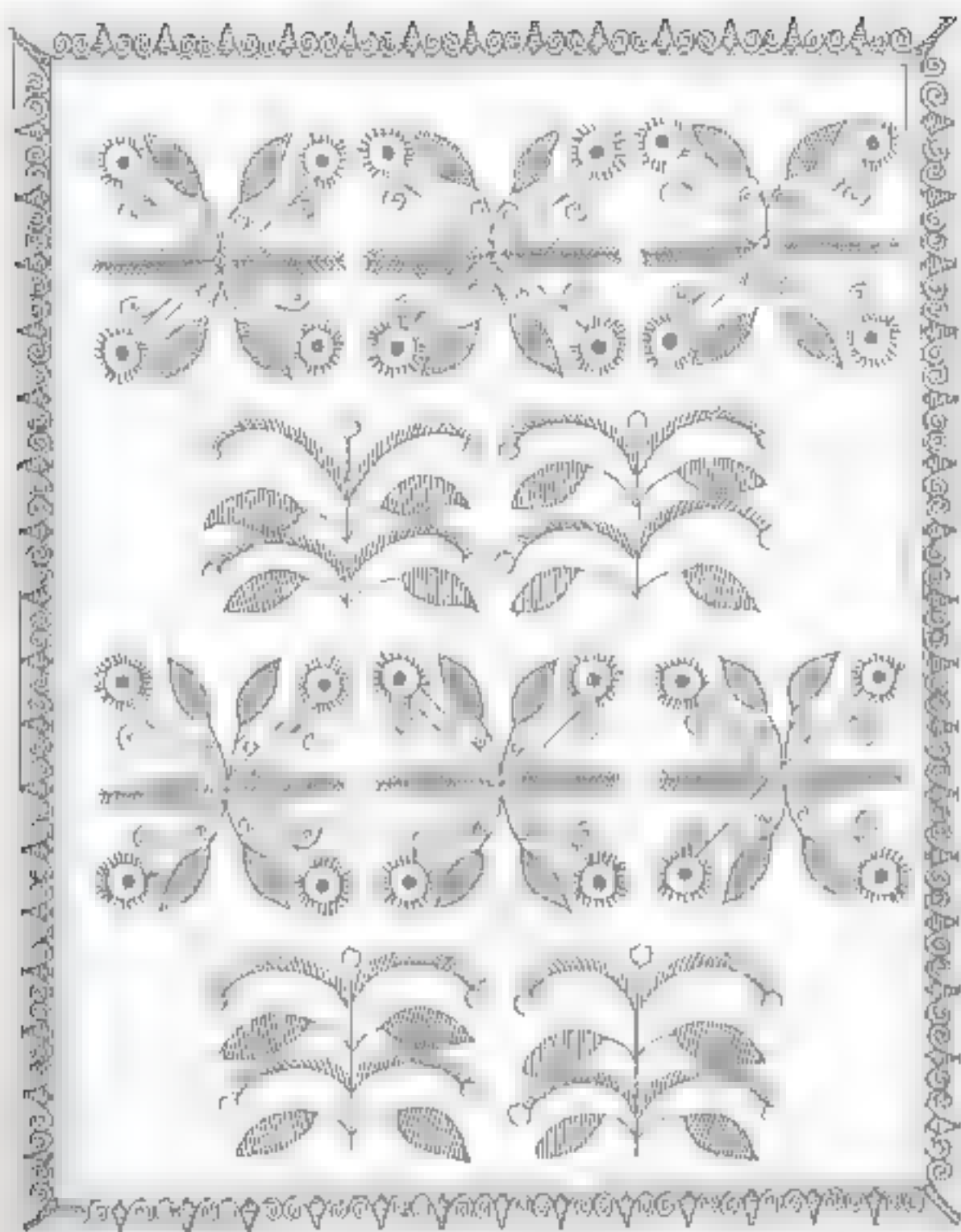




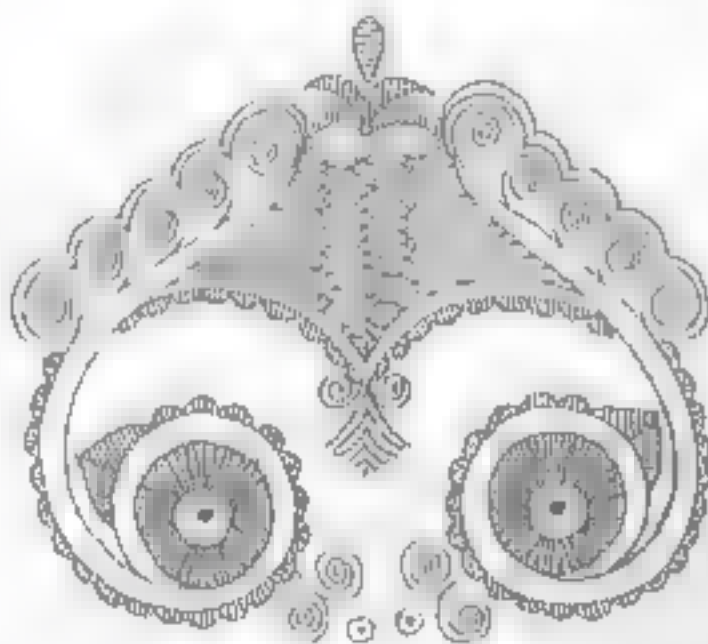
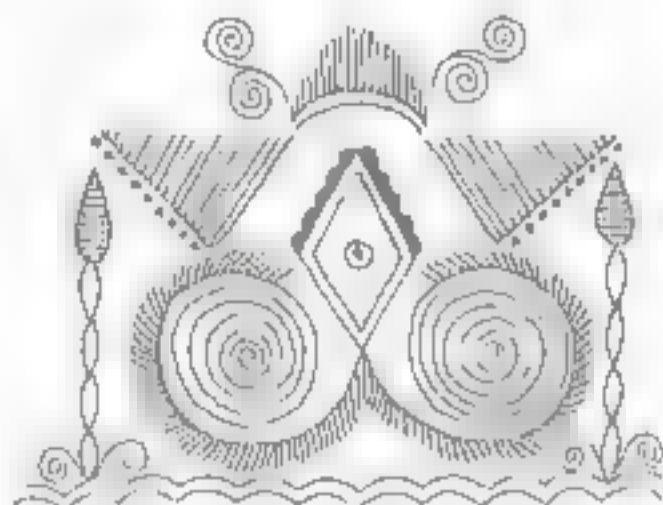


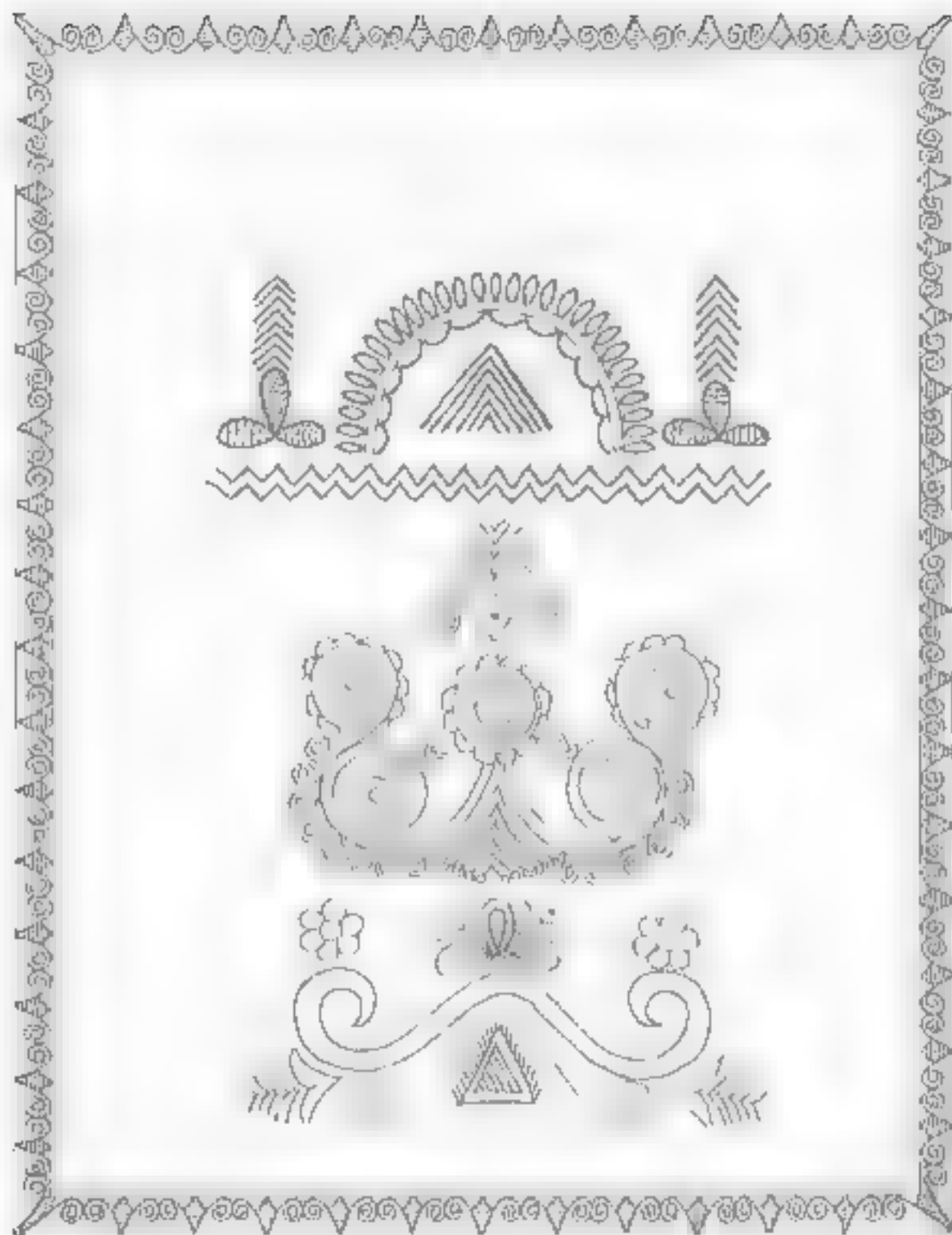


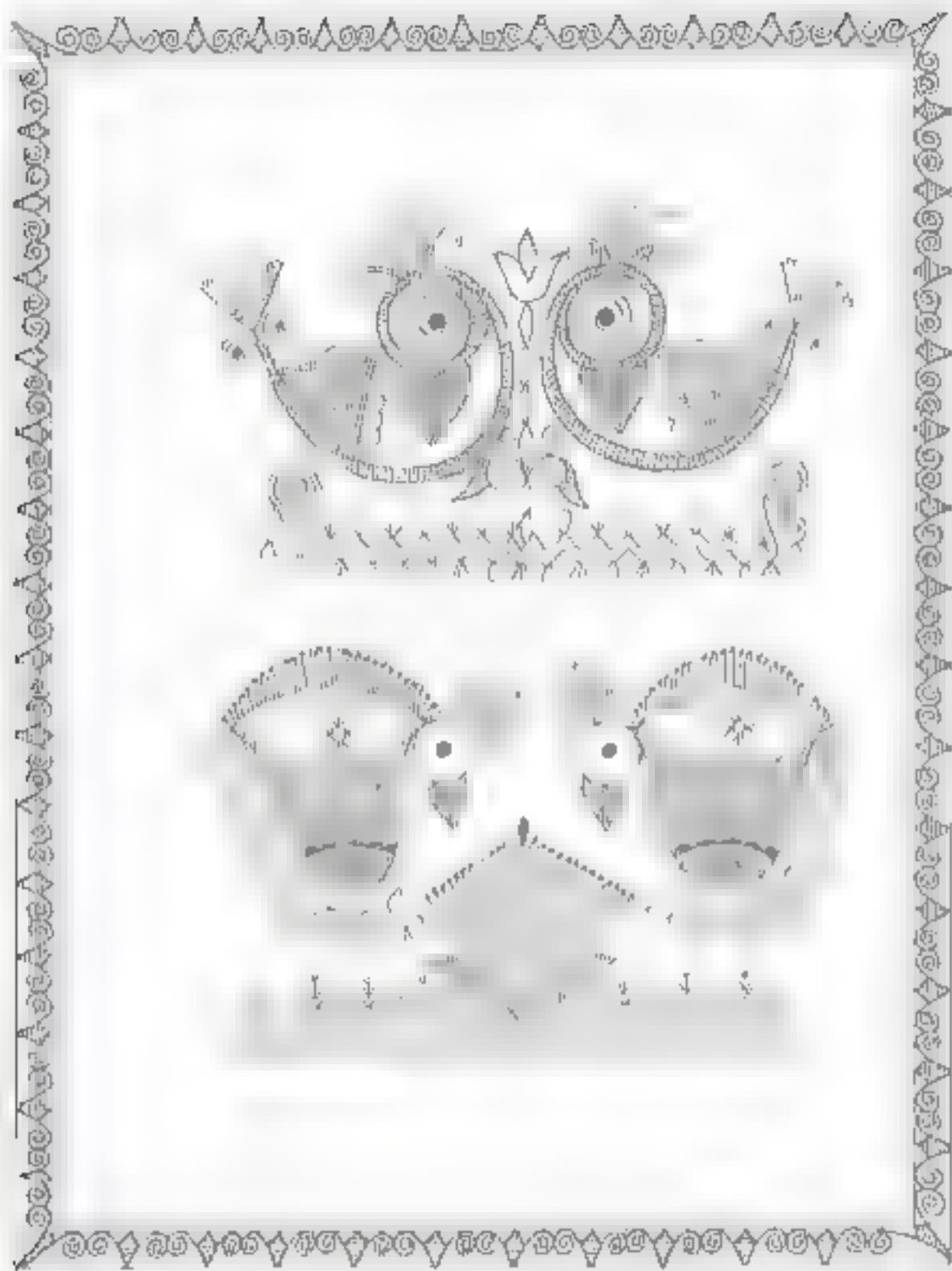




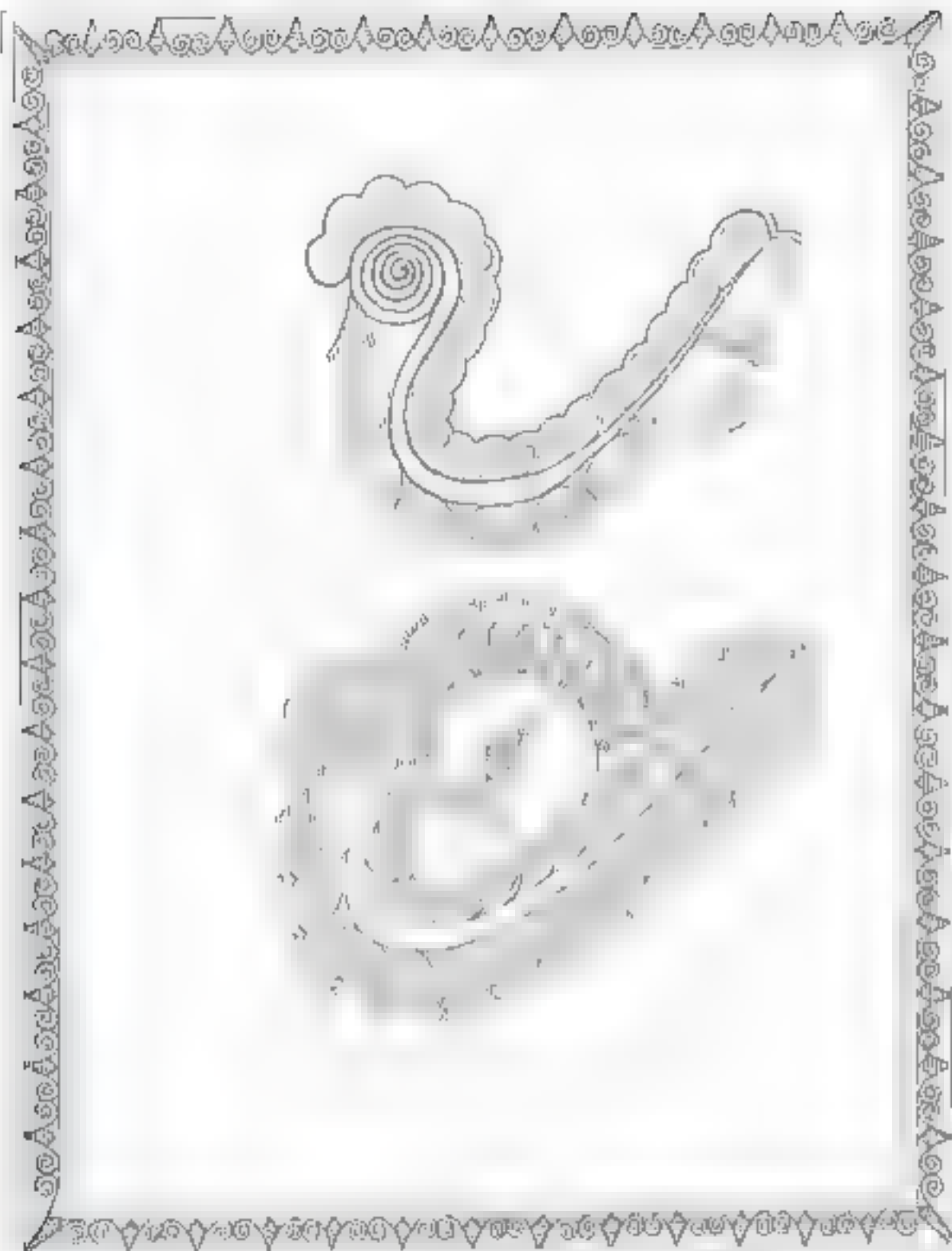




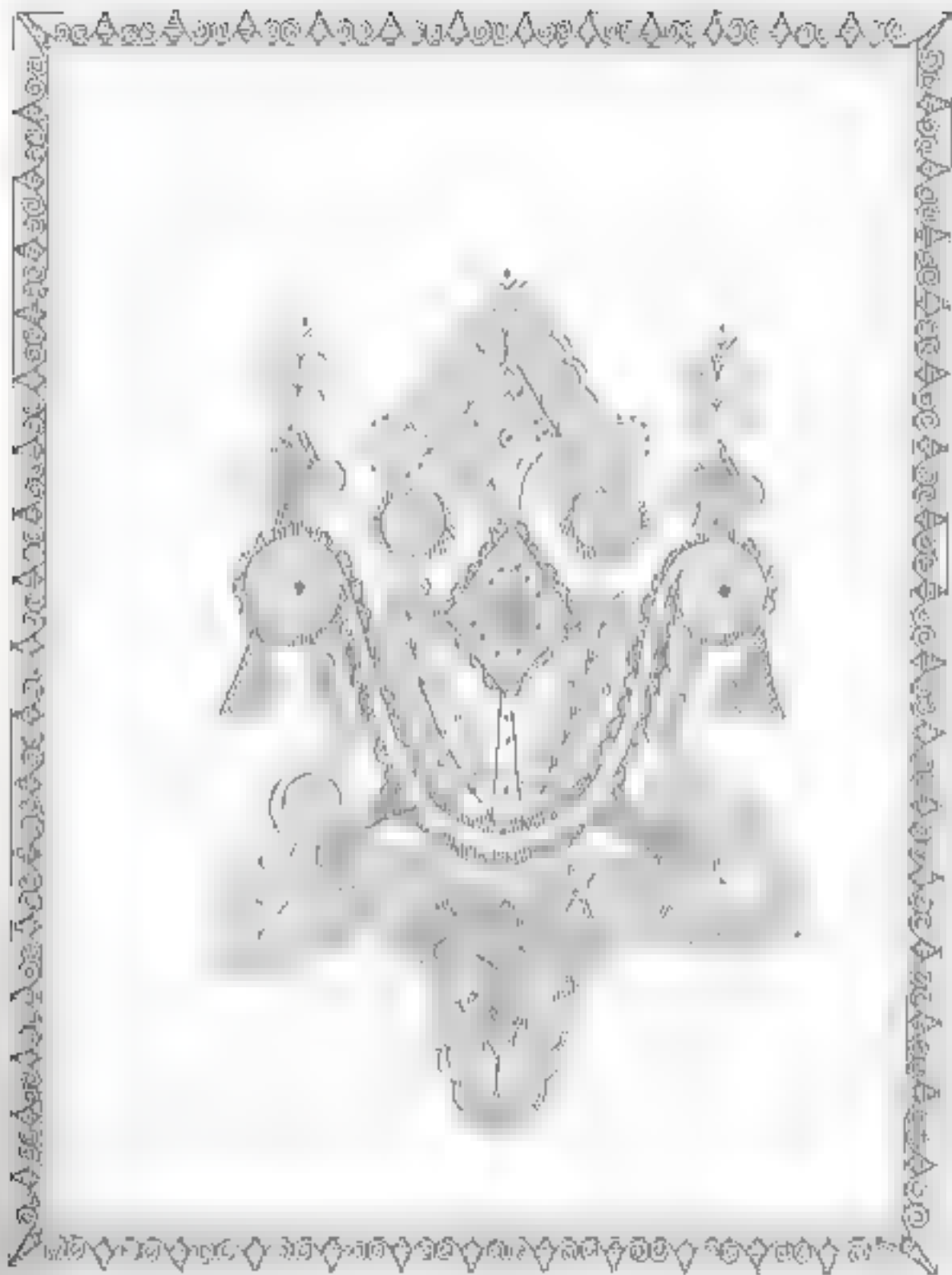


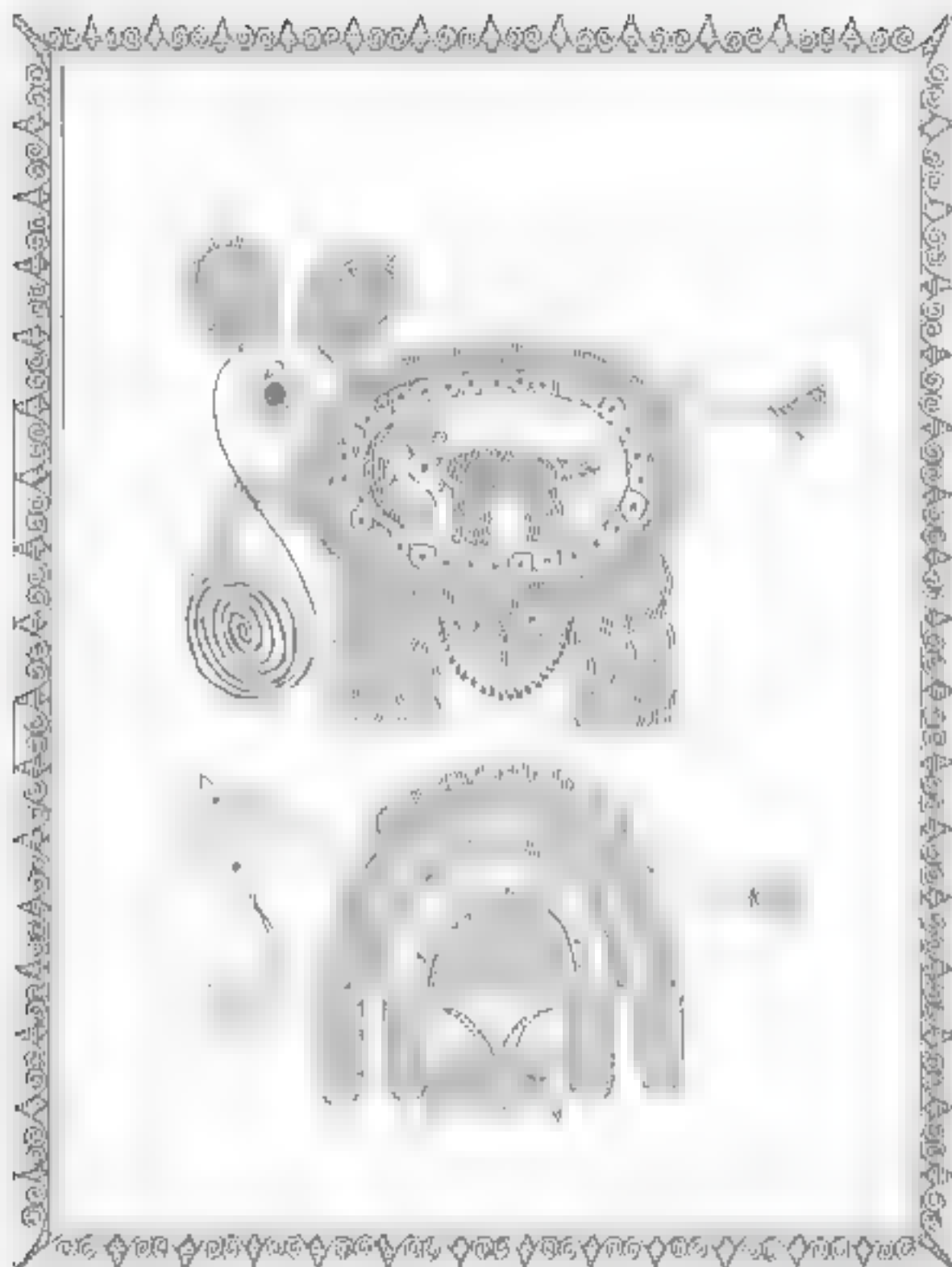


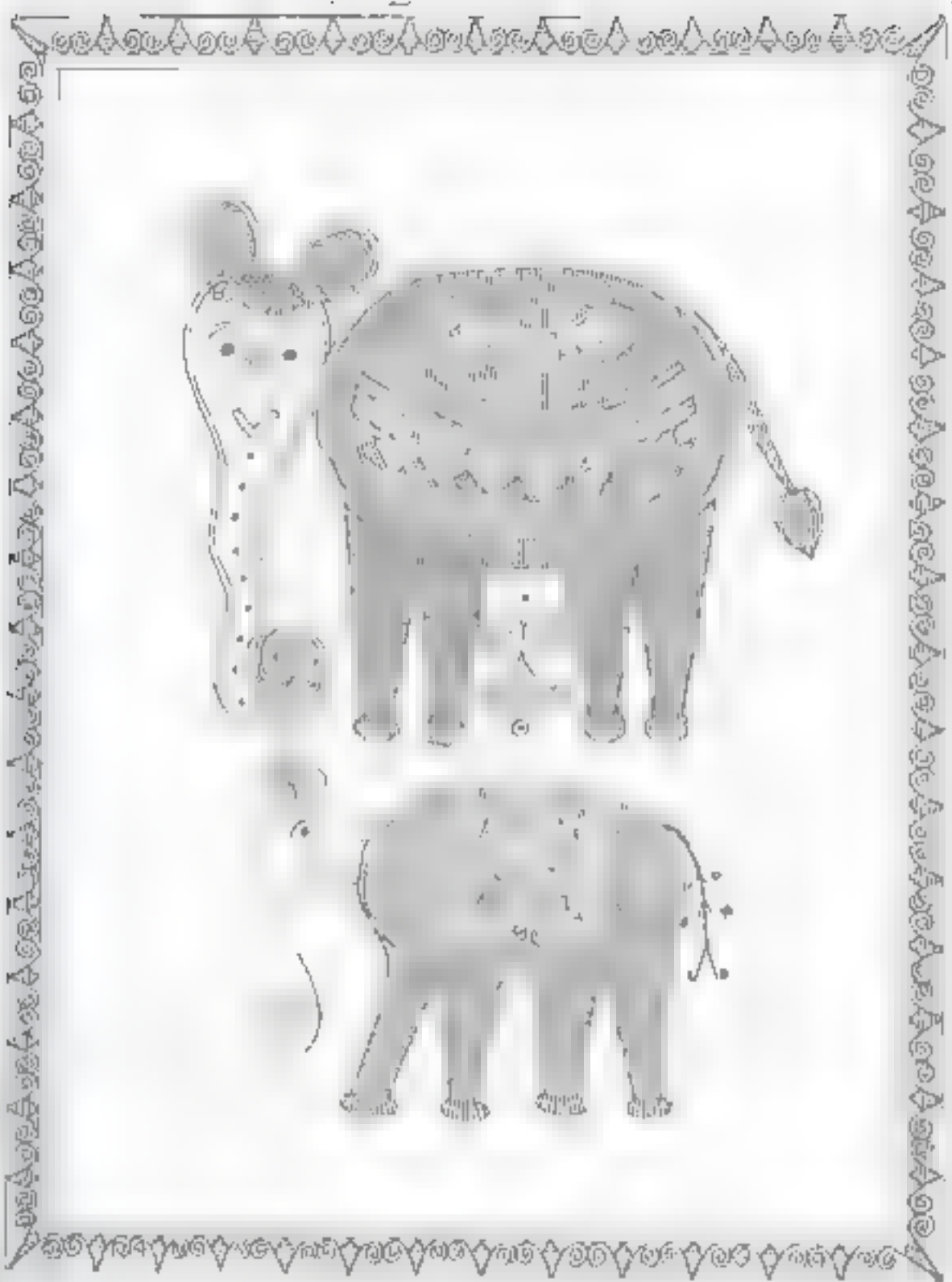


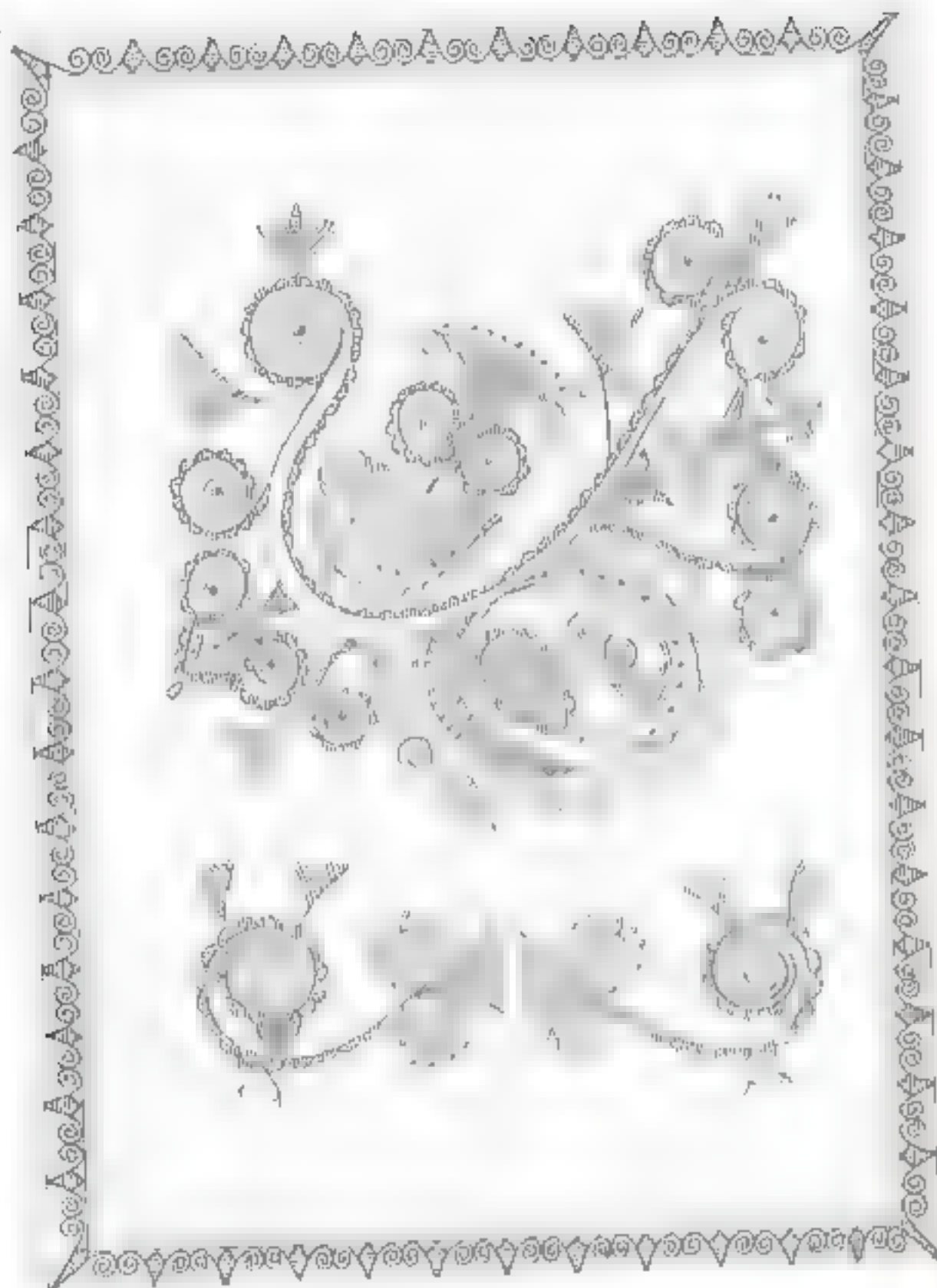


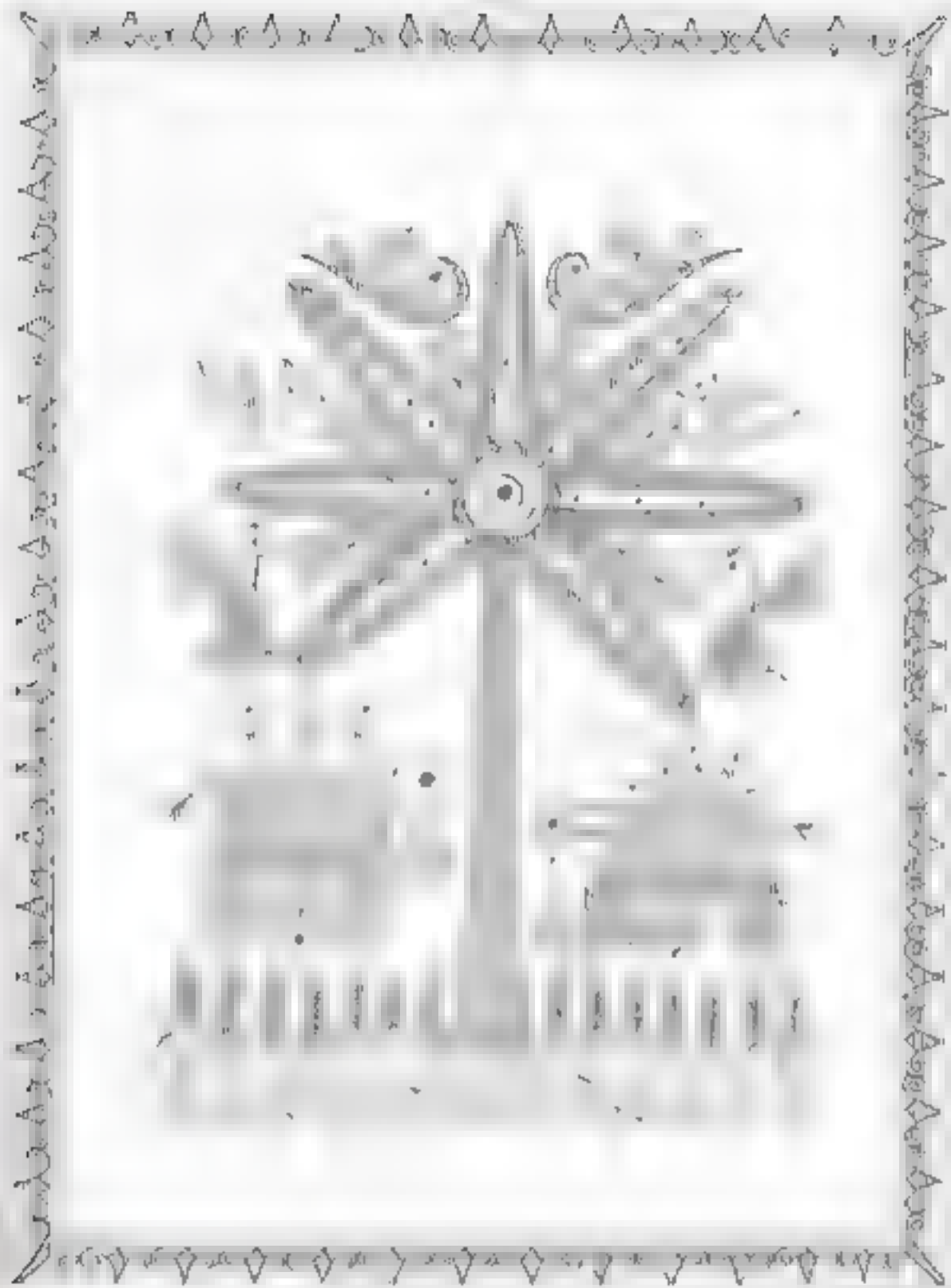


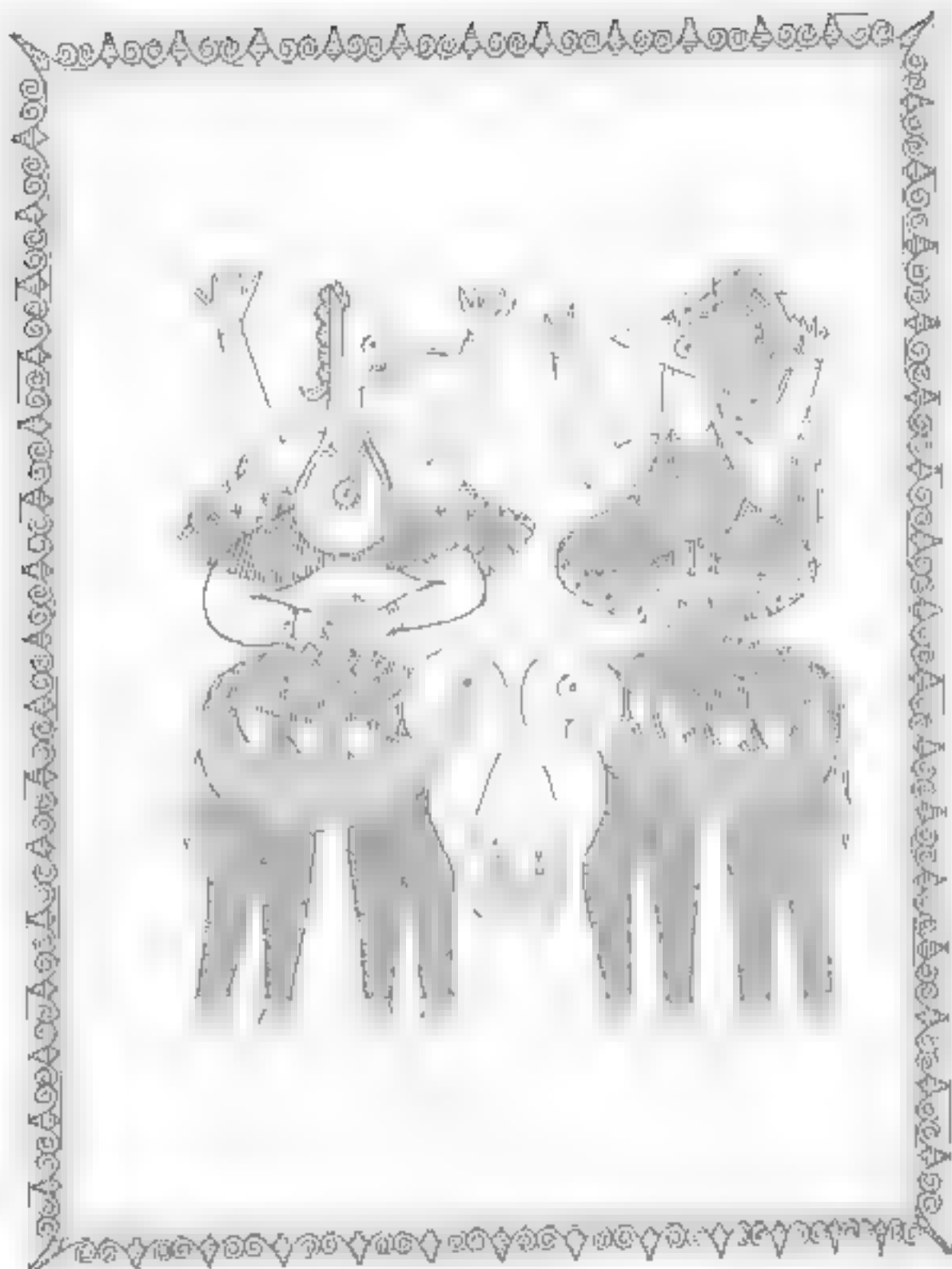




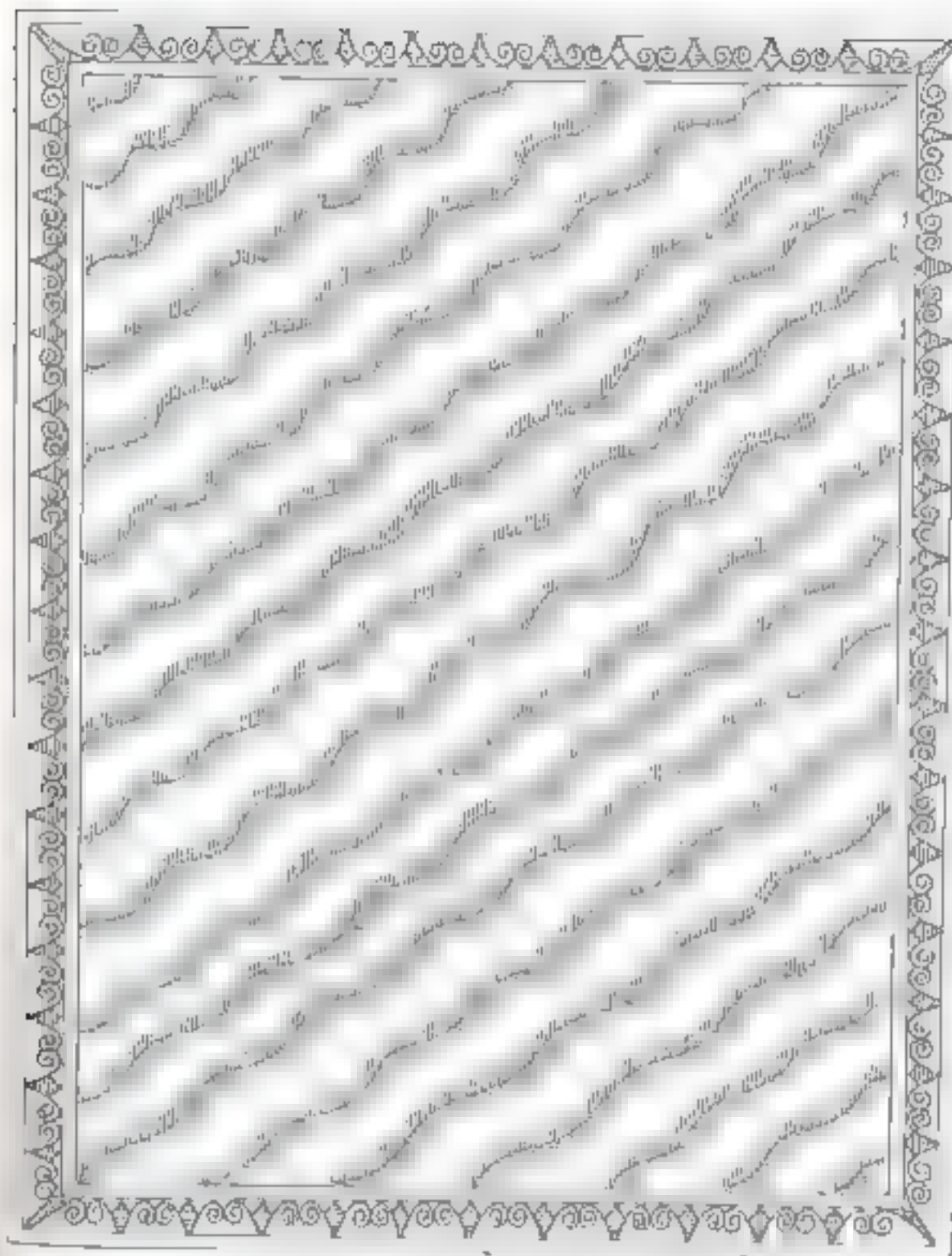


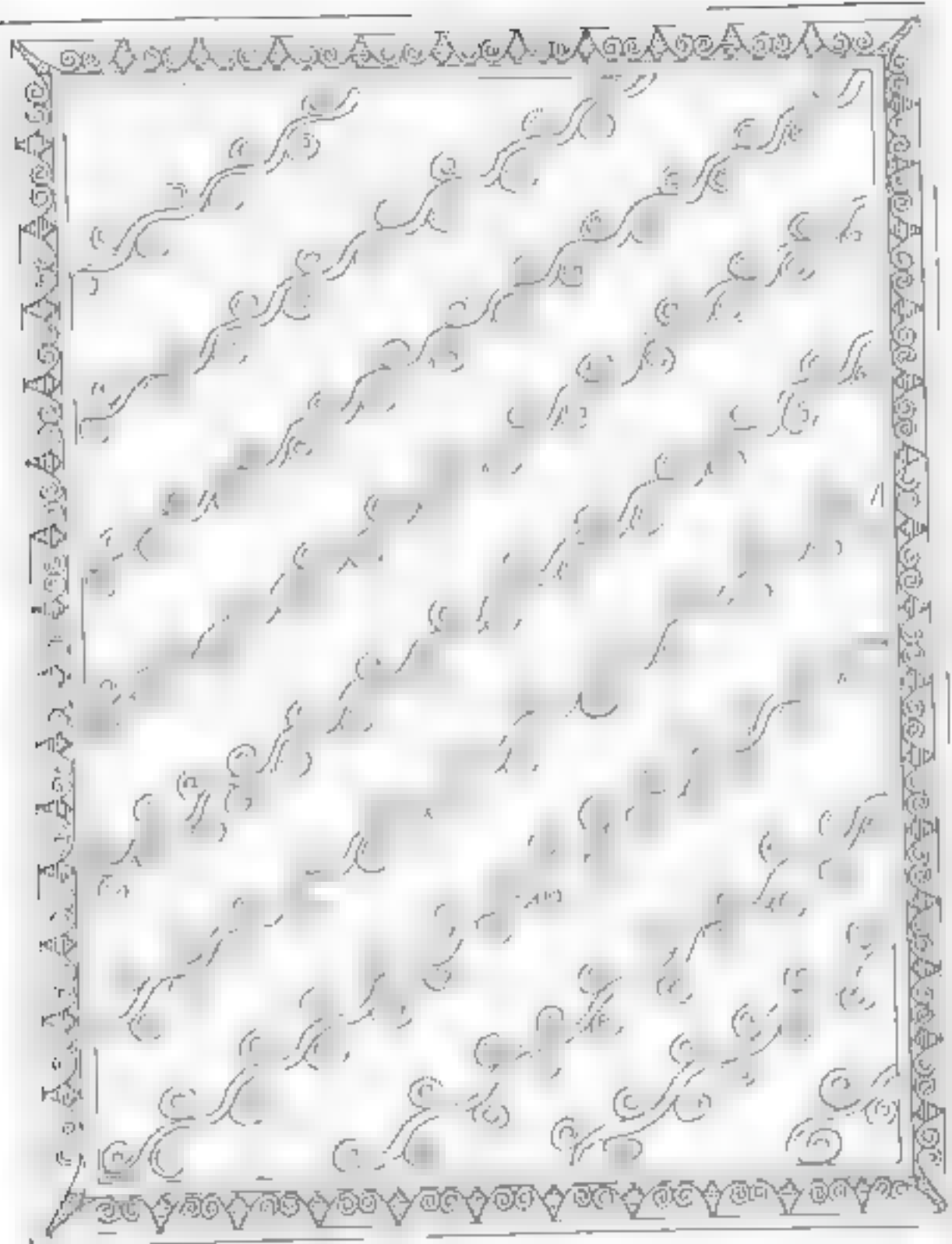


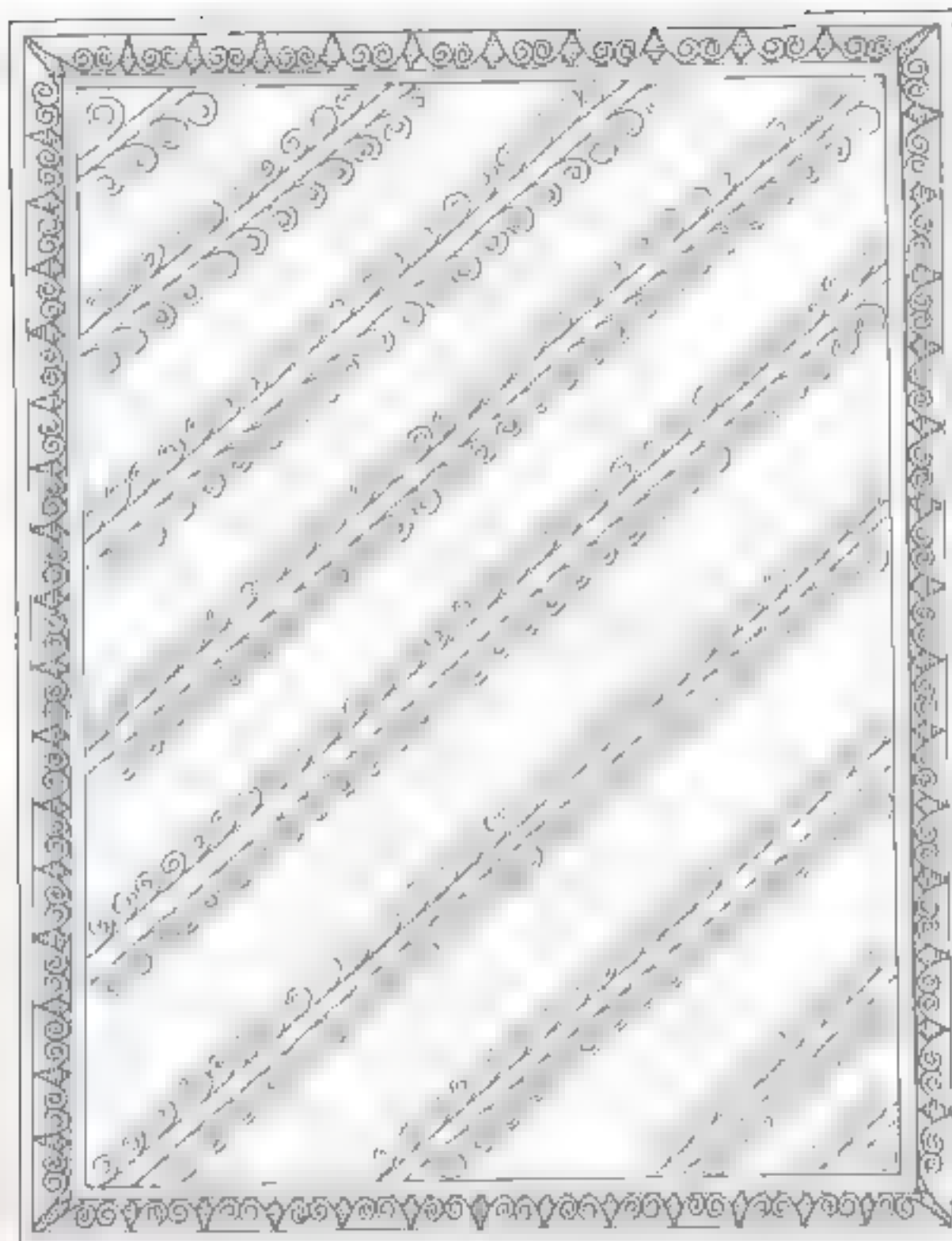




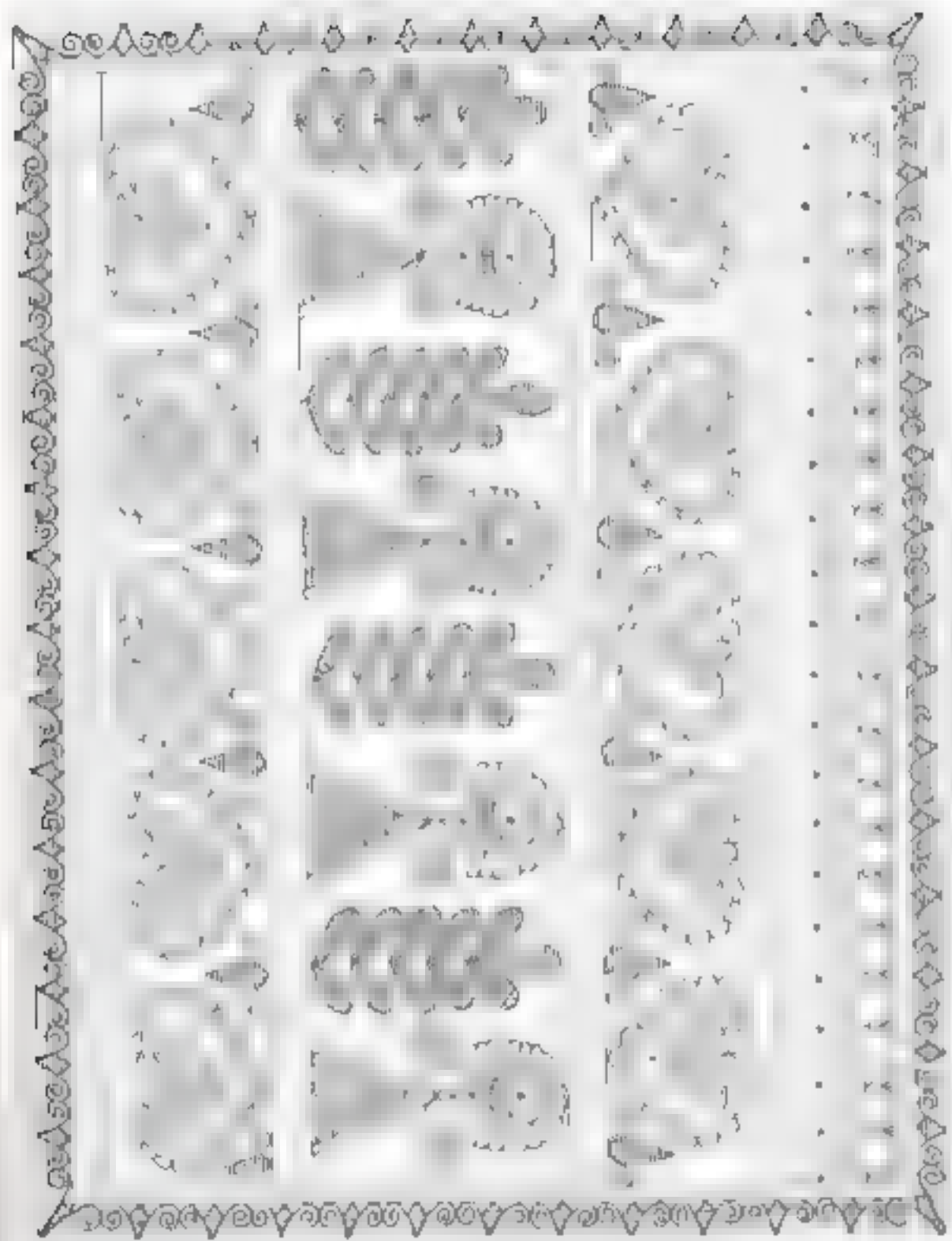
गोदना कोर



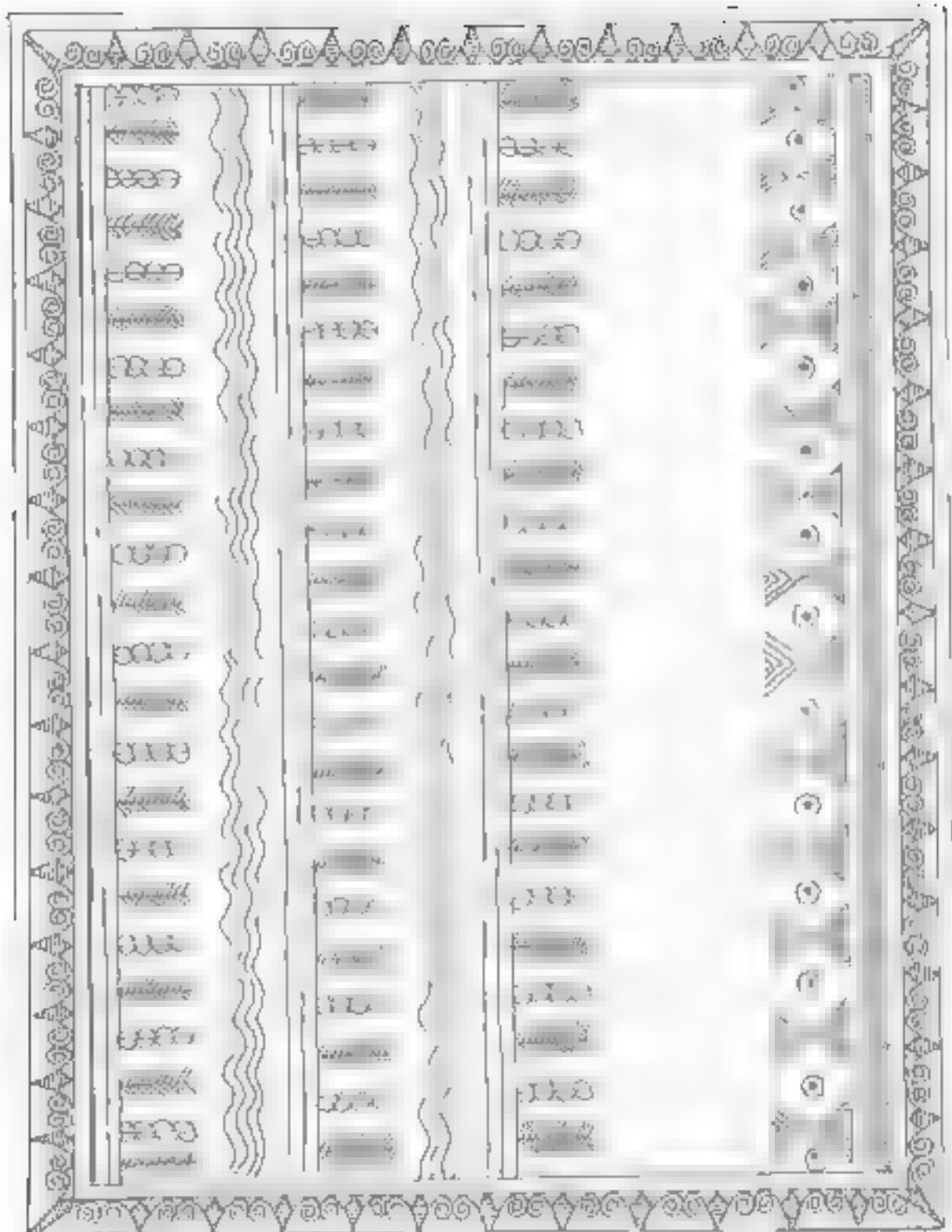


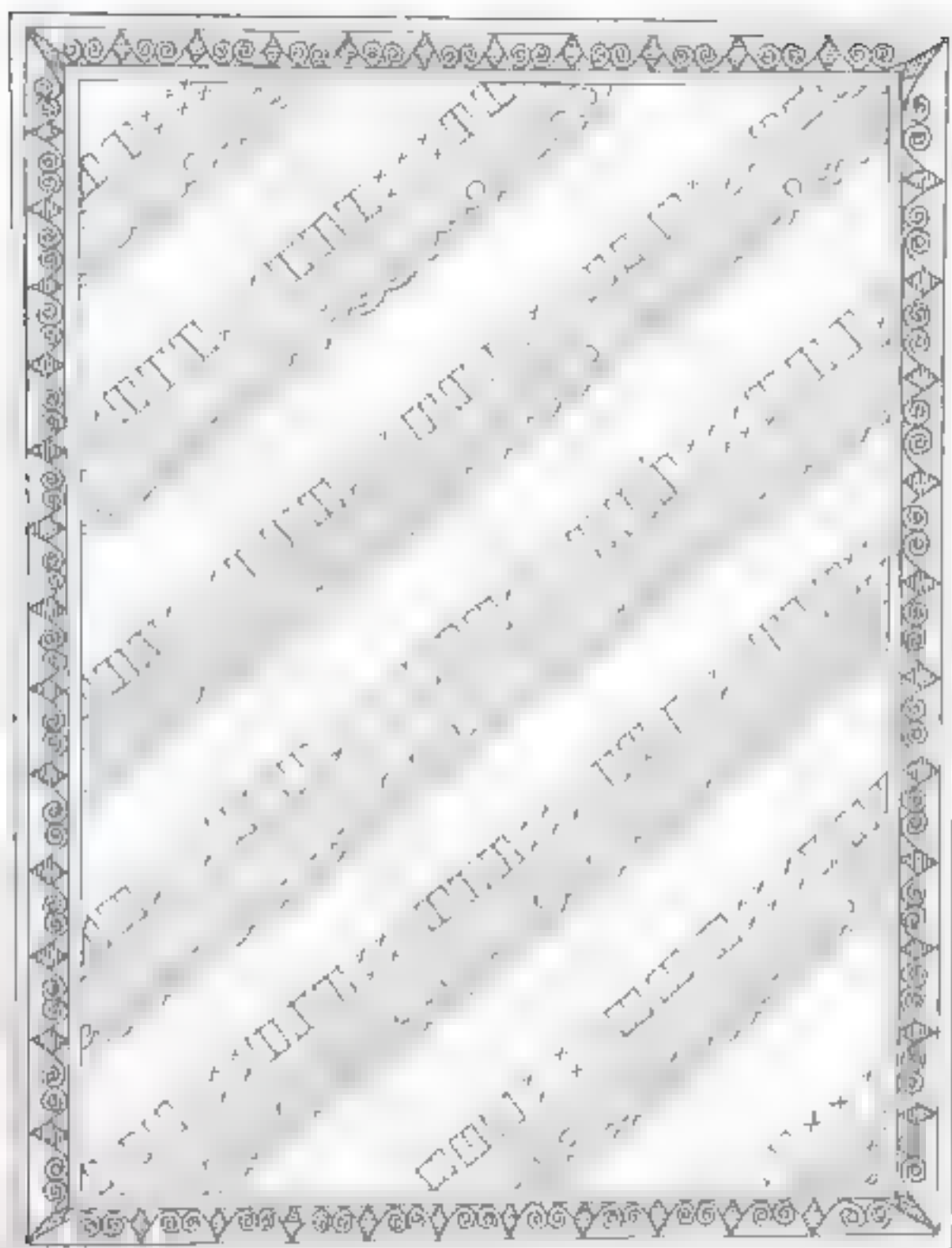


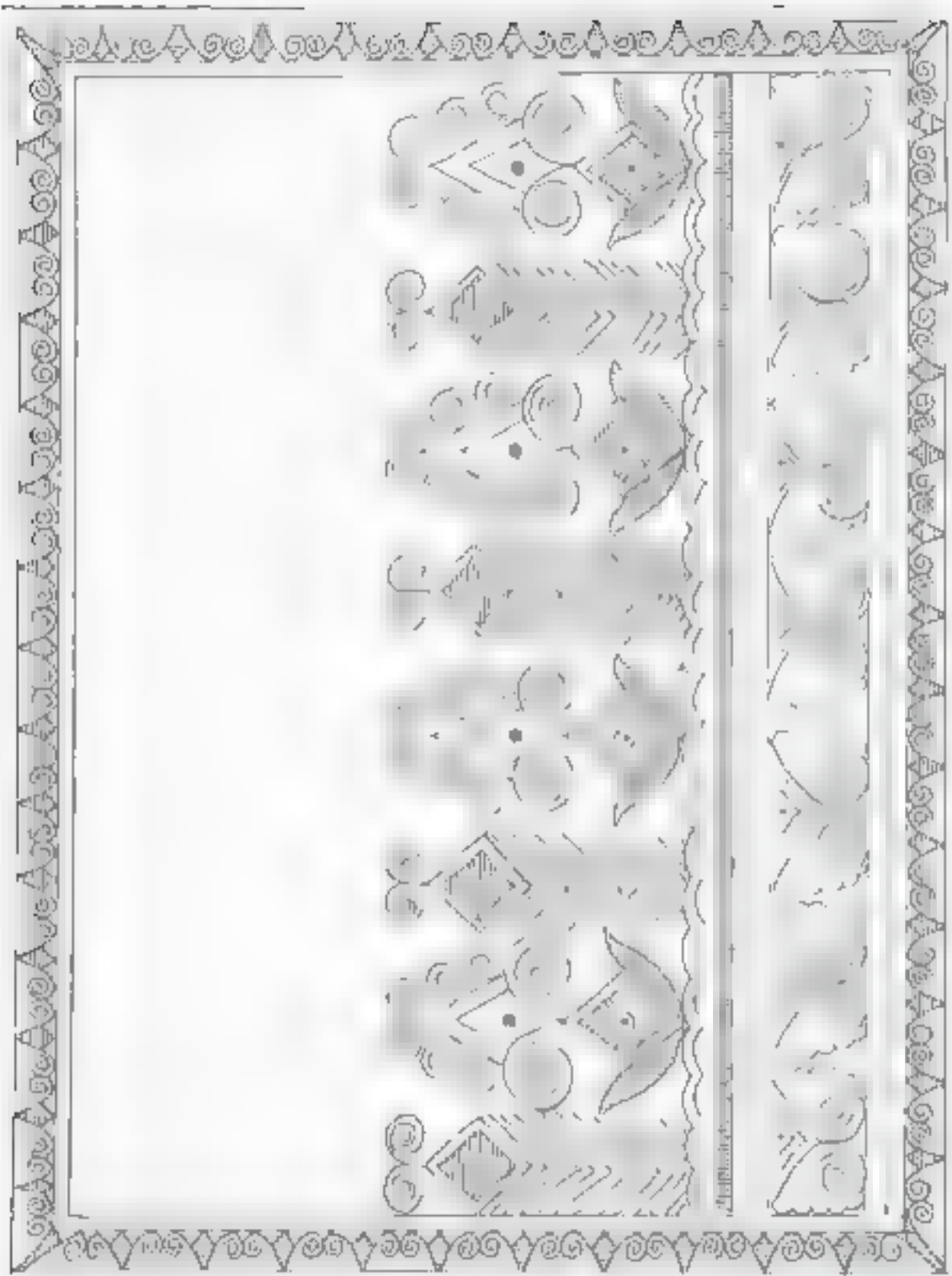


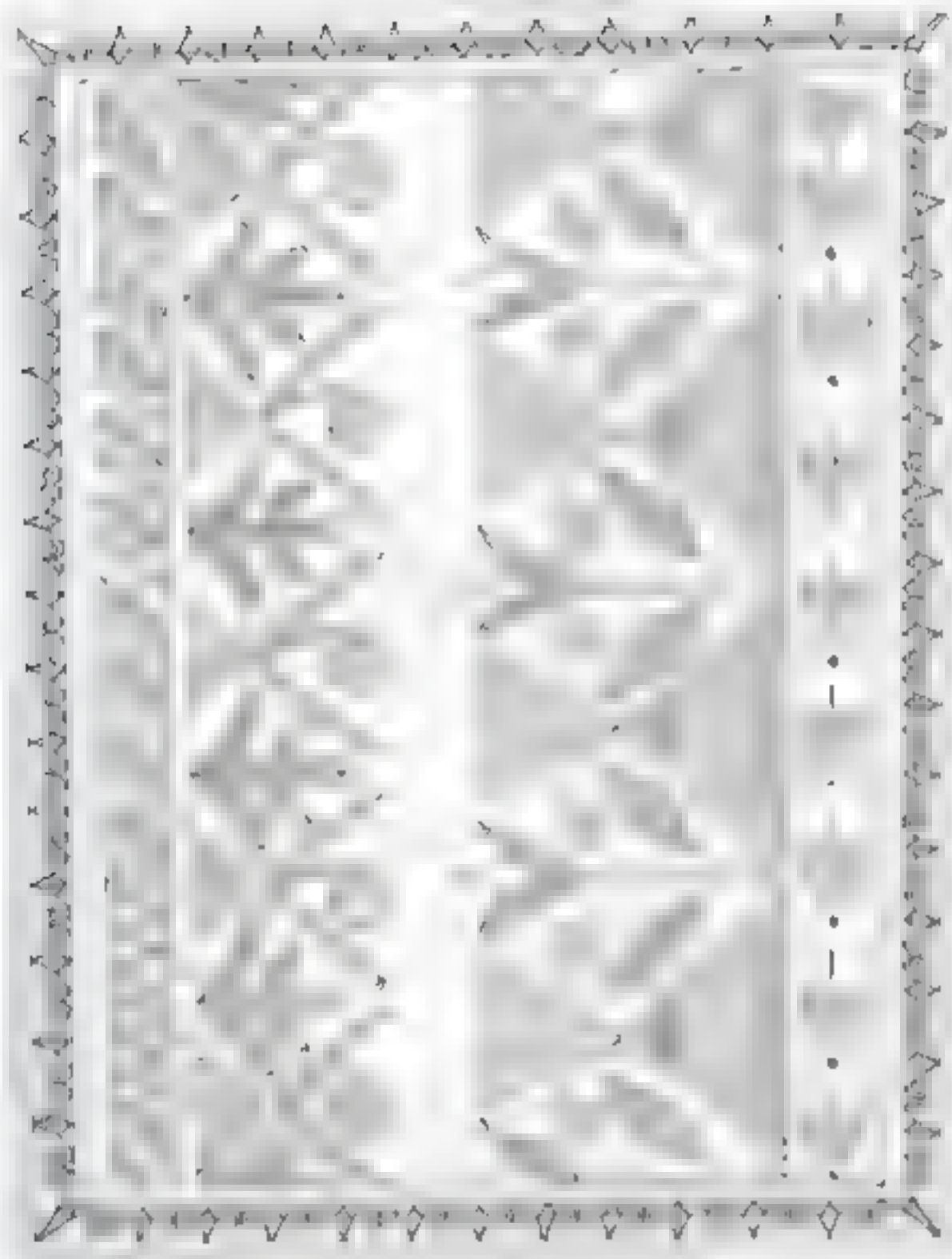


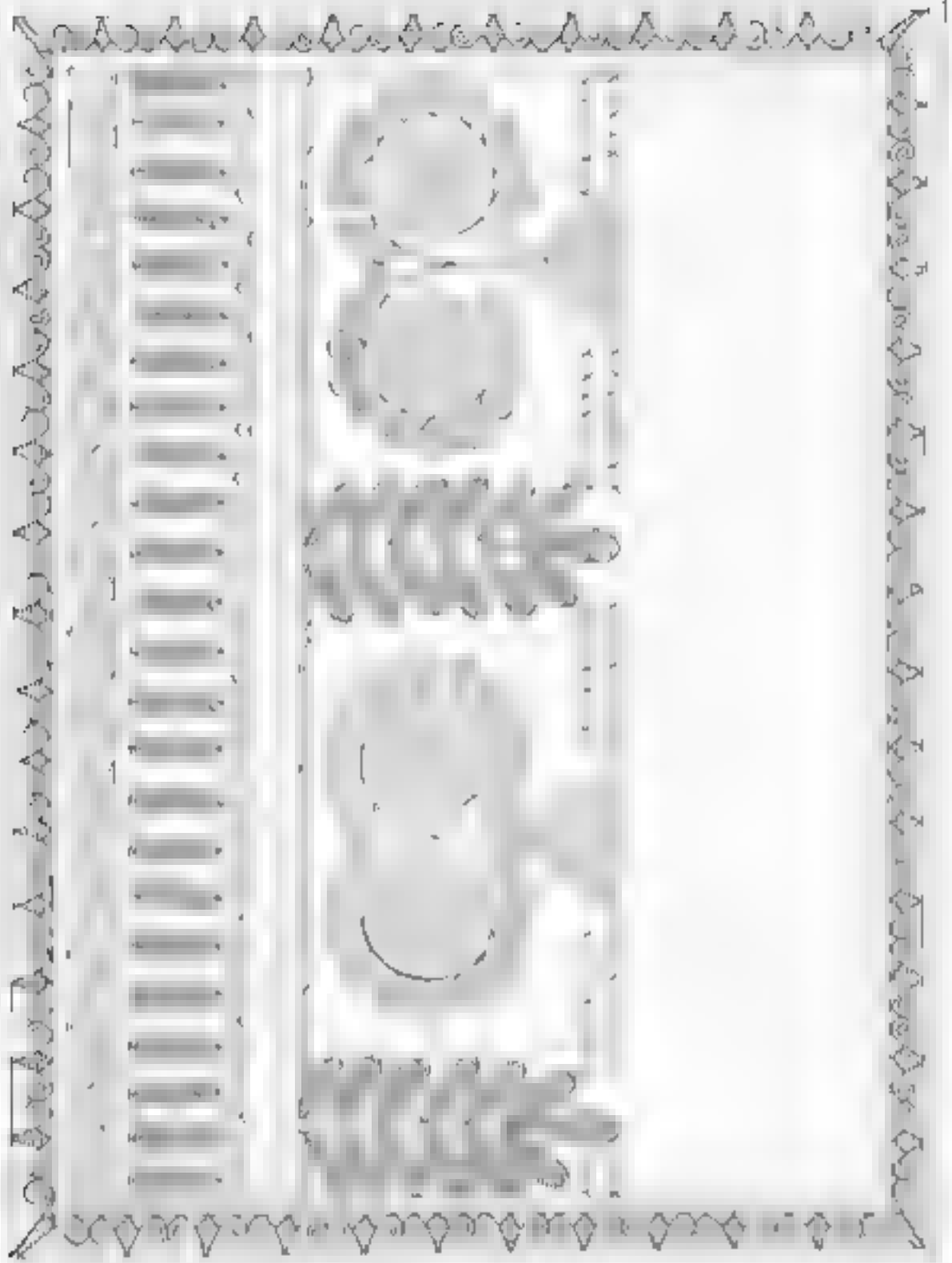
THE
FIRE
OF
THE
SUN
AND
THE
MOON
AND
THE
STARS
AND
THE
WINDS
AND
THE
WATERS
AND
THE
EARTH
AND
THE
HEAVENS
AND
THE
FIRE
OF
THE
SUN
AND
THE
MOON
AND
THE
STARS
AND
THE
WINDS
AND
THE
WATERS
AND
THE
EARTH
AND
THE
HEAVENS

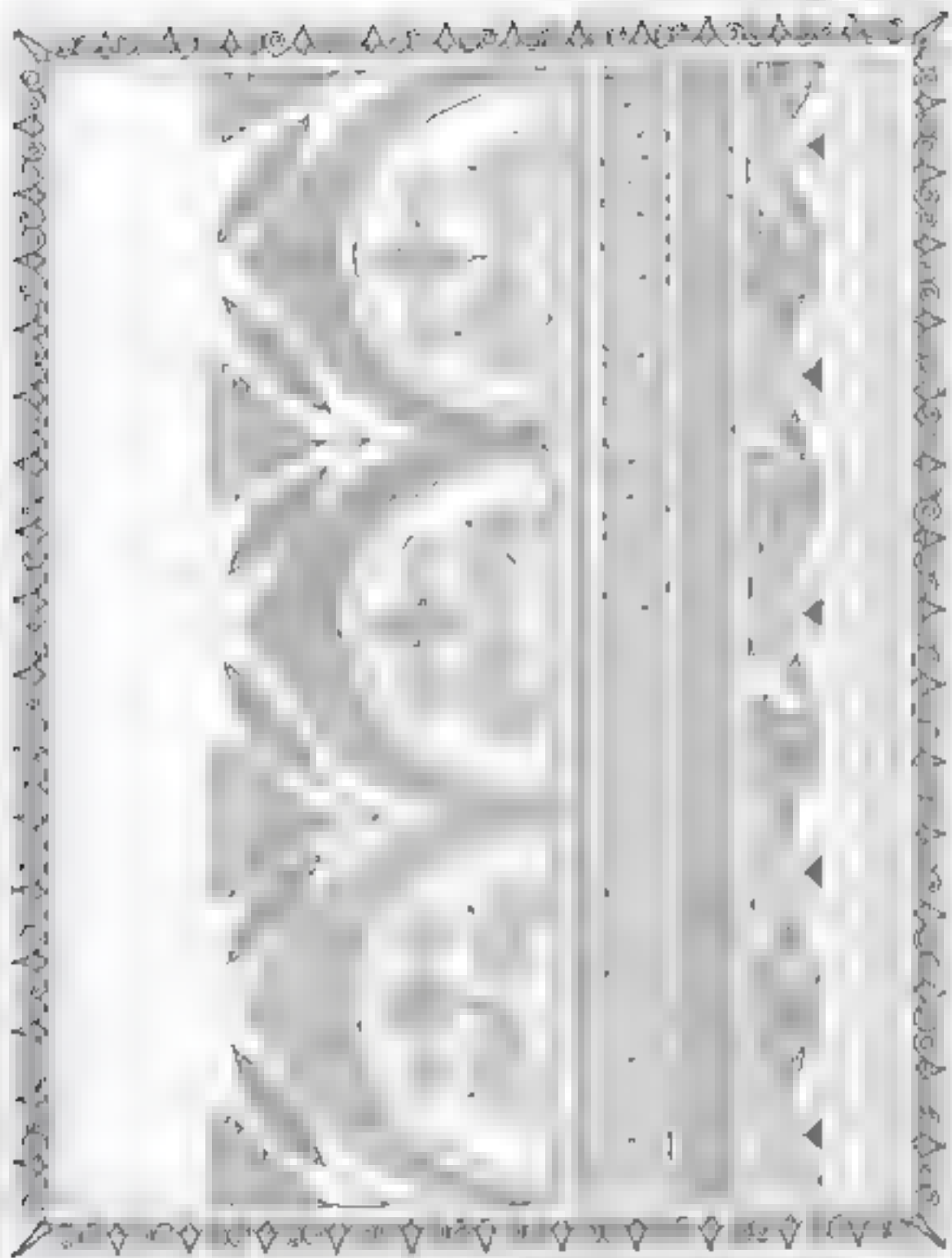


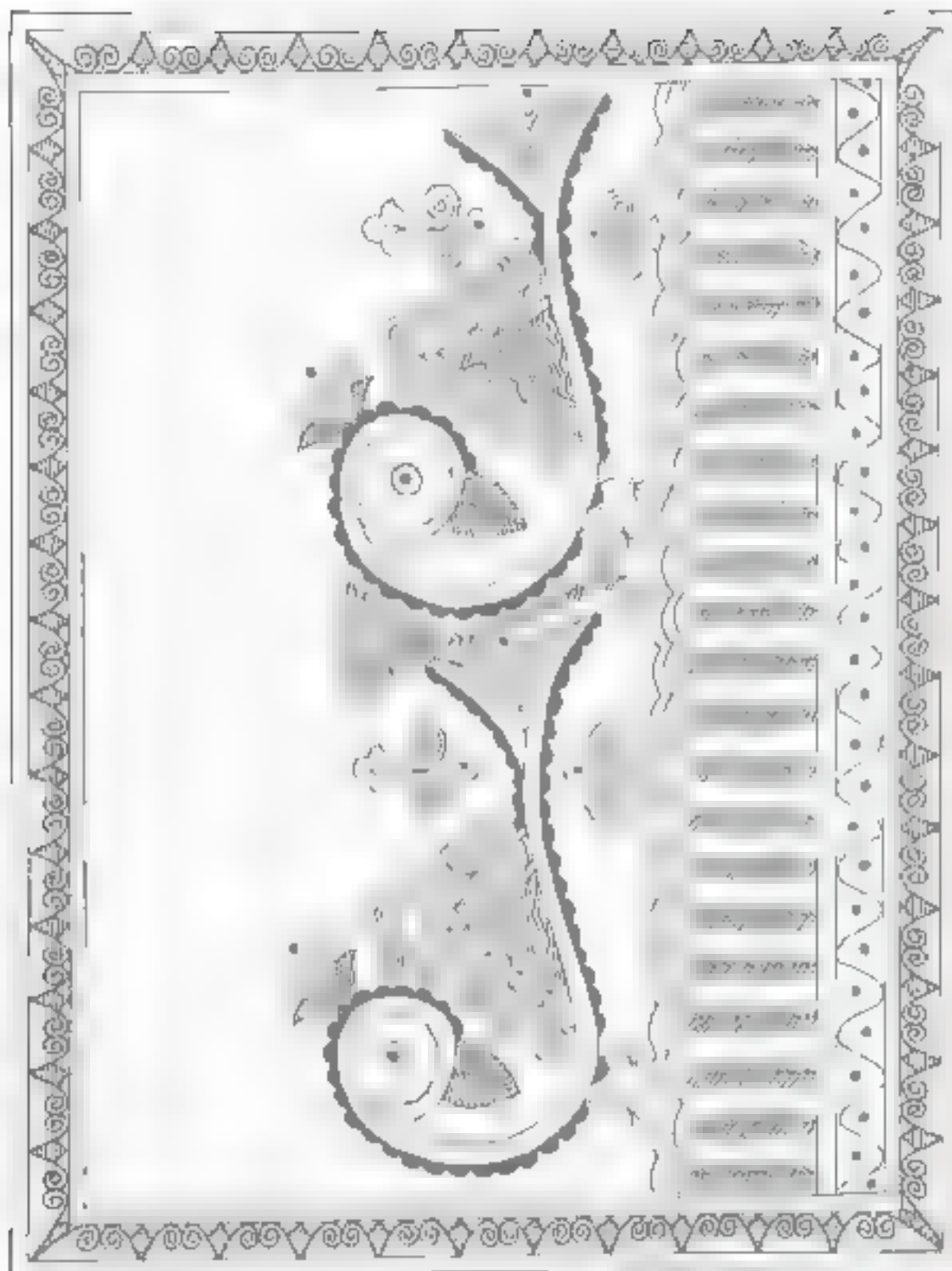


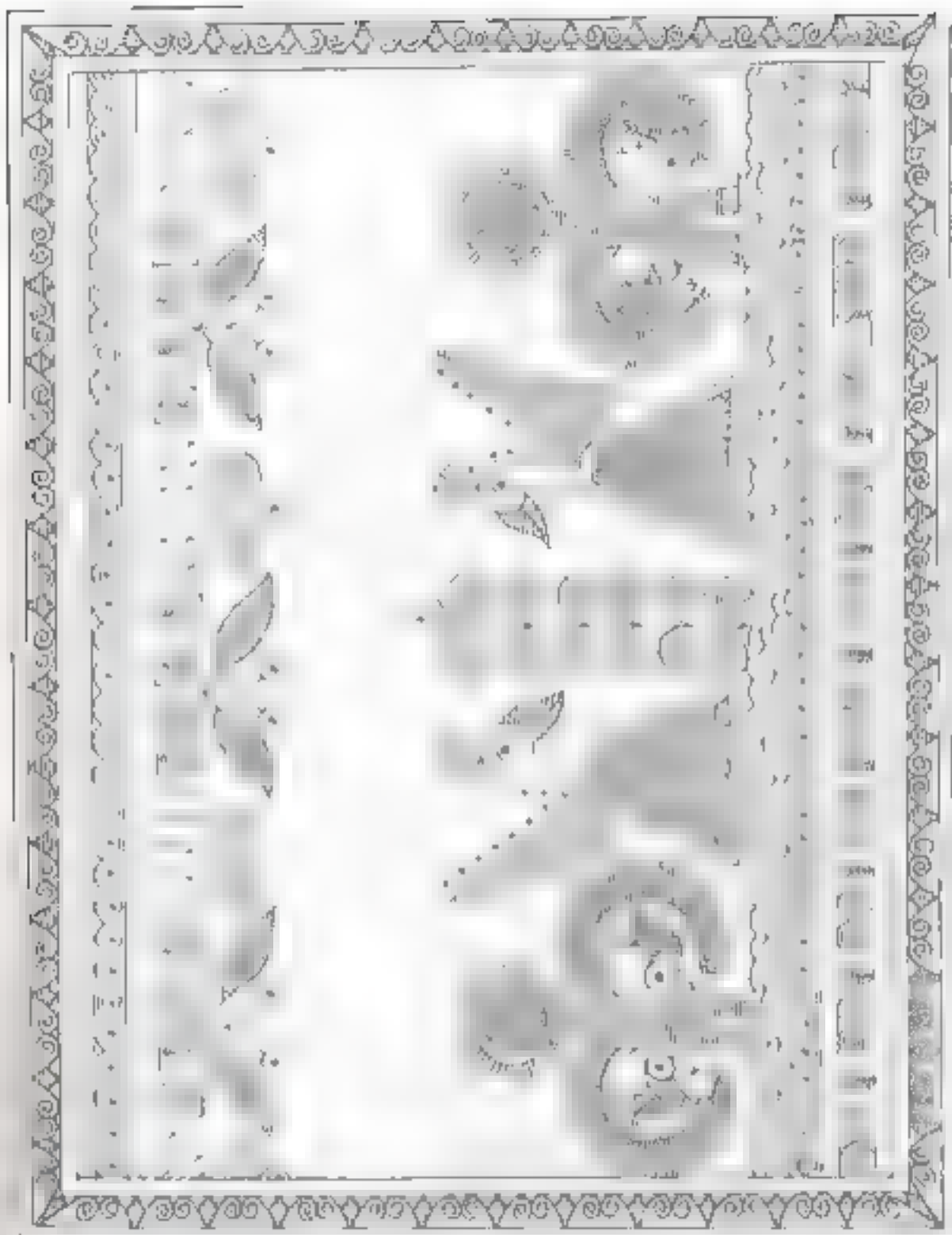




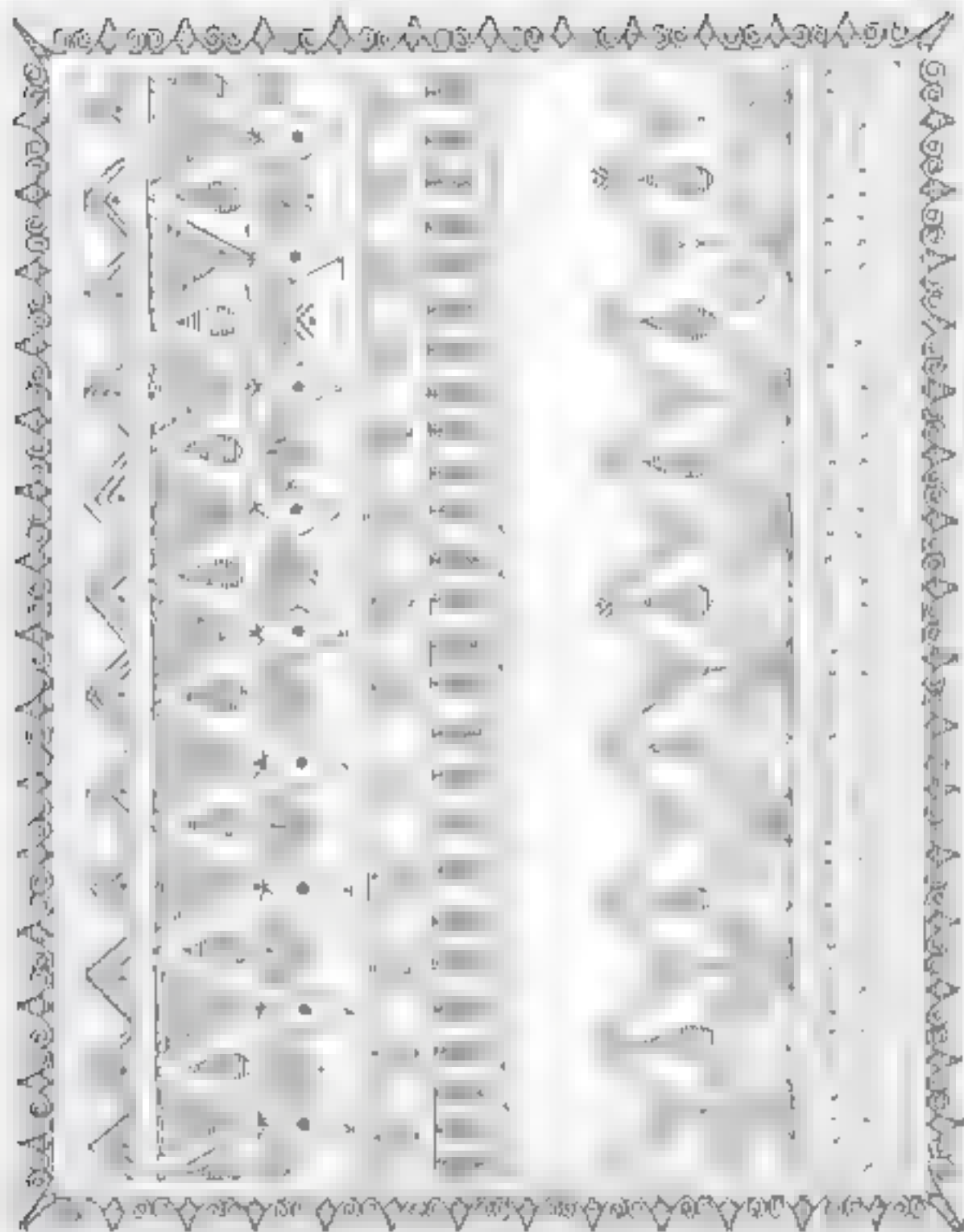


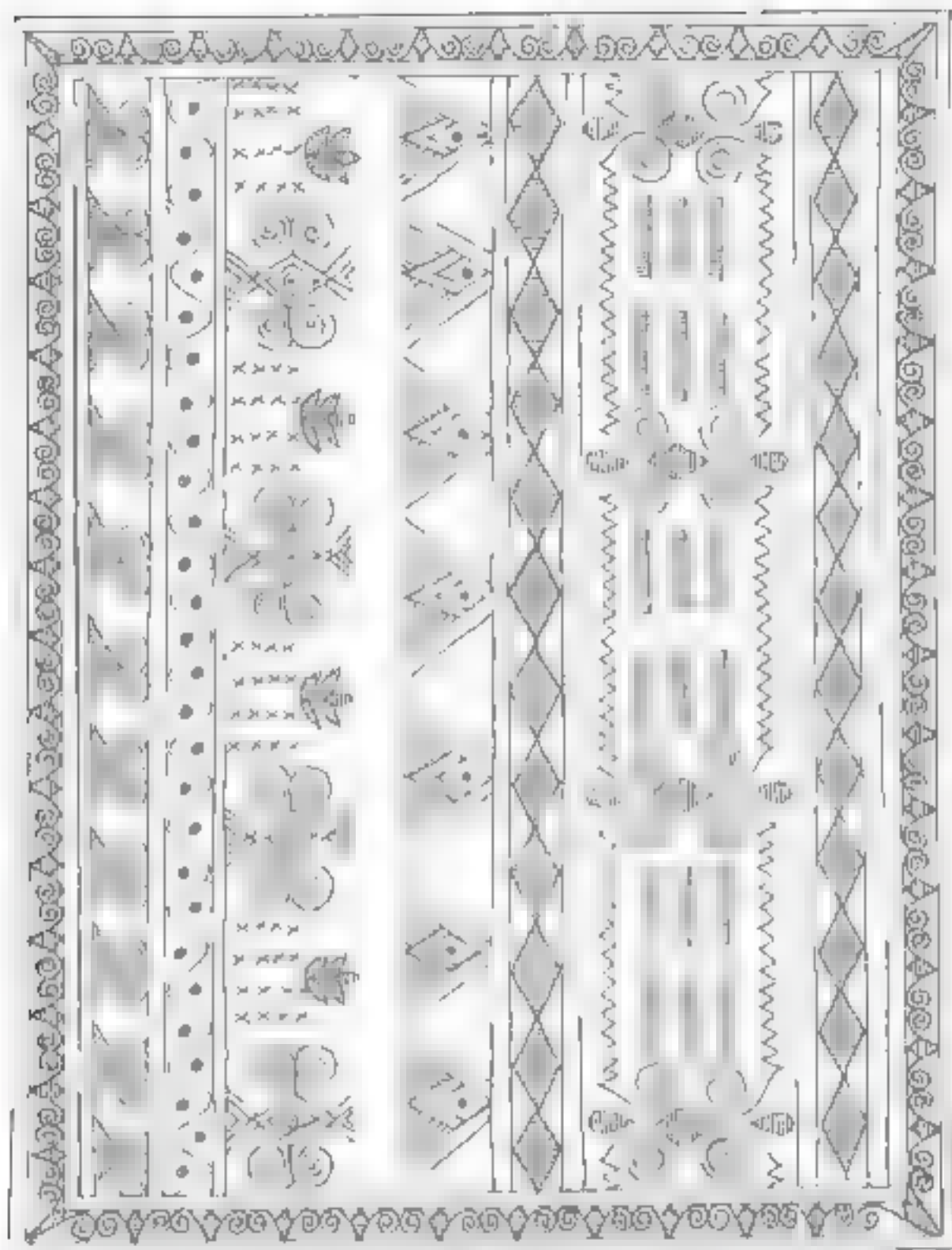


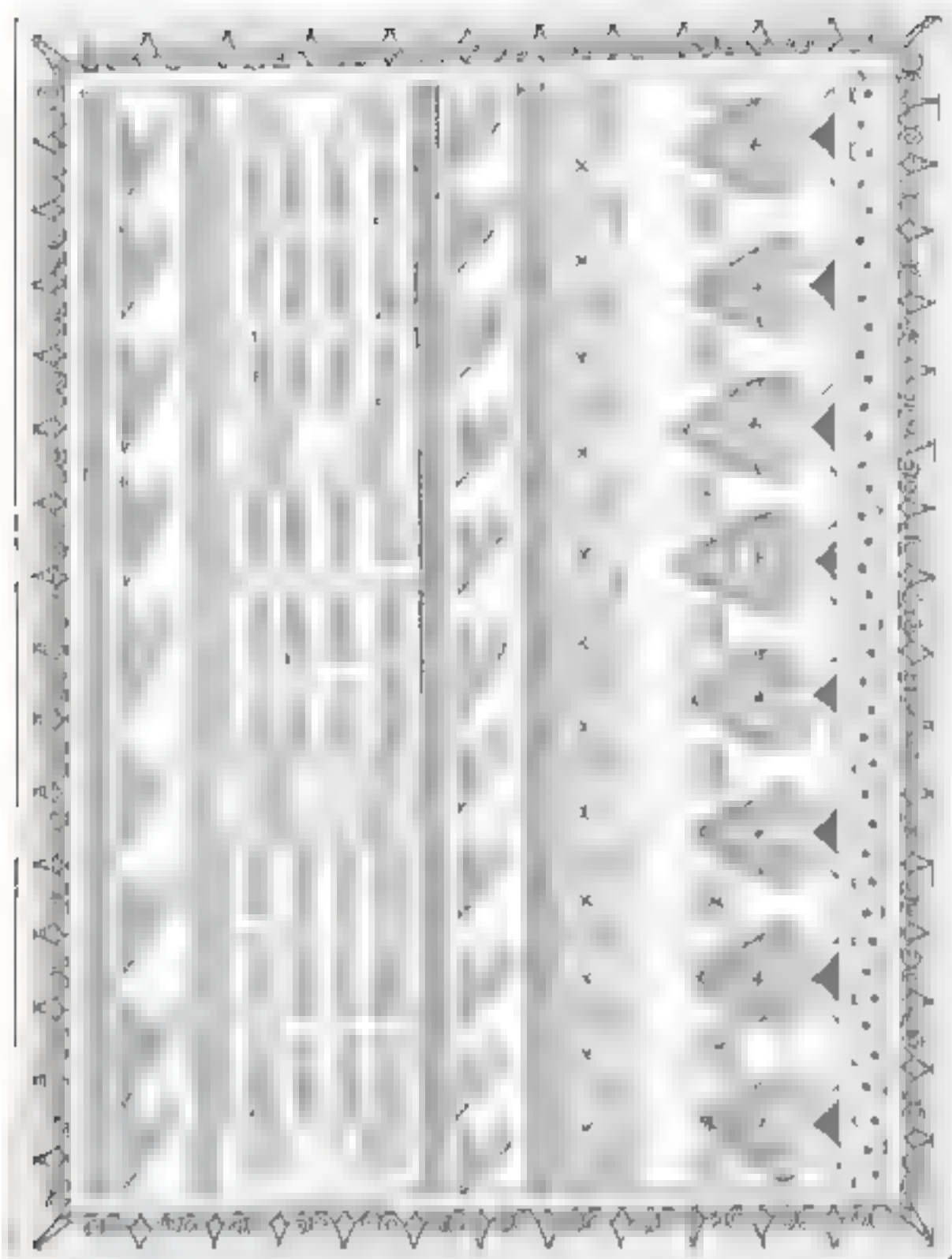


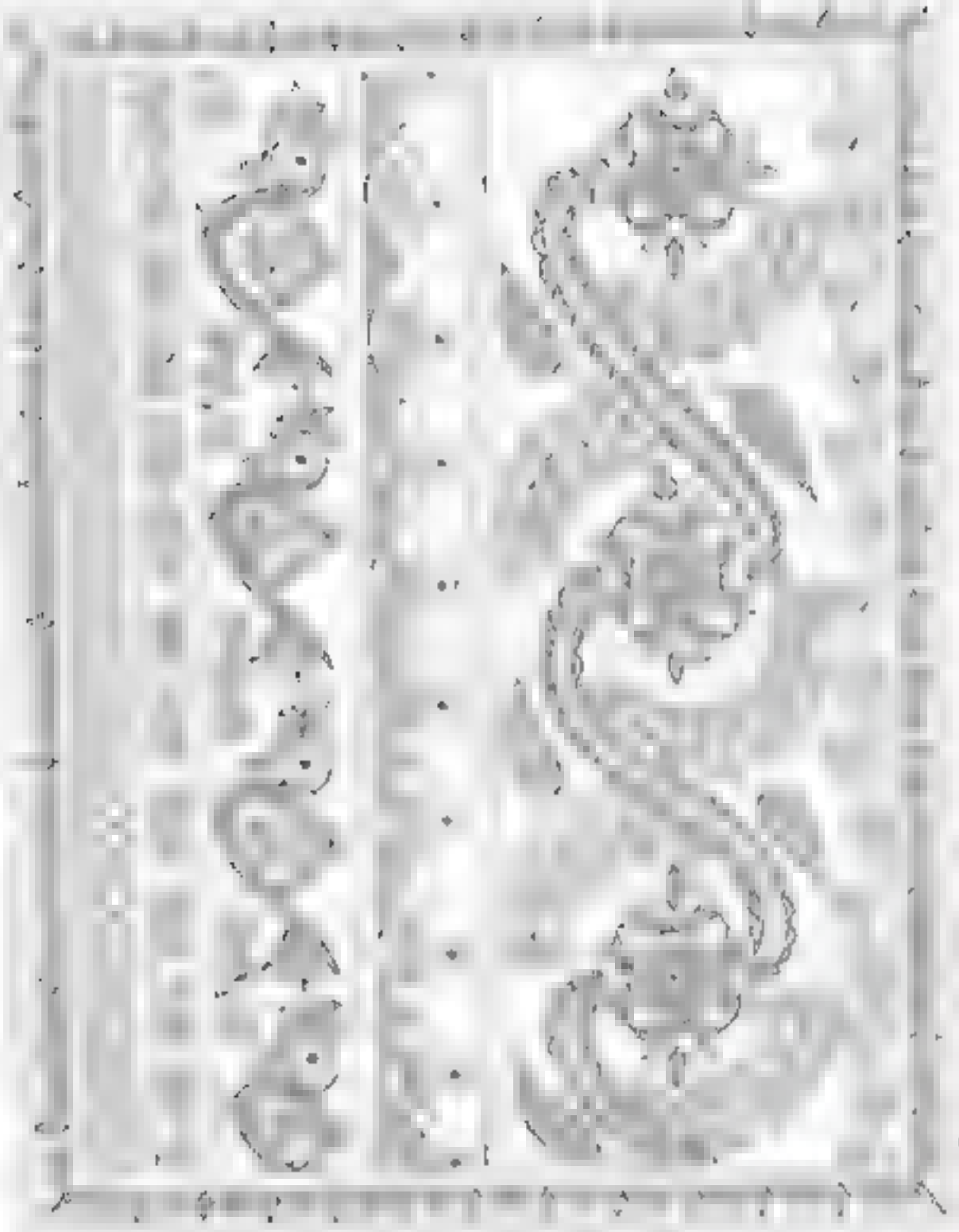


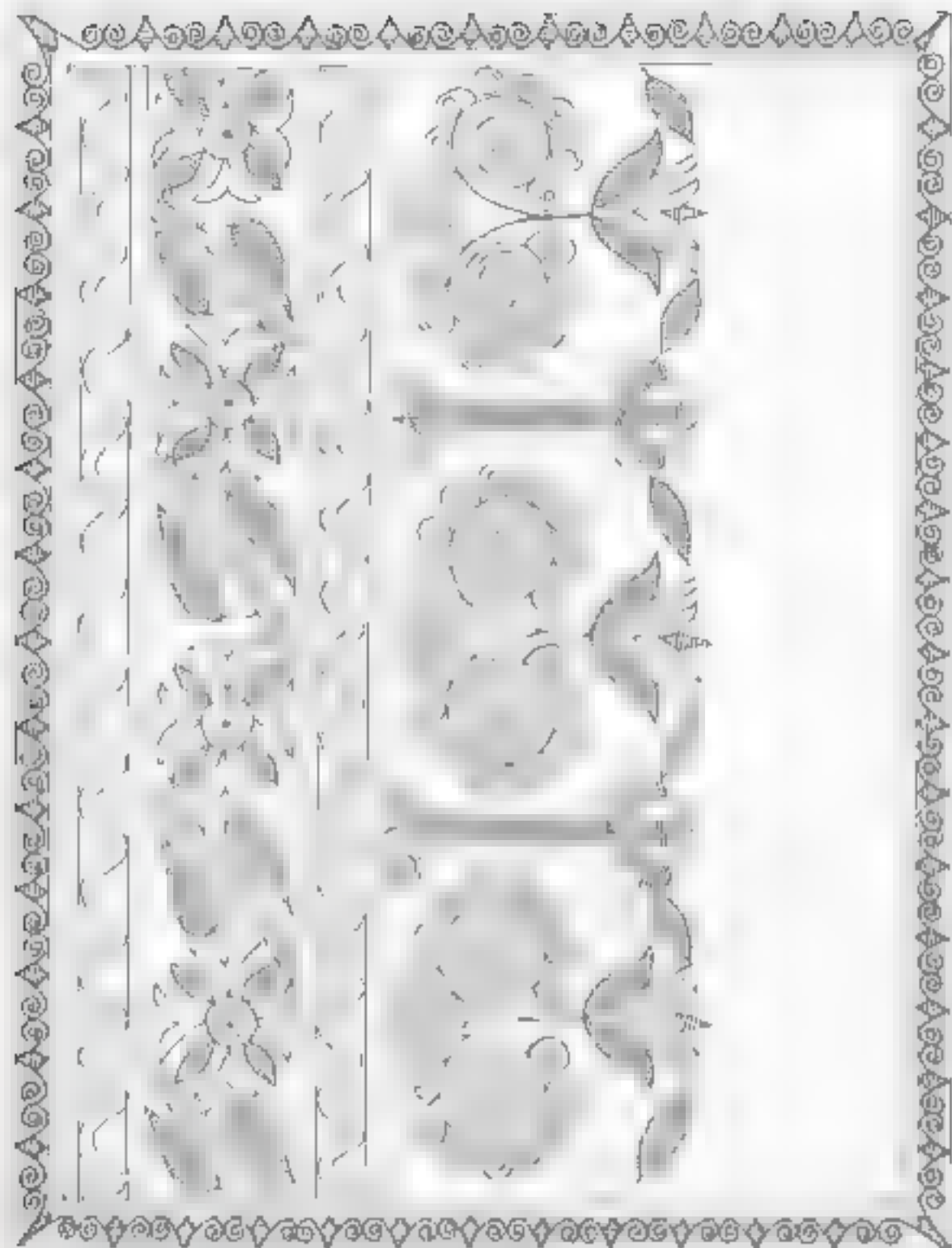


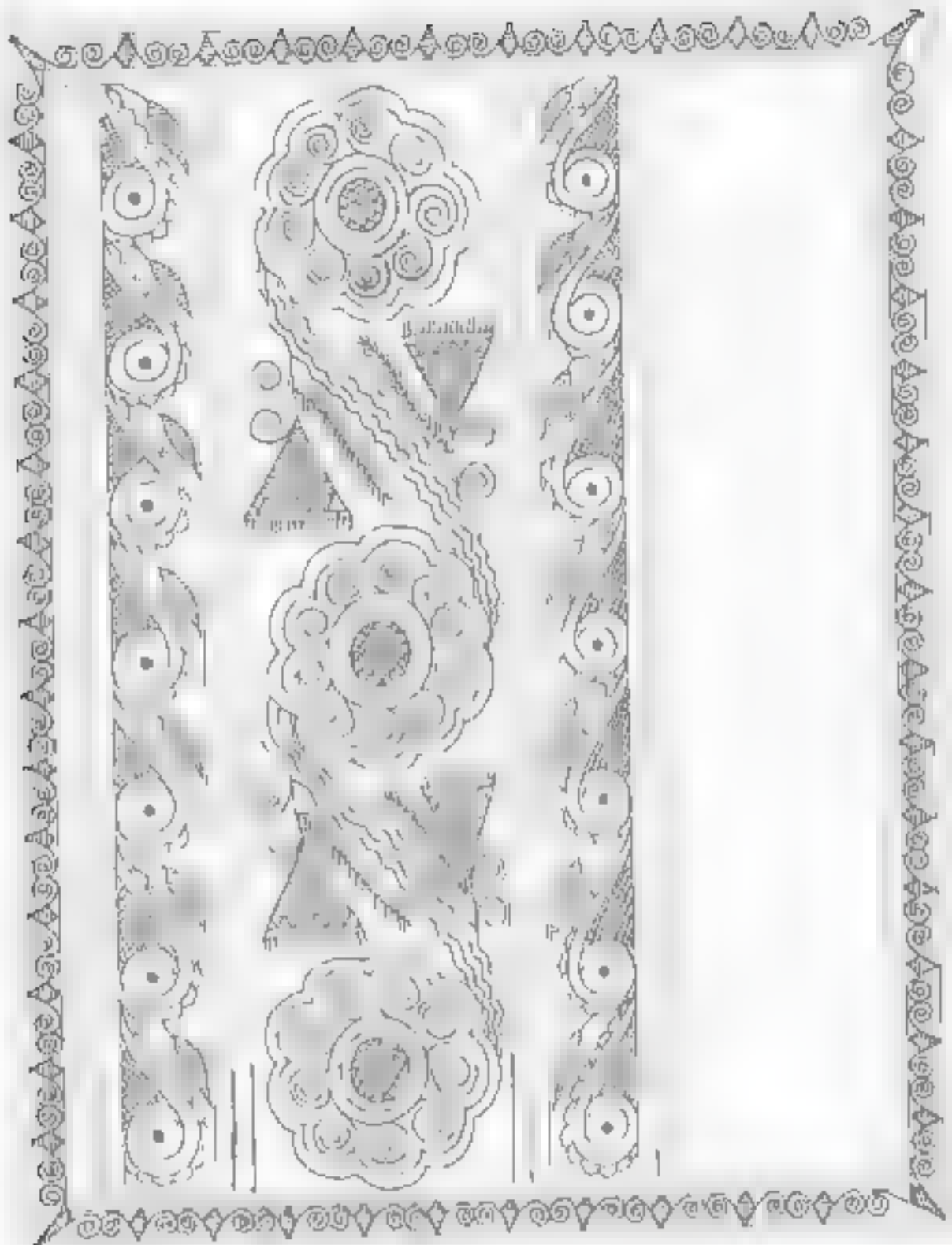


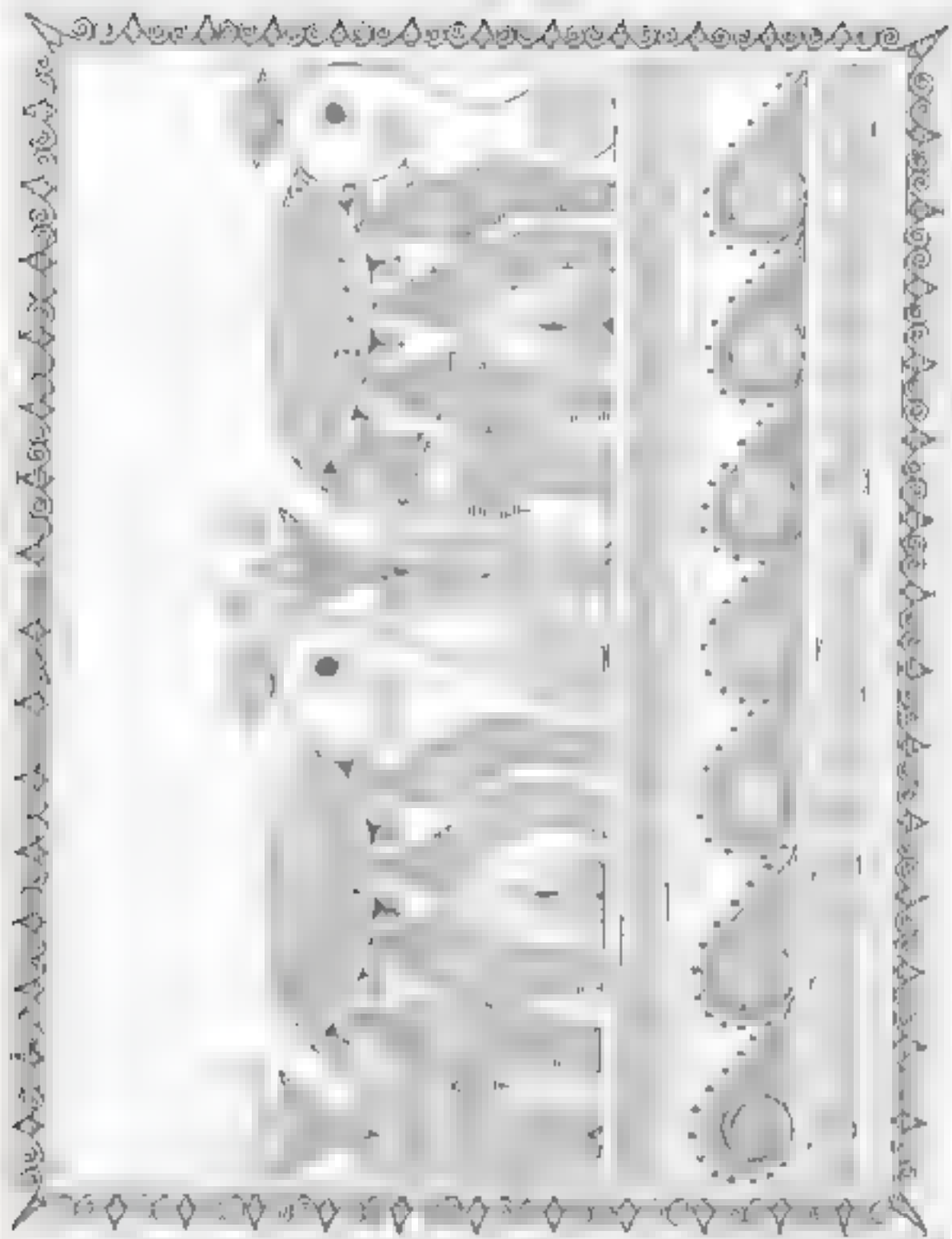


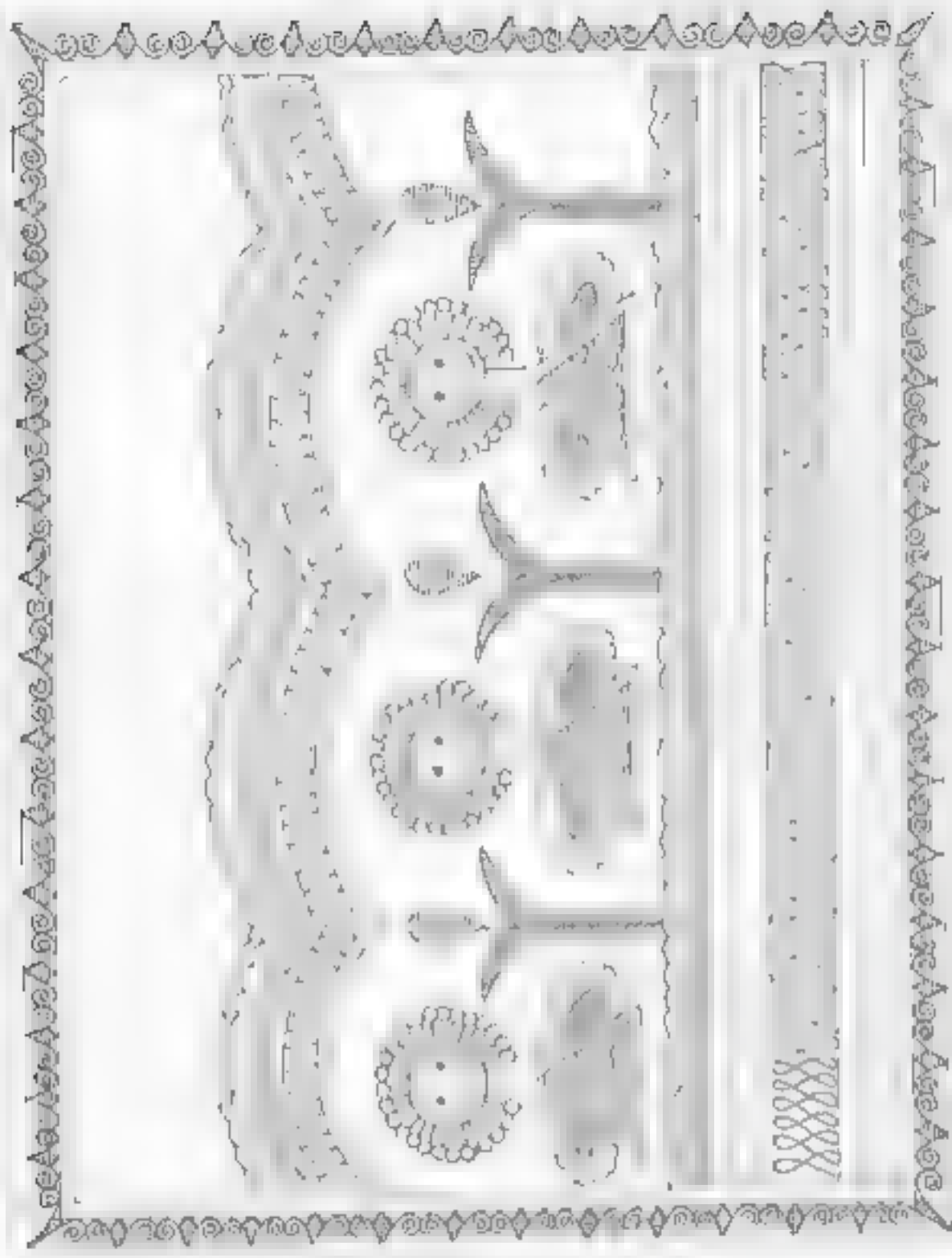


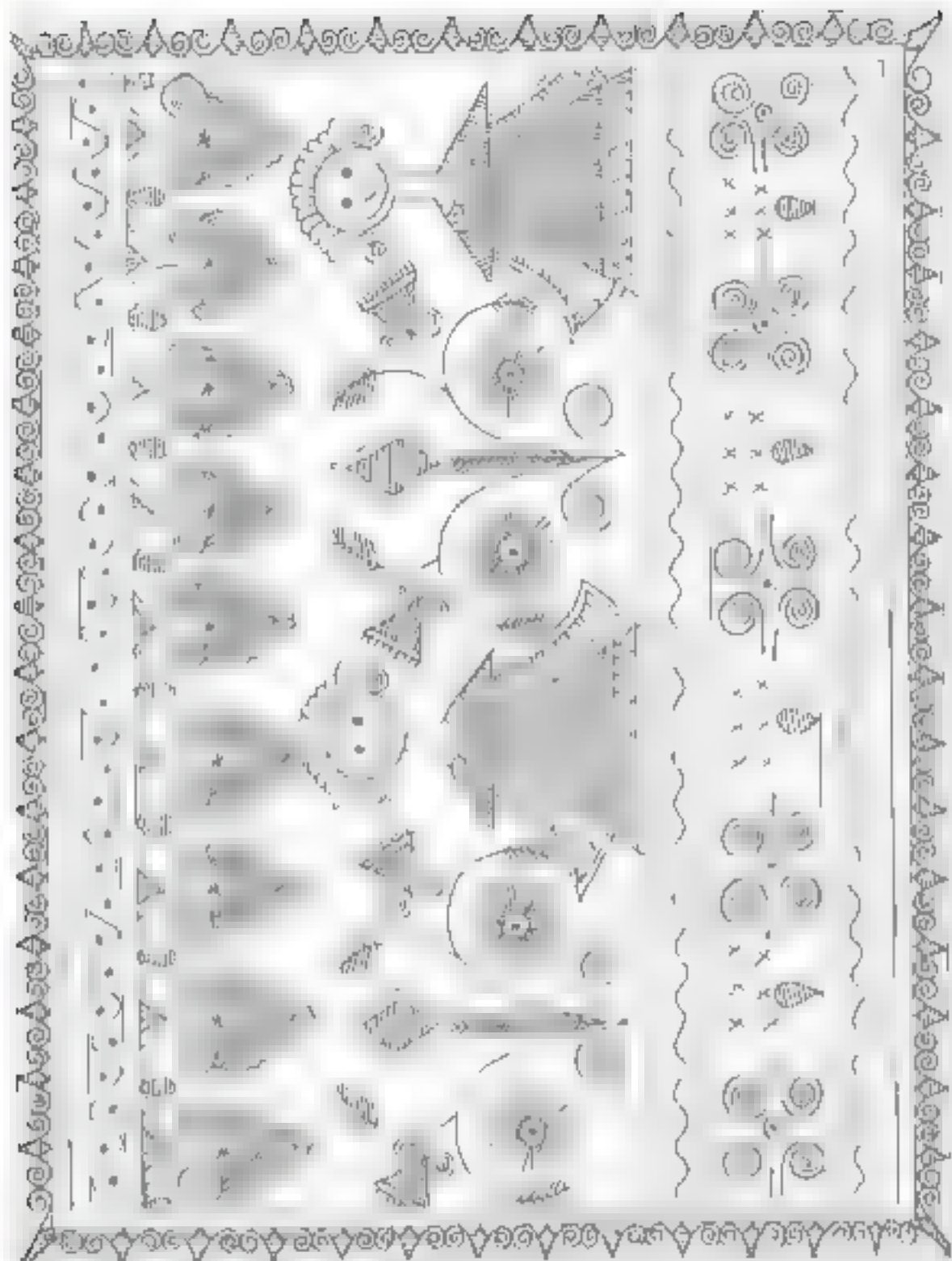


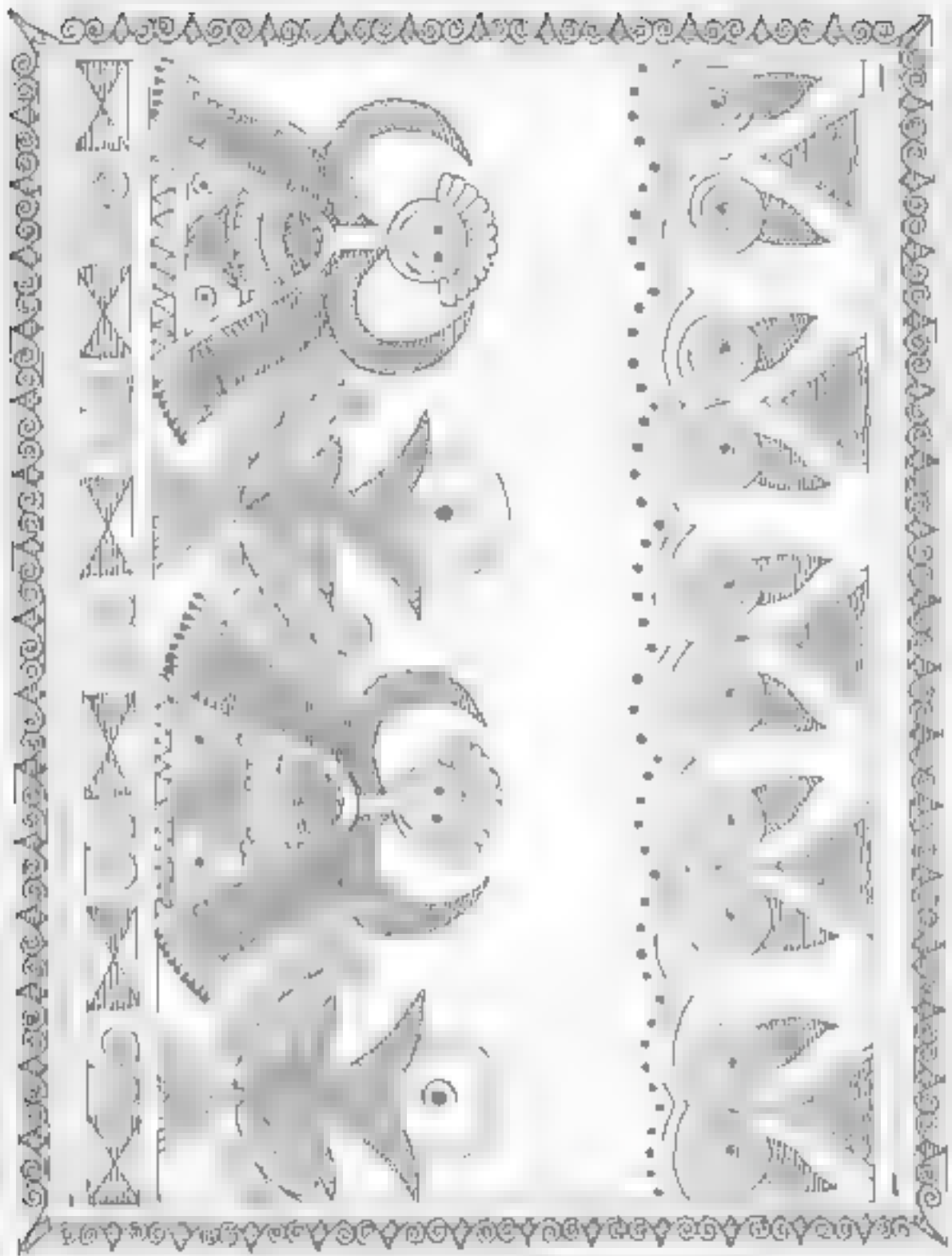


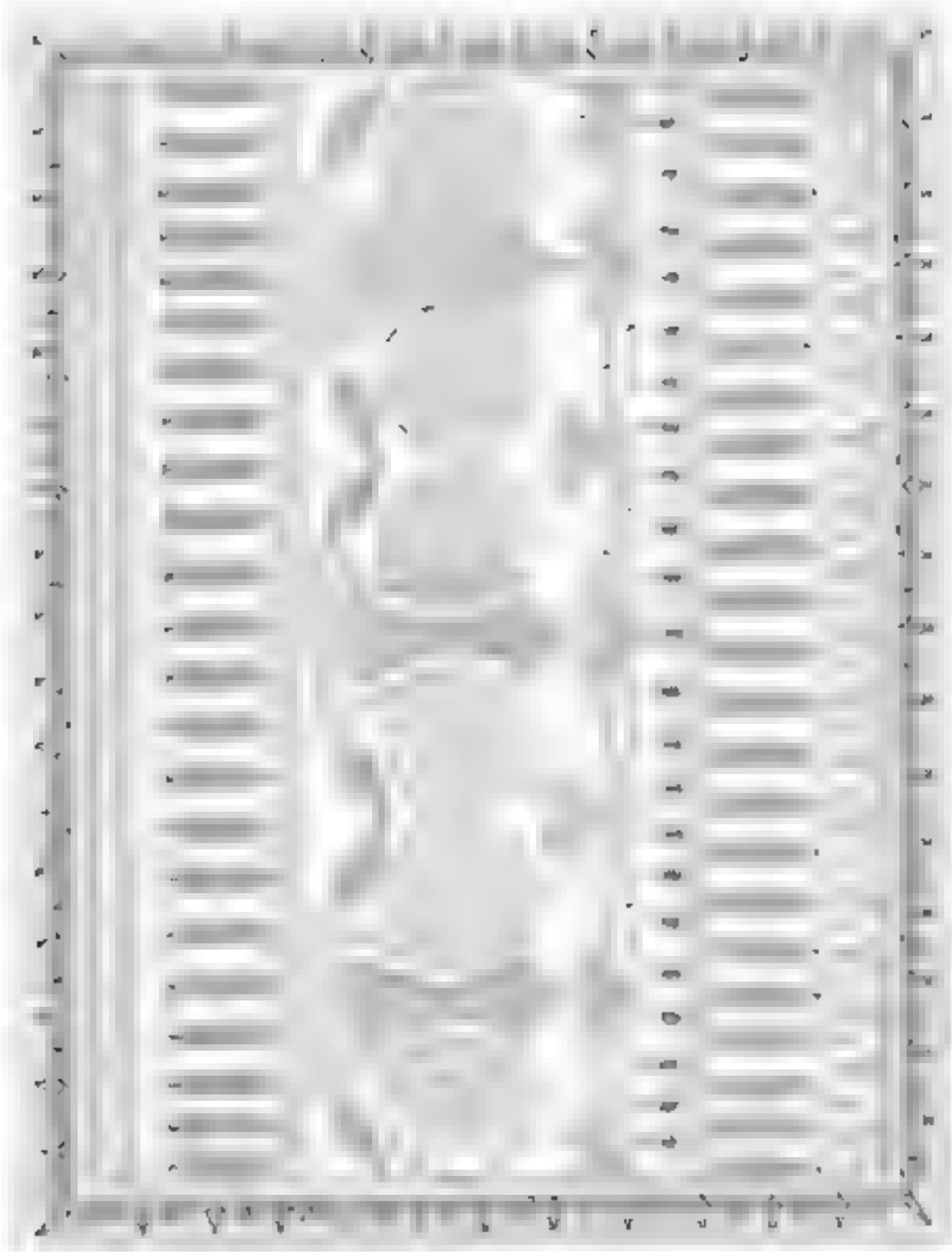


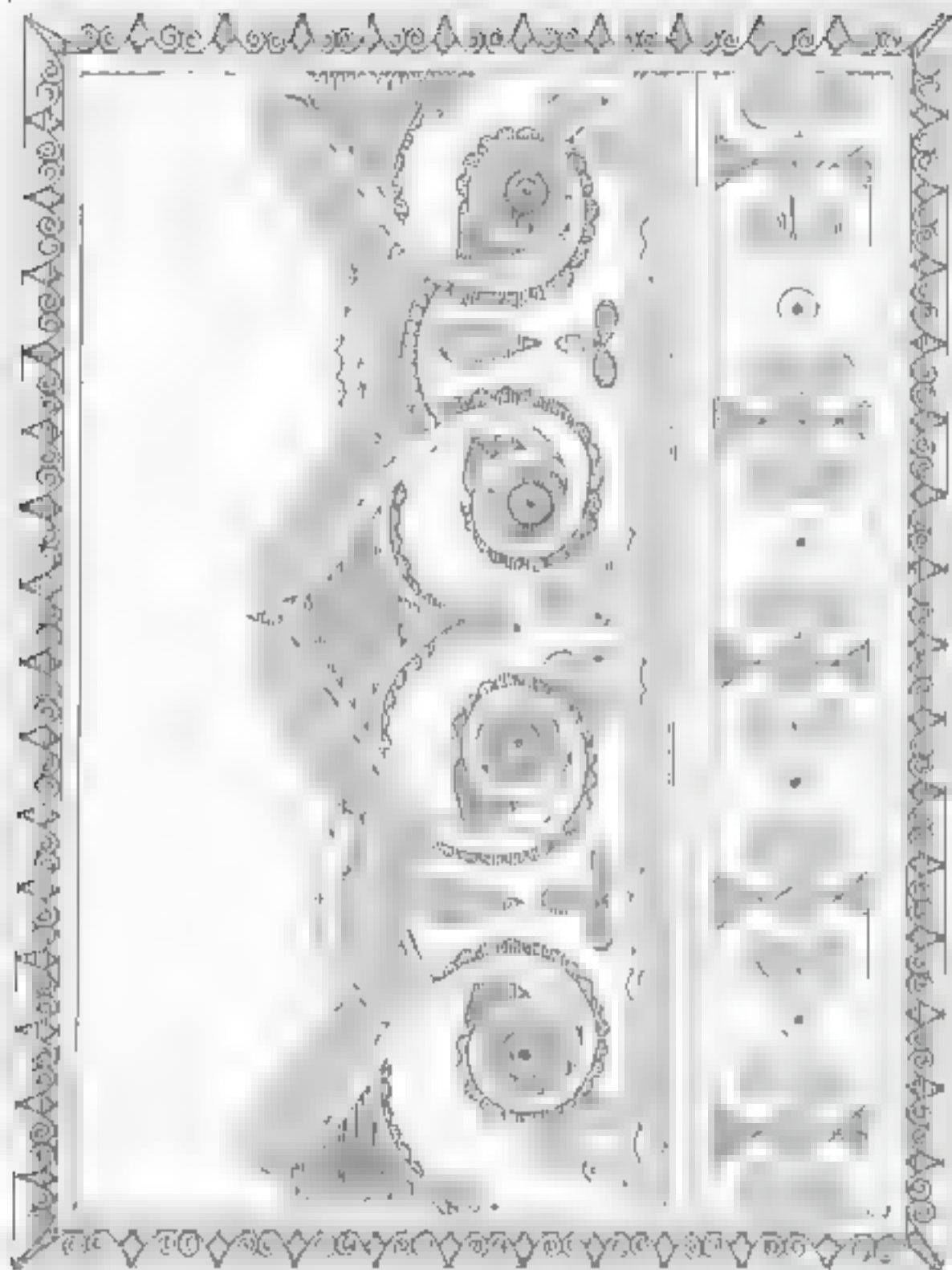


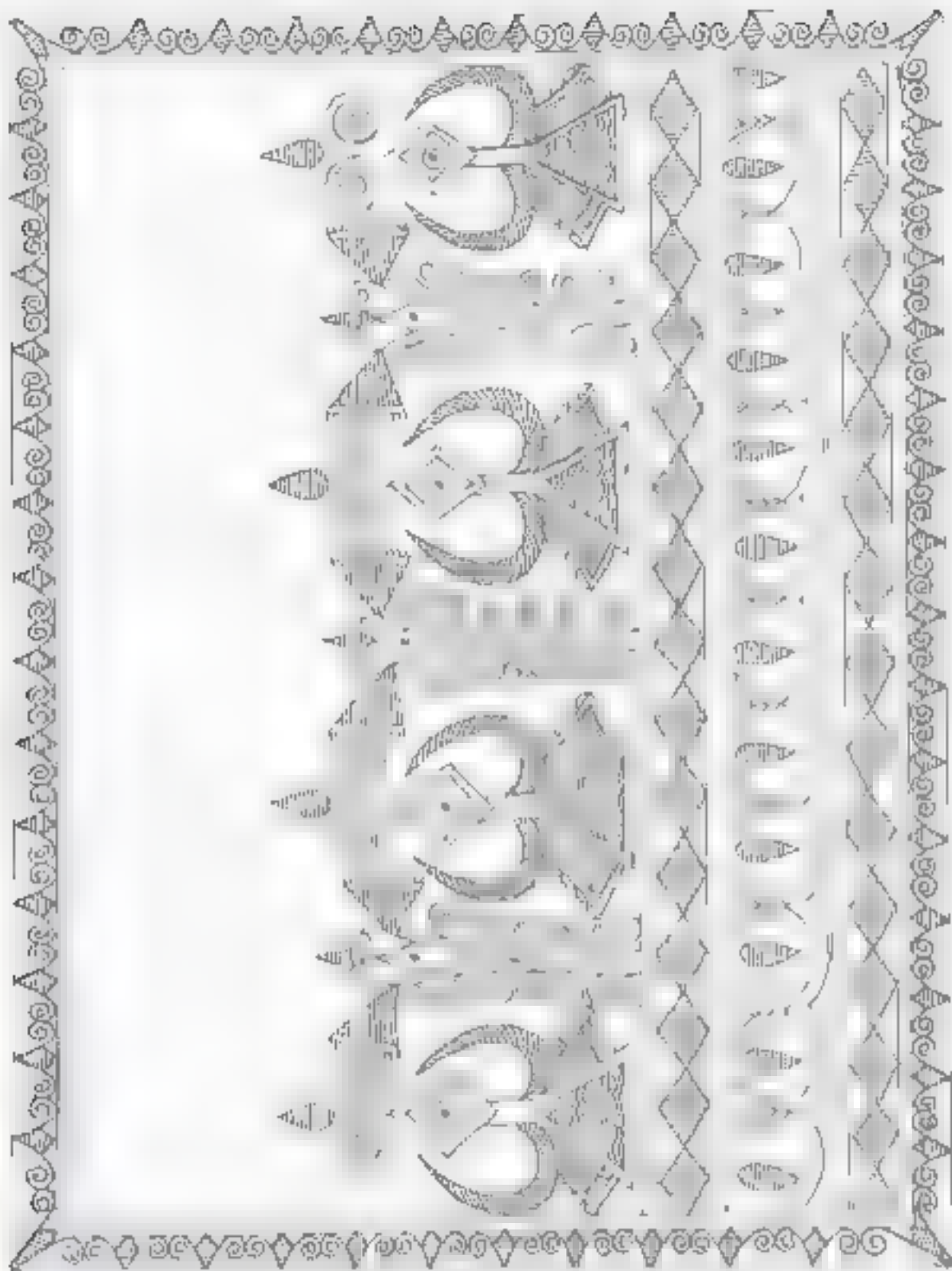


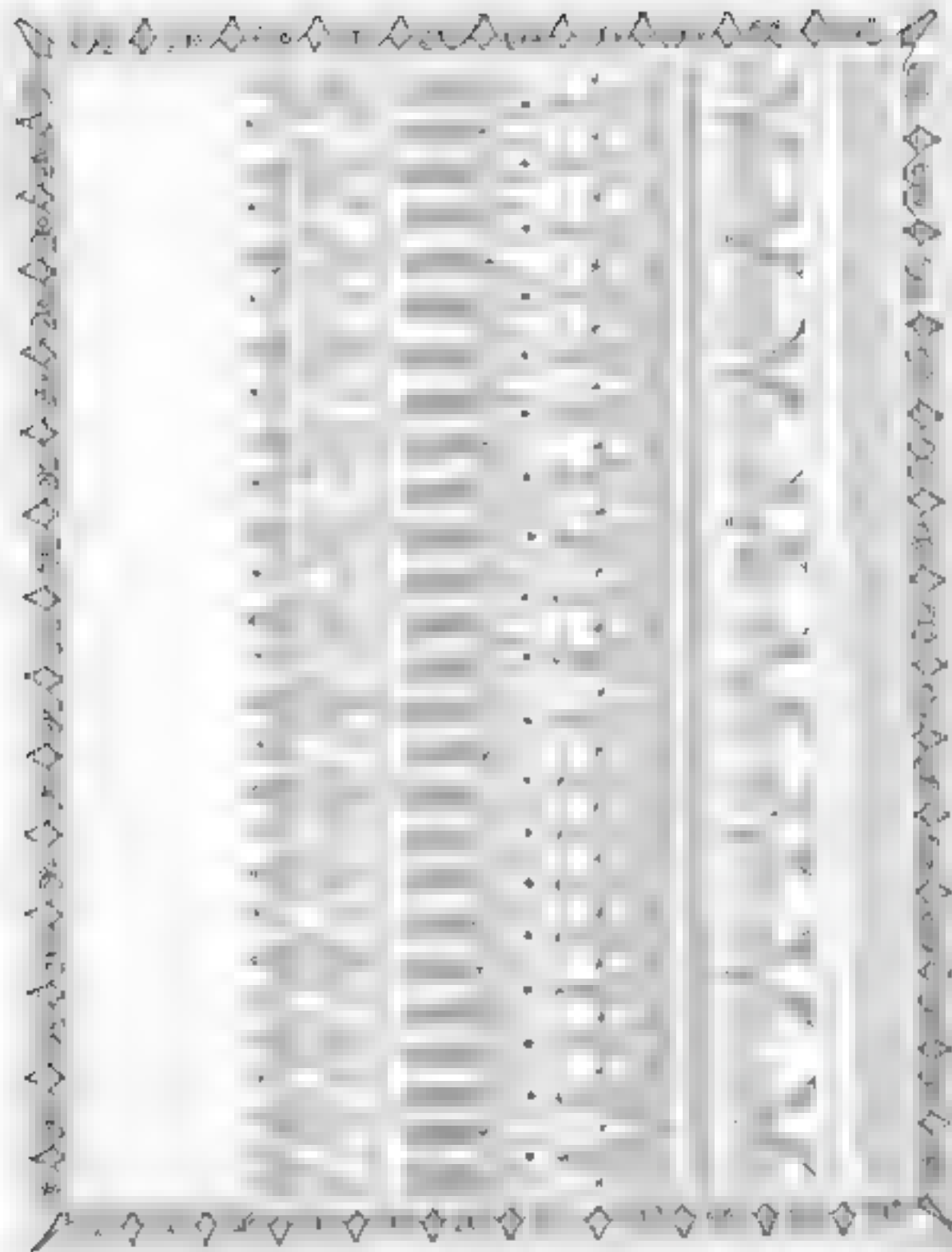




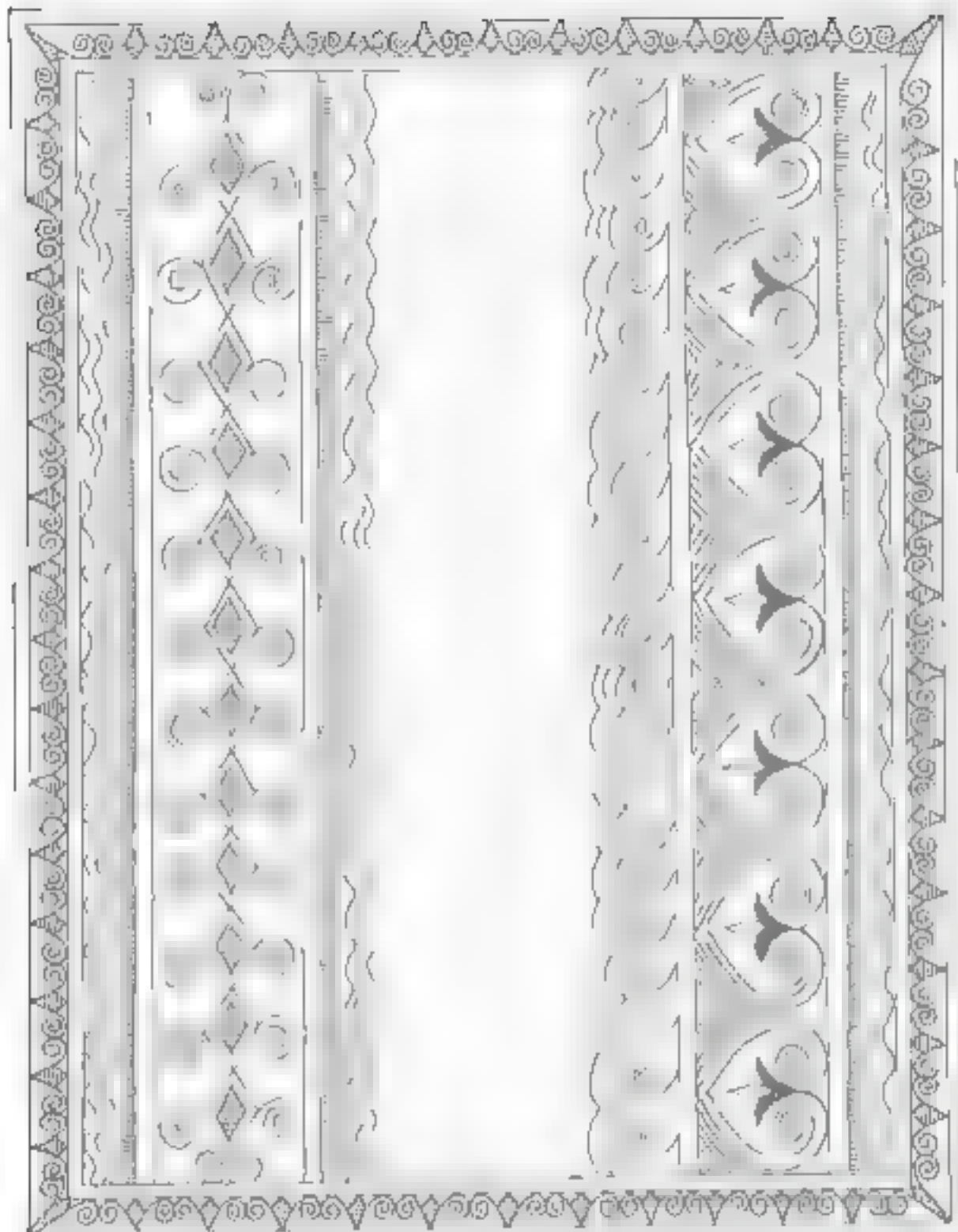


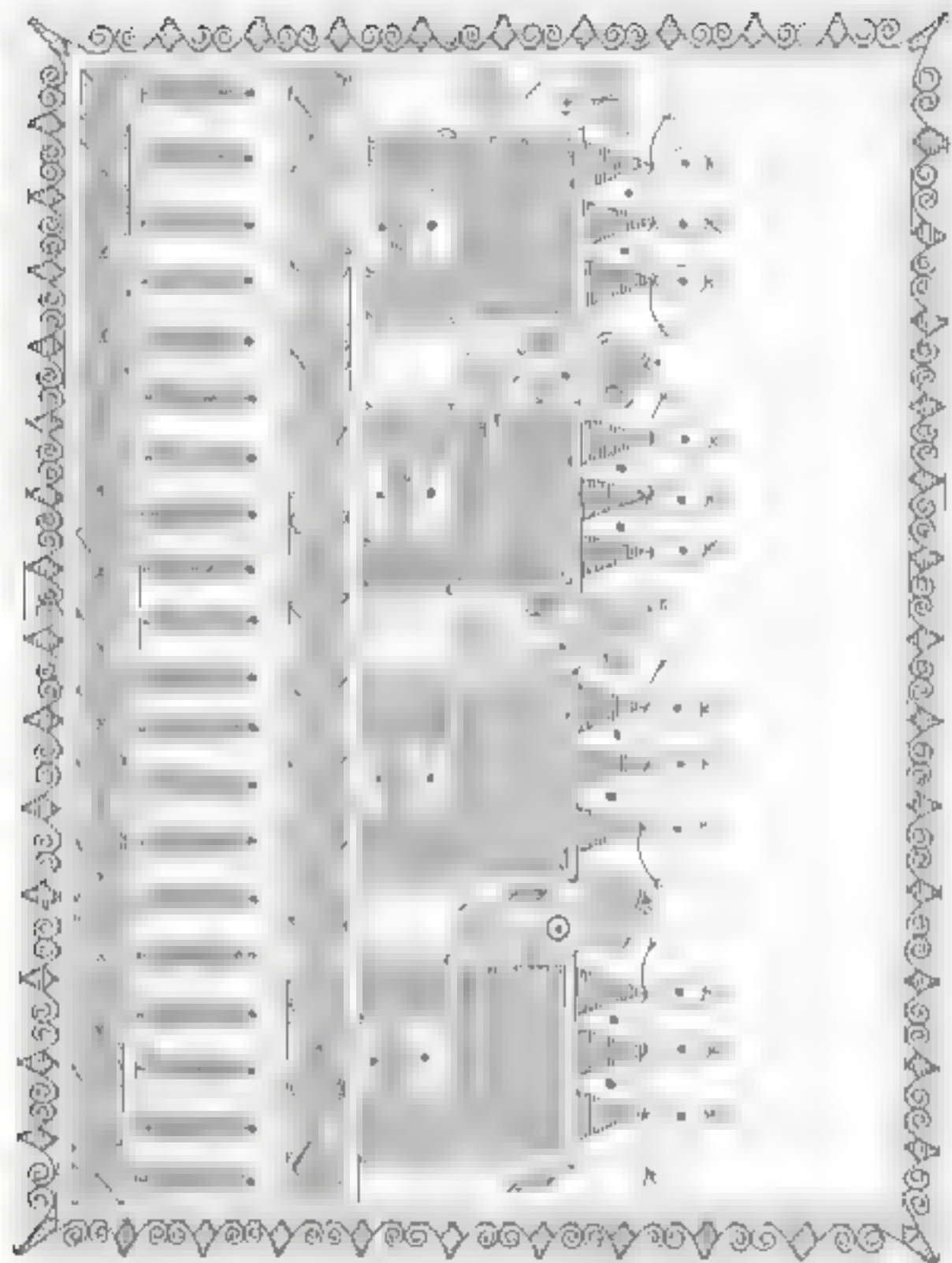


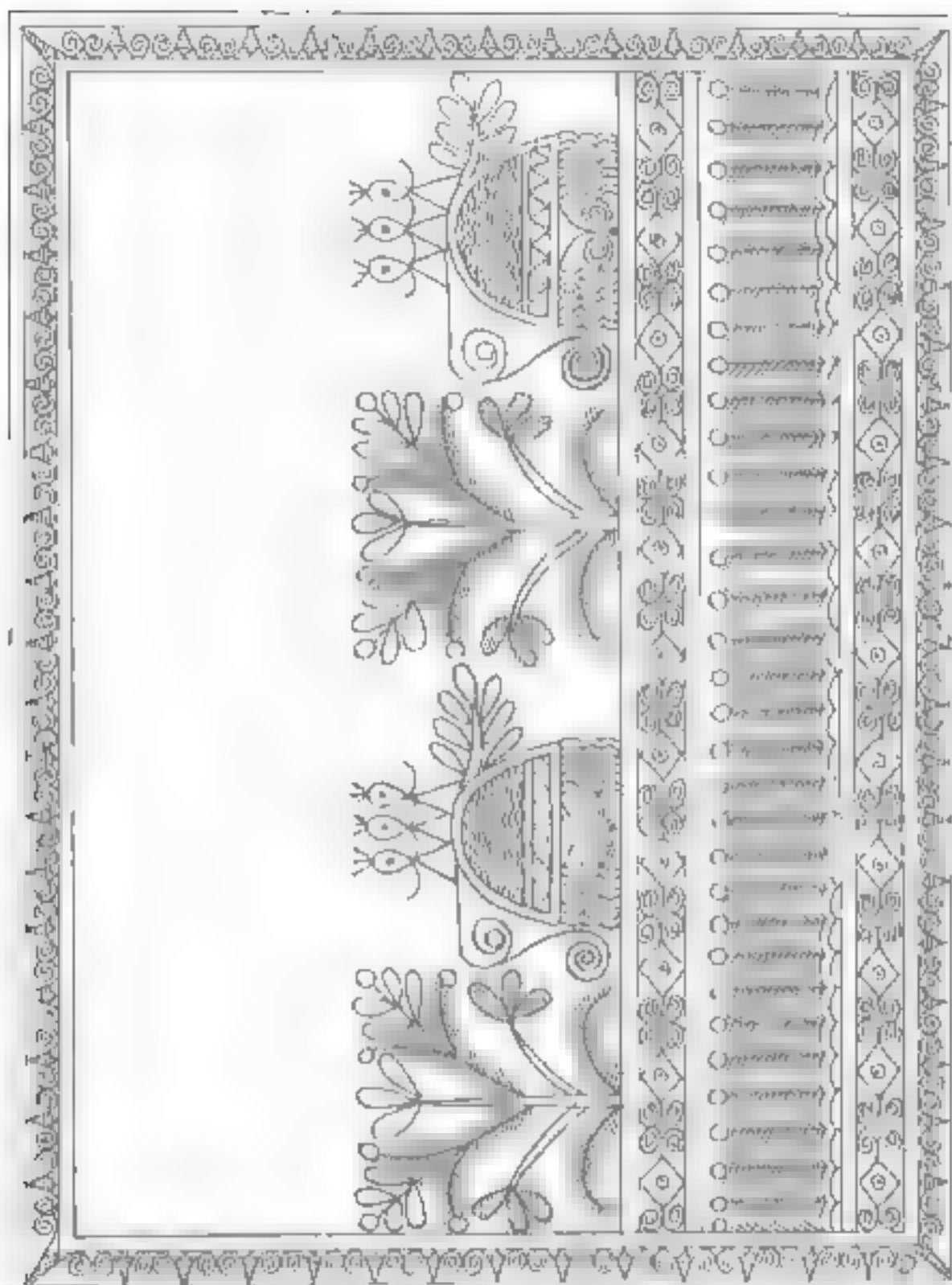


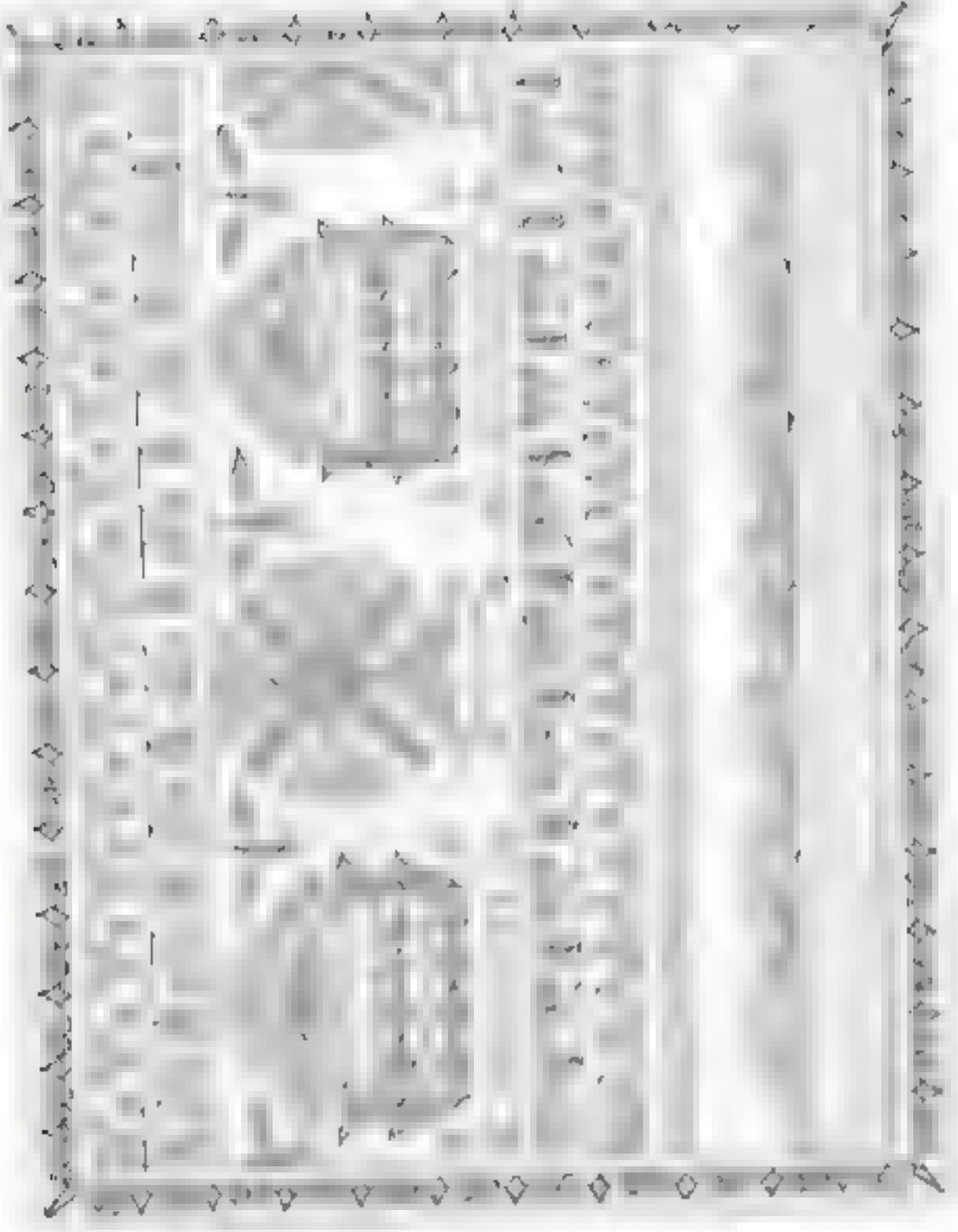


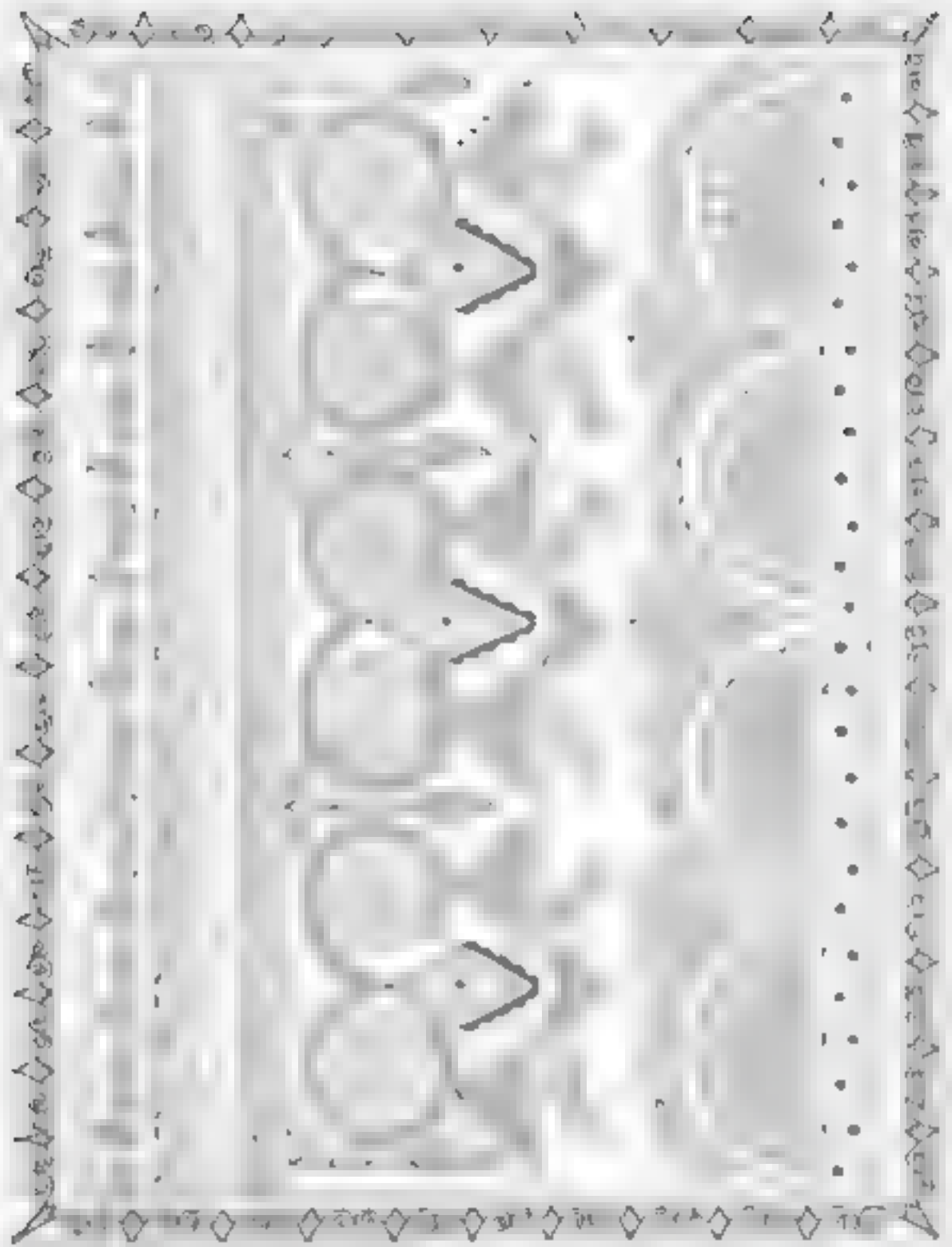


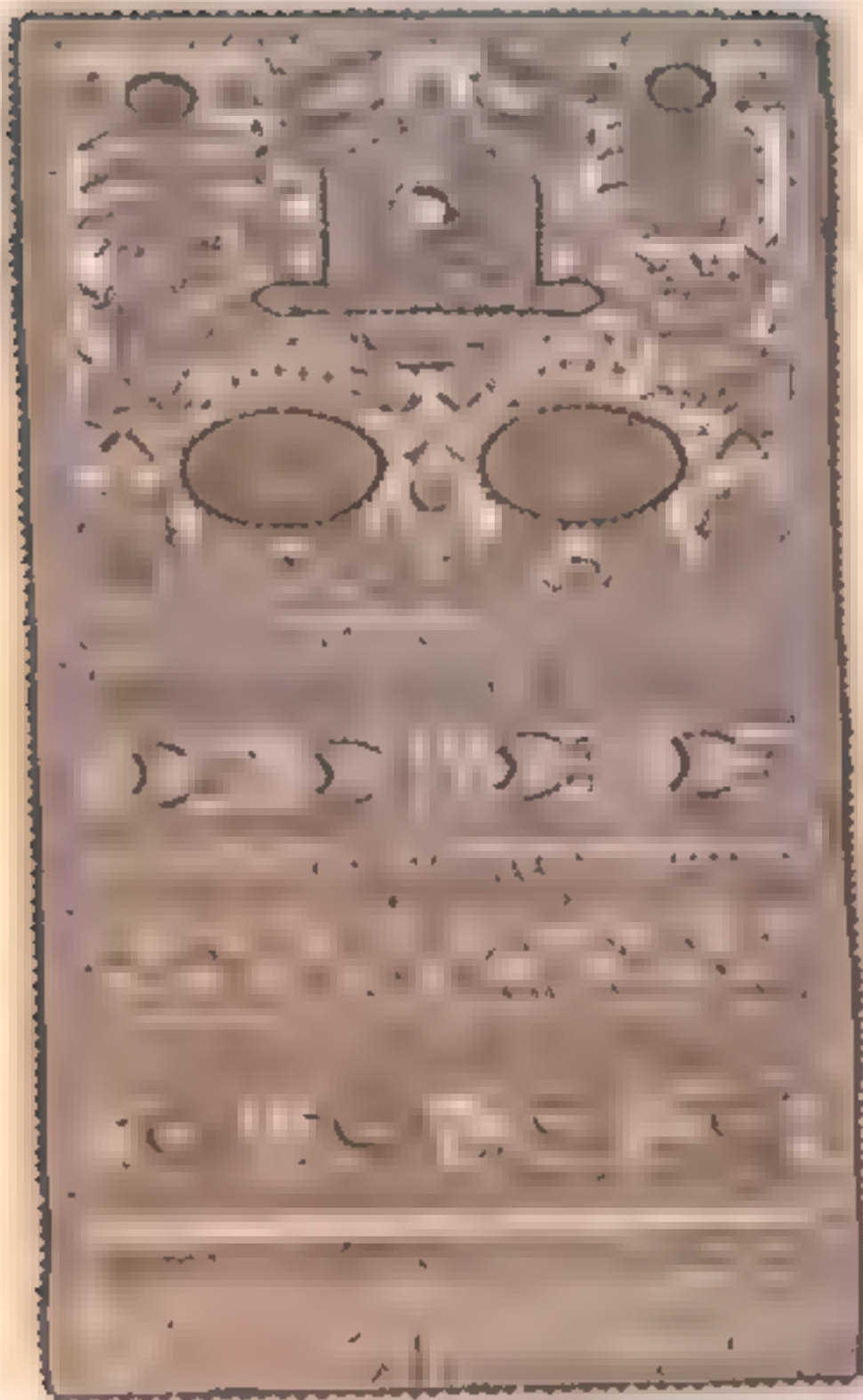


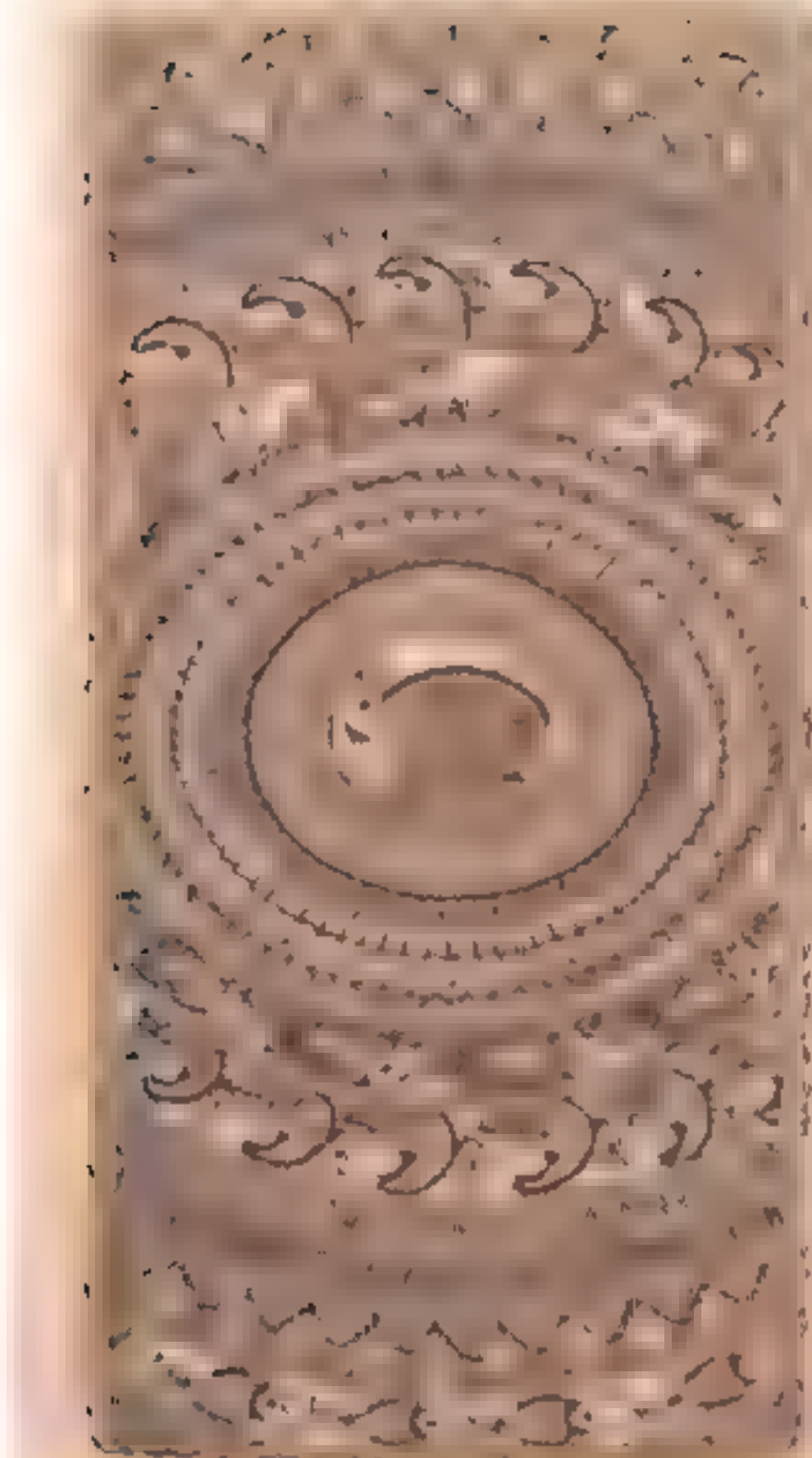


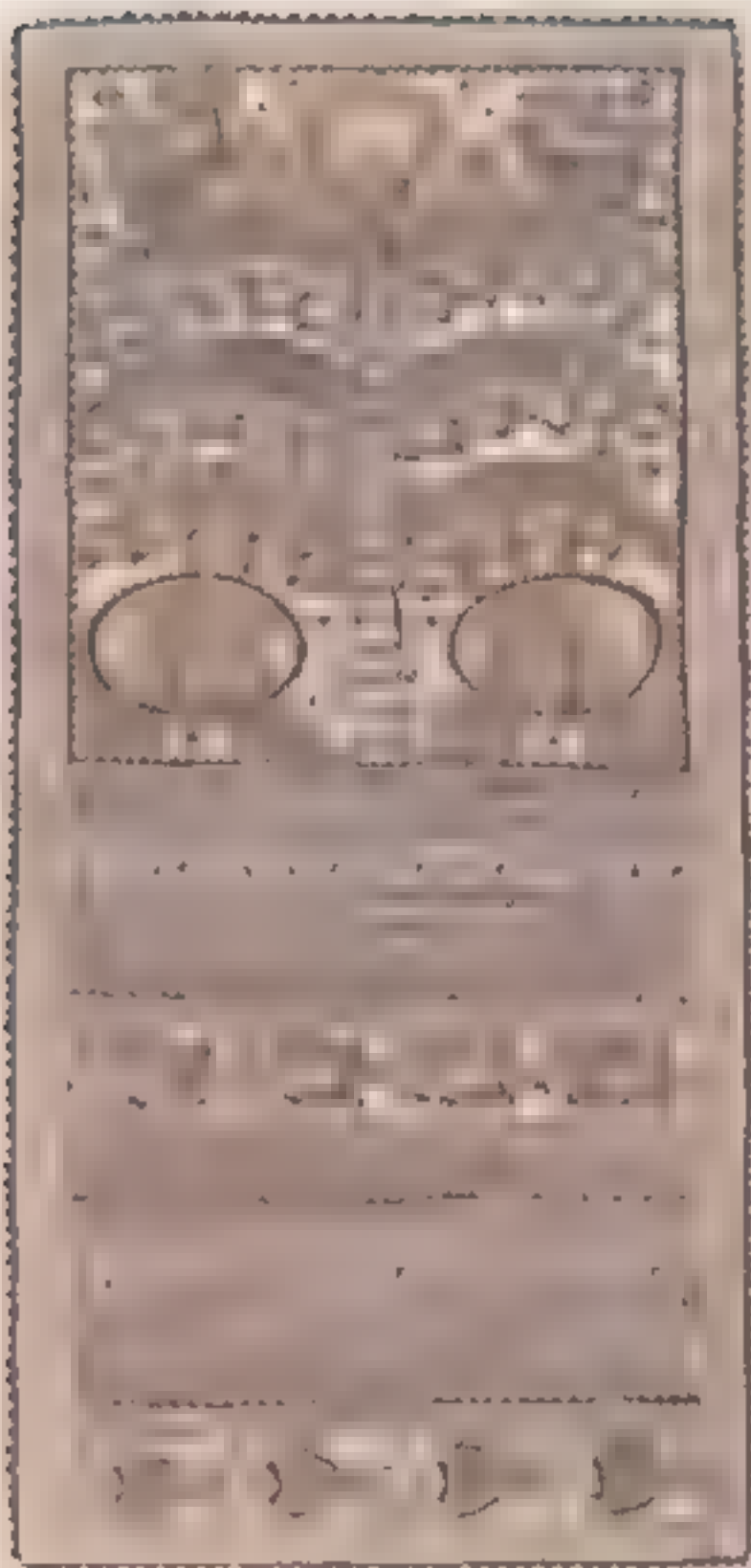




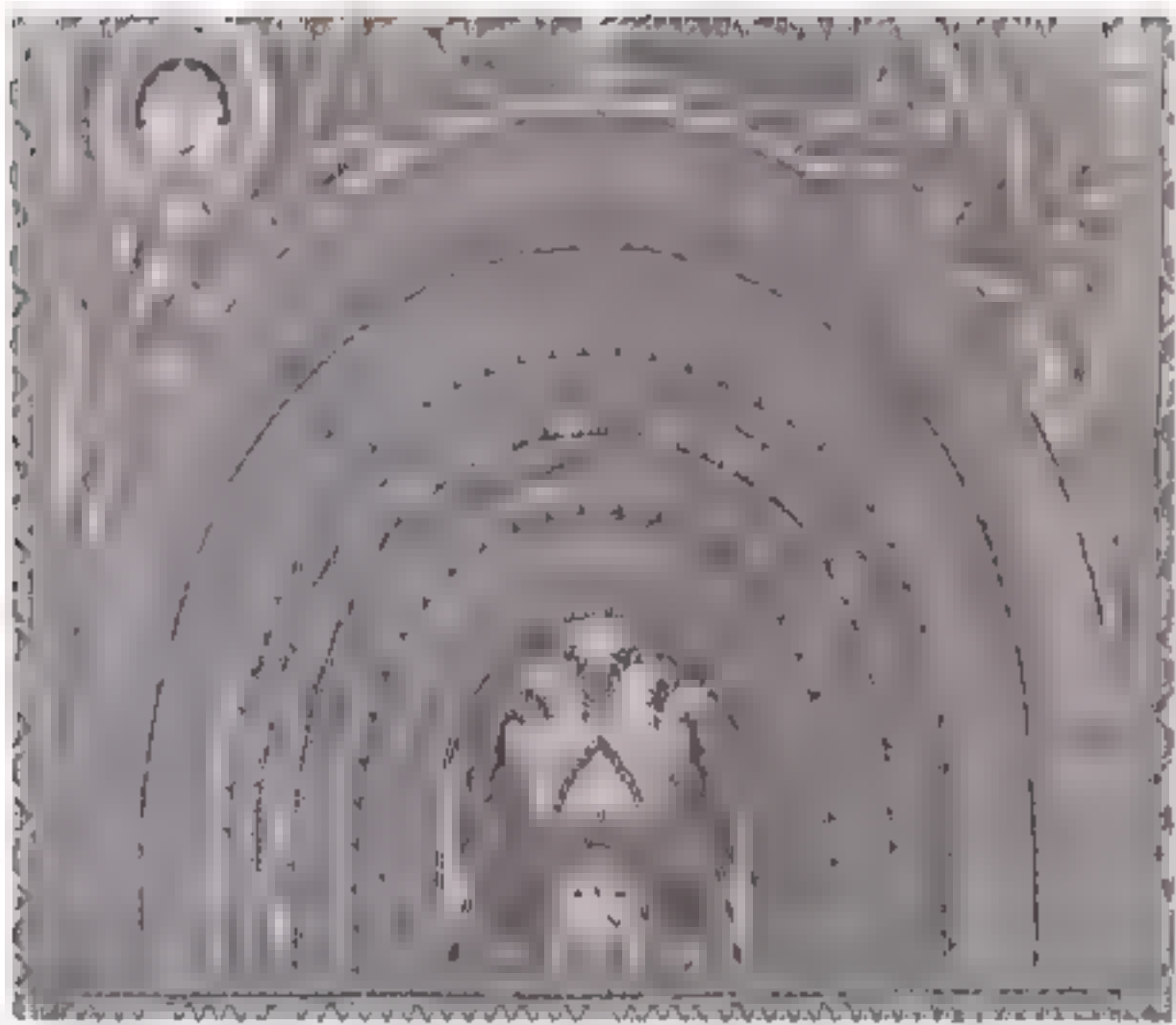




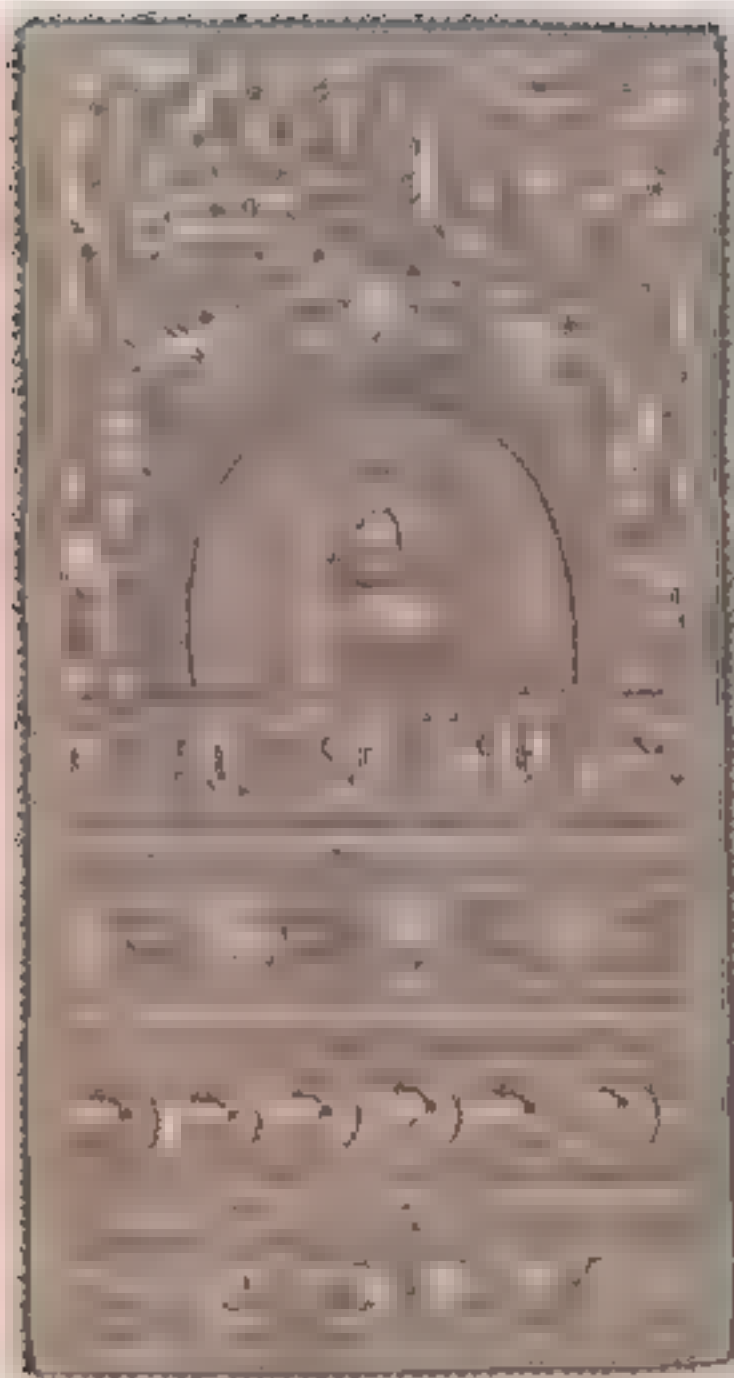


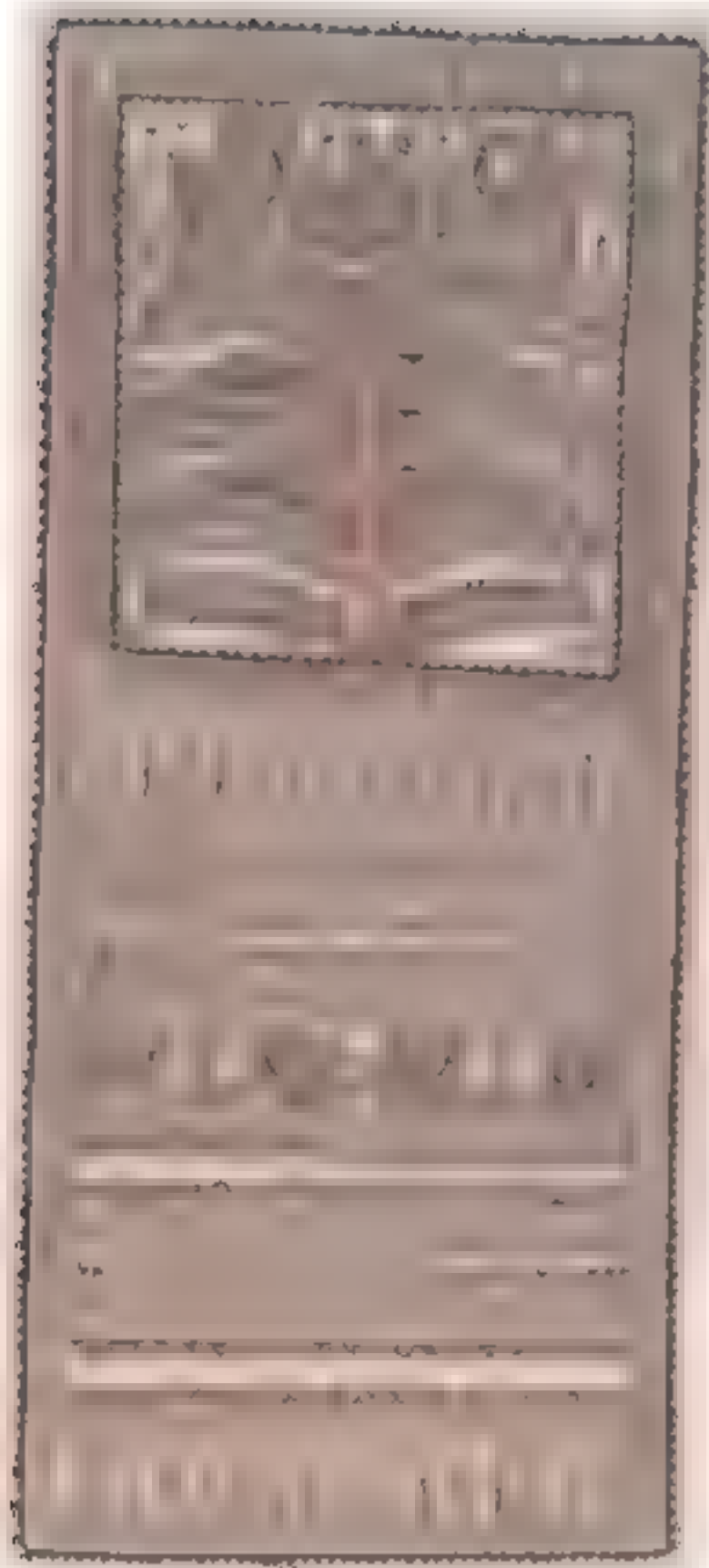






















सन्दर्भ-ग्रन्थ, अन्य स्रोत एवं फोटोग्राफ्स

- 1 Indian Folk Art – Heinz Mode
- 2 Primitive Peoples Today – Edward Weyer
- 3 Tribes – Desmond Morris & Peter Marsh
- 4 मोदना चित्रशैली – के. के. कश्यप (साइबोस्टाइट संस्करण)।

फोटोग्राफ्स

कदर चित्रा – बस्तर की आदिवासीबाला (इन्टरनेट/गूगल)

अफ्रिकी जनजाति के मोदना-देवता/पितर देवता – फोटोग्राफर चित्रा अलेन वॉल्थुड, फ्रान्स
शशिबाला वरप्रशजन कलसी हुई – फोटो : अशु गुप्ता, यू.ए. नगी दिल्ली

* इस पुस्तक में उपयोग किये गए फोटोग्राफ्स Indian Folk Art, Primitive Peoples

Today, Tribes तथा इन्टरनेट से उपलब्ध किये गये हैं। अन्य फोटो स्वयं कश्यप द्वारा खींचे गये हैं।

लेखकद्वय की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

1 माछभात, 2 मिथिला चित्रा शिक्षा, भाग-1, 3 मिथिला चित्रा

प्रवेशिका, भाग-1/2, 4 मिथिला चित्रा कोर, भाग-3,

5 मिथिला अरिपन, भाग-4,

6 मोदना चित्रा शैली, भाग-5, 7 मैथिली गीतगोविन्द, 8 मेघदूत।



ISBN- 978-81-907267-3-3

Rs. 700/-